ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार
एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं। -शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ वसु 14 01 1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि हमारे यहां वैदिक-साहित्य वालम ब्रह्मा वर्णसुतम जब वैदिक-साहित्य में विचार-विनिमय किया जाता है तो उस परमात्मा का नामोकरण वसुन्धरा के नामो से वर्णन किया जाता है और हमारे यहां वैदिक-साहित्य में नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की विवेचनाएं होती रही है। जैसे वसुन्धरा नाम उस परमपिता-परमात्मा का है और वसुन्धरा नाम माता का है, और वसुन्धरा नाम पृथ्वी को माना गया है। मानो जो अपने में अपनेपन में बसा लेता है, उसी का नाम वसुन्धरा के नामो से वर्णन किया जाता है। जैसे परमपिता-परमात्मा इस संसार को अपने में बसा रहा है, तो उस परमात्मा का नाम भी वसुन्धरा के नामो से वर्णन किया जाता है।

वसुन्धरा

वेद-मन्त्र कहता है वसुन्धरा ब्रह्मण ब्रह्मा ऋतम देवा क्या वह जो परमपिता-परमात्मा वसुन्धरा है और उसी के गर्भ में हम सदैव वशीभूत रहते है। याग भी वस्तु है, जैसे माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु जब विद्यमान होते है तो वह माता अपने में बसाने वाली है, अपने में मानो उसे धारण कर रही है, उसे वसु कहा जाता है। हमारे यहां वसुओं की बड़ी विवेचनाएं होती रही है। देखो वसु का अभिप्राय है वसुन्धरम ब्रह्मा वसु तप रहा क्या जो मानव अपने में बसाने वाला है उसका नाम वसु भी कहा गया है। नाना प्रकार के मण्डलों का नाम भी वसु के नामो से वर्णन किया जाता है, इसी प्रकार माता का नाम वसुन्धरा है जो अपने में धारण कर रही है। जिस प्रकार माता का नाम वसुन्धरा है इसी प्रकार पृथ्वी का नामोकरण भी वसुन्धरा के नामो से वर्णन किया जाता है। यह जो पृथ्वी है यह जो वसुन्धरा है जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज-पदार्थो को जन्म देती है और उसी में मानव का जीवन वशीभूत रहता है। यदि वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! नाना प्रकार का खाद्य और खनिज-पदार्थ उत्पन्न न होता तो मानव के जीवन का संचालन प्राणी-मात्र नहीं हो सके था। तो इसीलिए उस माता का नाम वसुन्धरा है जो अपने में संसार को बसा रही है। हे! वसुन्धर्म ब्रह्मा वर्णो ब्रह्मा मानो देखो वह परमपिता-परमात्मा वरण करने योग्य है, वह वरणीय है इसीलिए हमारे यहां वरण किया जाता है, परमात्मा को वर लिया जाता है जैसे प्रजा के लिए माता मानो देखो एक पुरुष को वर लेती है या पुरुष मानो देखो एक देवी को अपने में वर लेता है। वरने का अभिप्राय यह है कि वह एक दूसरे में मानो तन्मय हो जाने का नाम वरना है। वरणां ब्रह्मा देखो उसको वरुण कहते है जैसे लोक-लोकान्तरों में बेटा! वसु की विवेचना करते रहे है। वह वसु अपने में मानो देखो जैसे यज्ञों का प्राय वर्णन आता रहता है। याग वसु है

एक समय बेटा! याज्ञवल्क्य-मुनि-महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे तो रेणकेतु मुनि ने उनसे एक प्रश्न किया कि महाराज यह वसु क्या है? उन्होंने कहा वसु का नाम याग है यागाम कि यह वसु कैसे याग, कैसे बसाने वाला है। मेरे प्यारे! देखो यदि मानव में याग की प्रेरणा न रहेगी और शुद्ध कामना न रहेगी तो मानव बस नहीं सकेगा क्योंकि मानव में जब शुभ भावना होती है, ना अशुभ कामनाऐं होती हैं तो वह प्रायः अपने में बसता रहता है, वशीभूत रहता है इसीलिए प्रत्येक मानव, प्रत्येक मानव देवम ब्रह्मा देखो प्रत्येक प्राणी-मात्र अथायु का एक समूह कहा जाता है और उसके हृदय में यह सम मानो एक वेदना उत्पन्न होती रहती है और

वह जो वेदना है वही उसको ऊंचा बनाता है और वहीं उसको बसाता रहता है। यदि मानव की शुभ कामना नहीं रहेगी, विचारधारा महान नहीं होगी तो वह बस नहीं सकेगा इसलिए यज्ञोमयी मानो देखो याग का नाम भी वसु है और जितने भी सुक्रियाकलाप है उन सभी का नाम याग माना गया है। याग का अभिप्रायः कि सु-प्रेरणा, सु-धारणा, सु अपने में मानो रत्त हो जाना। मेरे पुत्रों! देखो वहीं हमारे यहां वसु कहा जाता है जो अपने में बसाने वाला है। अपने में बसाने वाला एक याग है, जो याग जितने भी प्रेरणावादी है सब यागाम भविते वह याग कर रहे है।

प्रजा-पुत्र

जैसे मेरी प्यारी माता है। माता अपनी प्रजा को जन्म देती है, अपने पुत्र को जन्म देती है। मानो दो प्रकार के वैदिक-साहित्य में कहीं भी मानो देखो अमृता ब्रह्मणा वर्णसुता वह पुत्र का इतना वर्णन नहीं आया जितना प्रजा का आता है। तो देखो यहां प्रजा और पुत्र दो हैं, पुत्र का भी प्रायः कहीं-कहीं वर्णन आता है। पुत्र उसे कहते हैं जो माता और पिता के दोनों के दायित्व को अथवा उसकी एक जो विचारधारा है उसको जो अग्रणीय बनाता है। जैसे एक राजा का पुत्र है वह राजा देखो जब अपने पुत्र को राज दे करके चला जाता है तो वह पुत्र रह जाता है। तो पुत्र राजा की आज्ञा मानो उसके क्रियाकलापों को ऊर्ध्वा में गमन कराता है, उसी पद्धति को महान बना देता है और उसी पद्धति के आधार पर अपने राष्ट्रीय-याज्ञिक जीवन को व्यतीत करता है तो वह मुनिवरो! देखो पुत्र कहलाता है। और जब वह व्यापक विचारों वाला बन जाता है और जैसे अश्वमेघ है प्रजा मे मेघ का अपना कार्य-कलापों को वर्णन करता है तो वह अश्वमेघ याग करता हुआ प्रजा में अपने में मानो दोनों को एक ही तुल्य स्वीकार करता हुआ मानो देखो, वह प्रजा कहलाती है जो हृदय-ग्राही होता है, हृदय द्वन्द होता है। तो इसलिए माता जब प्रायः देखो अपने यहां प्रजा को जन्म देती है प्रजाम नम मे व्रतम देवा वह प्रजा से वह कहती है बाल्य तुझे प्रजावान बनना है, तुझे प्रजापति बनना है माता यही तो कहती है कि हे बालक! तू प्रजापति बन और प्रजापति का अभिप्रायः यह जो प्रजा का स्वामी हो, जो प्रजा का पति और नेतृत्व करने वाला हो उसका नाम प्रजापति कहलाता है। जो प्रत्येक प्रजा में अपने ही स्वरूप का दर्शन करता है वह प्रजापति कहलाता है, वह प्रजामयी कहलाता है। तो इसीलिए हमारे यहां देखो माता अपने में बसाने के क्रियाकलापों को याग में अपने जीवन को परिवर्तित कर देती है। और यह कहती है कि वसो वरणे तो मानो देखो वसु कहलाता है तो मुनिवरो! देखो वह माता यागिक बनी हुई यागों में परिणीत हो रही है जो प्रजा को जन्म देने वाली है पुत्र को मानो अपना दायित्व स्वीकार करके अपने में गतिवान बनती रहती है। प्रजापति मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है मुनिवरो! देखो महाराजा प्रजापति, महाराजा प्रजापति के पिता का नामोकरण भी प्रजापति था। हमारे यहां बहुत पुरातन काल में बेटा! एक राष्ट्रीय प्रणाली का निर्माण हुआ था, बहुत समय हुआ जब इसका निर्माण हुआ। तो मानो देखो एक प्रजापति राजा होता है, राजाओं में एक प्रजापति राजा होता है, एक इन्द्र नाम का राजा होता है, एक विष्णु नाम का राजा होता है परन्तु देखो यहां प्रजापति का वर्णन है देखो प्रकरण के आधार पर प्रजापति उसे कहते हैं जो प्रजा नेतृत्व का स्वामी कहलाता है वह प्रजापति है। प्रजापति कि जो मानो देखो माता थी राजत्वा देखो उनकी जो प्रजापति की जो मानो माता थी वह यही कहा करती जब रूढ़ियों का पान करती थी हे बालक! तुझे प्रजापति बनना है, तुझे प्रजावान बनना है और प्रजापति बन करके तुझे हृदय-ग्राही बनना है। हे बालक! तुझे मानो देखो अमृतम ब्रह्मा तु प्रजापति बन करके और प्रजावान बन करके तू मानो देखो गतिवान बन करके अपने जीवन को महान बना। तो मानो देखो माता प्रजा

मंगले मंगलेशवरी देखो उसकी माता का नाम सुषेणा-केतु कहलाता था और वह सुषेणा-केतू मानो सदैव यह कहती लोरियों का पान करा करके हे बाल्य! तुझे प्रजापति बनना है, तू प्रजावान है और प्रजावान बन करके तुझे प्रजा को ऊर्ध्वा में गमन कराना है। मेरे प्यारे! देखो वह बालक प्रजापति बना वही ब्रह्मचारी जो माता की लोरियों में जो आनन्दवत रहता है मानो देखो जो सान्तवना से अपनी माता की लोरियों का पान करता है वहीं तो प्रजापति बनता है। मेरे प्यारे! देखो माता कहती है, हे बाल्य तू पति, देखो प्रजापति बन, जब इस प्रकार मुनिवरो! देखो माता प्रेरणा देती रहती है तो वह उस माता का नाम वसु कहलाता है क्योंकि वह बसने वाले विचार देती है। इसलिए उस राजा का नाम प्रजापति अथवा देखो वह प्रजावान् बनता है इसी का नाम प्रजापति कहलाता है। वह प्रजावान बनकर के देखो संसार को और राष्ट्र और समाज को ऊंचा बनाता है।

आत्मा भी वसु है

तो इसलिए मुनिवरो! देखो यह जो आत्मा है यह प्रजावान है देखो मानो आत्मा शरीर में विद्यमान रहती है यह प्रेरणा का द्योतक है। आत्मा का नाम वसु है आत्मा का नाम भी वसु कहलाता है क्योंकि वह आत्मा जब तक इस मानव के शरीर में विद्यमान है तो यह मानव वसु कहलाता है आत्मा भी मानो देखो गम्भीरता से वसु कहलाती है क्योंकि आत्मा ही तो बसाने वाली है। आत्मा यदि शरीर में नहीं रहेगा तो हम बस नहीं सकेंगे बेटा! जीवन विकृत हो जाएगा अन्धकार में परिणीत हो जायेंगे तो इसीलिए देखो आत्मा का नाम वसु है जब तक इस मानव के मानो देखो शरीर मे विद्यमान है मानो बेटा! प्रत्येक प्राणी-मात्र के हृदय में जब तक आत्मा विद्यमान है वह वसु बन रही है वह वसु कहलाती है। इसलिए वसुन्धरम ब्रह्मा वरणो वें वसुता मानो देखो वह वसुन्धरा कहलाती है। हे मां! तू हमें अपने में बसाने वाली है और वसा करके तू पालन कर रही है। राजा का नाम भी वसुन्धरा कहलाता है क्योंकि वह भी प्रजा को अपने में बसाने वाला है। बेटा! मैं बहुत दुरी न जाना चाहता हूं विचार-विनिमय केवल यह क्या मुनिवरो! देखो जो भी मानव सुप्रेरणा में जा रहा है वही वसु कहलाता है। यज्ञोमयी वसुभ ब्रहे याग का नाम वसु है और वसुन्माम ब्रह्मा मानो देखो यह याग भी तो बसाने वाला है। मानो जितना भी प्रेरणा का द्यौतक है वह याग है, जितनी भी सुन्दर प्रेरणा अन्तर्हृदय में जन्म देने वाली वह सब प्रजापति कहलाती है। हे प्रजापति! तू राजा है और राष्ट्र में, तेरे में मानो राजा के राष्ट्र में शिक्षा-प्रणाली पवित्र होनी चाहिए। शिक्षा-प्रणाली पवित्रतम होती है तो मानो देखो राजा का राष्ट्र विशेष होता है। राजा के राष्ट्र में बुद्धिमान प्राणी जितने भी होते है उतना ही राष्ट्र ऊंचा बनता है, महान बनता रहता है और जहां देखो उसके राष्ट्र में अवृत ब्रह्मा ब्रहे मानो नहीं रहेगा तो मानो देखो मानव अपनी आभा में मानवीयता का मानो प्रसार करता रहेगा।

प्रजावान

तो विचार आता है बेटा! देखो प्रजावान कैसे बनता है। मुझे एक वाक स्मरण आ रहा है बहुत पुरातन काल का वाक है बेटा! जो मैंने कई कालों में उसे वर्णन किया है। मेरे प्यारे! देखो एक राजा थे जिनका नाम प्रजापति था और प्रजापति मानो देखो उनका नामोकरण तो कुछ और था परन्तु उसे प्रजावान कहते थे। उस प्रजावान के मानो देखो राजा के पुत्र था सुकेत नाम का पुत्र था और वह जो सुकेत नाम का पुत्र था वह बड़ा विचित्र और मानो देखो वह विद्या अमययन करता था। मेरे विचार में जब वह विद्या अमययन करता तो वह राष्ट्रीय-प्रणाली के ।पर अमययन करता रहा। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्मज्ञान के ।पर अमययन करता रहा। एक समय बेटा! देखो वह पुत्र, राजकुमार बेटा! कहीं भ्रमण करते हुए मानो देखो एक ऋषि के आश्रम में पहुंच गया। जो

मुनिवरो! देखो व्रेत विष्णु नाम के देखो ऋषि अमृत का पान करते थे जो अंगिरस कहलाते थे। जब मुनिवरो! देखो उनके द्वार पर पहुंचा तो उन्होंने कहा हे राजकुमार! हे पुत्र! तुम्हारा परिचय क्या है, तुम्हारा नामोकरण तुम कहां से कौन हो? उन्होंने कहा मेरा नाम निर्मोही है और मेरा नाम निर्मोही होने से मानो यही मेरा परिचय है। उन्होंने कहा पुत्र किस के हो? उन्होंने कहा मेरे पिता का नाम भी निर्मोही है और राष्ट्र का नाम क्या, वह भी निर्मोही है और उन्होंने कहा मेरी मंगलम क्या भौजाई निर्मोही कहलाती है, प्रजा भी निर्मोही है। ऋषि ने कहा हे राजकुमार! निर्मोही तो वह प्राणी होता है जिसको किसी से मोह न हो वह तो निर्मोही कहलाता है और तुम मानो सर्वत्र राष्ट्र को निर्मोही कह रहे हो। उन्होंने कहा प्रभु! इसकी परीक्षा लीजिए। यह मेरा विषय नहीं है यह तो मानो देखो तुम्हारा विषय है प्रजा में इस प्रकार का अनुभव करो। मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या राजन नमम् देखो वह ऋषि ने उन राजकुमार को वहीं त्याग करके आश्रम में वह भ्रमण करते हुए राजा के द्वार पर पहुंचे प्रजावान के और उन्होंने उनका स्वागत किया। उस ऋषि ने कहा कि मेरा स्वागत क्या करते हो मानो मैं इस योग्य नहीं हूं। उन्होंने कहा नहीं, भगवन! पूज्य हो। उन्होंने कहा सम्भवे हे प्रभु! मैंने श्रवण किया तुम्हारे कोई पुत्र है। उन्होंने कहा मेरे पुत्र तो ऋषित् है परन्तु मुझे प्रतीत नहीं कि मैं पुत्र हूं या वह पुत्र है या वह प्रजा है मैं प्रजा हूं इस प्रकार का उसने उतर दिया मानो जैसे चक्रव्रती उतर होता है। उन्होंने कहा तो प्रभु! जो मैं उच्चारण करने जा रहा हूं उसको श्रावण करो। राजा ने कहा कि भगवन् उच्चारण कीजिए। कि तुम्हारा पुत्र उसके व्याघ ने दो भाग कर दिए है और वह मेरे आश्रम में विद्यमान है मेरी इच्छा है कि उसका दाह कर दिया जाए। वह मेरे व्याघ से उसको मानो देखो शरीर को मैंने स्थिर कर दिया है। राजा ने कहा प्रभु! आप तो ऋषिवर है, ब्रह्मवेत्ता है आप मेरा देखो अतिथि स्वीकार कीजिए और आप भगवन! देखो वह जो शरीर है ये आपको प्रतीत है कि यह शरीर क्या है? मानो शरीरमः देखो जब तक शरीर है तो आत्मा विद्यमान है जब तक वसु विद्यमान है तो शरीर गतिवान रहता है जब वसु चला जाता है तो यह मानव शरीर शून्यता को प्राप्त हो जाता है और जिन मानो पंच-महाभूतो से इस पिण्ड का निर्माण हुआ है वह अपने-अपने अवयवों में प्रवेश कर जाते हैं अपने अपने स्वरूप में चले जाते है अग्नि-अग्नि में, जल-जल में अग्नि अमृतमः और देखो आपो अपने में रत्त हो जाएगा अमृतम ब्रह्मा वरसुतम उन्होंने कहा हे ऋषिवर! आप मेरे अतिथिपन को स्वीकार कीजिए यह जो शरीर है यह आत्मा का यह सिंह का भोज्य है उसे प्रदान कर दिया जाए। उन्होंने कहा चलो भई पिता को इतना विशेष मोह नहीं होता वह माता के समीप पहुंचे। माता ने भी ऋषि का स्वागत किया, जल पान उन्होंने कराया। जल पान कराने के पश्चात उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्मण व्रतम मानो हे! ब्रह्म व्रतो अप्रतम देवा उन्होंने कहा हे मातेश्वरी! कहिए ऋषिवर। उन्होंने कहा तुम्हारा एक पुत्र है जो मृत्यु को प्राप्त हो गया है और व्याघ ने उसके दो भाग कर दिए है। मैंने उस व्याघ को मानो देखो अभी स्थिर किया है और वह जो व्याघ है वह अपने में देखो शरीर को अपना भोज्य बनाना चाहता है मेरी इच्छा यह है प्रभु क्या आप मानो उसका दाह कर दिया जाए। उन्होंने कहा हे भगवन् हे! अमृतम मानो देखो यह जो शरीर है यह आत्मा इससे निकल गया है आत्मा न किसी का पुत्र है न पुत्री है न यह आत्मा किसी का मानो देखो शिष्य है। यह आत्मा तो एक रस रहने वाली चेतना है और चेतना में रत्त रहने वाला यह शरीर है, हे भगवन! देखो जब चेतना तो रही नहीं वह शव रह गया है वह शरीर का भोग बन गया है वह उसका भोज्य पदार्थ बनकर के उसको पान कर देना और मानो देखो आत्मा नष्ट नहीं होता और जो संस्कारों का समूह है चित्त-मण्डल वह भी नष्ट नहीं होता तो प्रभु! मैं किसका दाह कर सकती हूं। मेरे प्यारे! ऋषि बड़े आश्चर्य में चकित हो गये और ऋषि जब आश्चर्य में चकित हो गये

उन्होंने कहा अरे! यह तो बड़ा विचित्र है। मेरे प्यारे! आगे देखो उन्होंने कहा तो चलो पत्नी को स्नेह होता है वह पत्नी के द्वार पर पहुंचे और पत्नी से कहा अमृतम और पत्नी ने उनका स्वागत किया और ऋषि से कहा कहो भगवन कैसे आगमन हुआ है। उन्होंने कहा हे देवी! मैं इसलिए आया हूं क्या तुम्हारा एक पति है वह मृत्यु को प्राप्त हो गया और पतनम् ब्रह्मा देखो वह सब सम्बन्ध बने हुए है। ऋषि से उन्होंने कहा प्रभु! पहले मेरे अतिथिपन को स्वीकार करो मैं इसका उतर देखो जब ही दे सकूंगी। उन्होंने अतिथिपने को स्वीकार किया। उन्होंने कहा हे प्रभु! मैंने यह अमययन किया है जब मैं गुरुओं के द्वारा अमययन करती थी मैंने अपने में यह अमययन किया कि संसार में मृत्यु किसी वस्तु की नहीं होती आत्मा की मृत्यु नहीं होती। संस्कार ज्यों के त्यों बने रहते है और यह शरीर पंच-महाभूतों से जो पिण्ड का निर्माण हुआ उसमें एक परमाणुओं का मिलान करते रहते है उसी से निर्माणीत कहलाते है परन्तु जब गुरुओं ने यह कहा कि आत्माम ब्रह्मे मृत्यु कोई वस्तु नहीं है तो प्रभु! मैं यह कैसे स्वीकार करूं। क्या मैं तुम्हारे वाक्यों को यथार्थ स्वीकार करू या महापुरुषों की जो इससे पूर्व हुए है। मेरे प्यारे! देखो अमृतम ब्रह्मा वह बड़े आश्चर्य में ऋषिवर उन्होंने कहा प्रभु! आप निद्वन्द हो करके रहिए वह शरीर में आत्मा नहीं है और देखो वह शरीर सिंह का भोज्य बन गया है वह मानो देखो उसका भोज्य बन जाने दीजिए। मेरे प्यारे! देखो ऋषि बड़े आश्चर्य चकित हो गये और वहां से भी उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते बेटा! देखो भोजई के द्वारा पहुंचे। भौजई ने इसी प्रकार देखो उनका स्वागत किया। उन्होंने कहा देवी तुम्हें मान्य है। अमृतम ब्रह्मा देखो भोजनाम भू स्वयं ब्रहे भोजई ने कहा कहो ऋषिवर! किस प्रकार आगमन हुआ। ऋशि ने कहा देवी तुम्हारा एक विधाता वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है और मेरे आश्रम में देखो व्याघ ने उसके दो भाग कर दिये है। मेरे प्यारे! भोजई ने कहा कि हे भगवन! हे पितर!, हे आचार्य!, हे ब्रह्म के जानने वाले, ब्रह्म के परन्तु देखो बाल्य-काल में जब मैं अपनी माता की लोरियों का पान करती रहती थी तो मुझे स्मरण है माता यह कहा करती थी, क्या हे बालक! संसार में कोई रहस्य नहीं है यह बिना रहस्य का संसार है। मानो देखो कोई किसी वस्तु को दृष्टिपात करके शांत हो रहा है कोई किसी की दृष्टि को पान करके महान बन रहा है। परन्तु देखो आपको यह प्रतीत है कि हमारे आचार्यो ने माता ने यह वर्णन किया कि संसार में मानव शरीर और देखो शरीर को त्यागने का नाम देखो मृतक कहते है परन्तु वास्तव में यह मृतक बनता नहीं है, यह शब्द का आकार नहीं बना है मृतक रूप में परन्तु देखो यह जो मृत्यु शब्द है यह नहीं होता, यह है ही नहीं परन्तु मेरे विचार में तो, तो इसलिए मैं किसका दाह करूं और कौन संस्कार में मैं ले जा सकती हूं। मेरे पुत्रो! देखो वह आश्चर्य में चकित हो गये उसने कहा मान्यम ब्रह्मा वर्णसुतम आपयाम देवाम लोकाम वाचसुतम ऐसा उदगीत गा करके बेटा! अपने में मौन हो गई और मौन हो जाने के पश्चात उन्होंने कहा कहि असुतम, ऋषिवर ने कहा यह तो सभी निर्मोही है। पुत्री ने कहा मैं राजकुमारी हूं परन्तु देखो मैं इस वाक को स्वीकार नहीं करती की मृत्यु कोई वस्तु है वह तो शरीर का भोग्य पदार्थ है उसे वह भोग लेगा उसके उदर की पूर्ति हो जाएगी क्योंकि वह हिंसक प्राणी है। मेरे पुत्रो! देखो जब उन्होंने इस प्रकार कहा तो वह शान्त हो गये। उन्होंने वहां से भी भ्रमण किया और भ्रमण करते हुए बेटा! उन्होंने देखो राजसी सभा एकत्रित की और राज-सभा एकत्रित करके उन्होंने न्यूनतम देकर के उन्होंने कहा कहो प्रजामा भूतम ब्रह्मे उसमें बुद्धिमानो का एक समूह एकत्रित हुआ और उसने कहा कहो भगवन! अमृतम् कैसे आगमनम् ब्रहे असुतम कैसे हमें स्मरण कराया है। उन्होंने कहा कि मैं अवृतयो अवृता सम्यन ब्रहे ऋतम मैं अपने में यह अनुभव कर रहा हूं क्या तुम्हारे राजा का एक पुत्र है जो मेरे यहां व्याघ ने उसके दो भाग कर दिए है मेरी इच्छा ऐसी है कि तुम प्रजा हो राष्ट्र को मानो

सजातीय बनाते हो मानो उस पुत्र का भी दाह करो। मेरे प्यारे! उनमें से प्रजावानों में से एक प्रजापति ने कहा श्वेतकेतु श्वेती प्रजा ने क्या हे भगवन! हम मानो तुम हमें मोह का, यह मोह की वार्ता क्यों प्रगट करा रहे हो। उन्होंने कहा नहीं मैं मोह की वार्ता नहीं प्रगट करा रहा हूं। उन्होंने कहा तो यह क्या है जो मानो देखो तुम मुझे उद्गीत गा रहे हो यह उद्गीत तुम्हें नहीं गाना चाहिए, उद्गीत गाने है तो और मधुर होने चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो अमृतम आत्म ब्रहे आप मृत्यु के भय में क्यों इतने व्याकुल हो रहे है आपाम ज्योतम ब्रह्मा आप भगवन! आईये और हमें उपदेश दीजिए कि हम ब्रह्मज्ञानी कैसे बने। परन्तु यहां प्रत्येक मानव ब्रह्म का ही बखान करता है, राजा भी ब्रह्म का ही बखान कर रहा है। प्रातःकाल में हम देखो ब्रह्म का बखान करते रहते है, जीवन को शुक्ल-पक्ष में जाना चाहिए। मेरे पुत्रो देखो जब उन्होंने यह कहा कि सम्भूति ब्रह्मा वह प्रजाय देखो हम सब प्रजा है राजा की प्रजा है, अपने में प्रजावान है क्योंकि प्रजा भी जब बने है जब स्वयं हम अपने में प्रजापति बन गये है। राजा भी, हमारा राजा भी जब तक प्रजापति नहीं बना जब तक मानो देखों हम जैसे प्रजाम भूतम ब्रह्मा अपना वाक स्वीकार नहीं किया। तो विचार आता रहता है बेटा! इस प्रकार सम्भूति ब्रह्मा लोकाम देखो मेरी इच्छा यह है ऋषिवर आप अपने आश्रम को चले जाइये गमन कीजिए परन्तु देखो यहां किसी को इतना समय नहीं है कुछ चिन्तन में लगे हुए है कुछ प्रभु का चिन्तन कर रहे है कुछ मानो और चिन्तन हो रहा है तो चिन्तन होते हुए अपने में न दृष्टिपात करके द्वितीयों में संसार को दृष्टिपात करना अज्ञानता कहलाई, यही तो अज्ञान है अज्ञानम् भूतम ब्रहमें जो अज्ञान की आभा में रहता है।

निर्मोही राष्ट्र

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा प्रगट नहीं कर रहा हूं केवल विचार-विनिमय यह क्या हम परमपिता-परमात्मा की अराधना करते रहें देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सागर से पार होने का हम प्रयास करते रहे। तो आओ मेरे प्यारे! मैं बहुत दूरी नहीं जाना चाहता हूं विचार-विनिमय केवल यह कि प्रजा ने, सब ने कहा क्या भगवन! ब्रह्म-ज्ञान में कोई मृत्यु नहीं होती और अपने व्यक्तित्व में भी कोई मृत्यु नहीं होती यह मृत्यु का शब्द आपने कहा से देखो उच्चारण करने के पश्चात अपनी आभा में परिणीत हो गये। मेरे पुत्रो! देखो जब राजा ने राजम ब्रह्मे प्रजा ने यह कहा राज-ऋषि से कि जाओ अपने आश्रम में और यहा! मानो देखो वह सिंह का भोजन है वह सिंह प्राप्त कर लेगा और हम तो मानो देखो निर्द्वन्द हो करके विचरण करते है हमें किसी प्रकार की न विडम्बना होती है, हम विडम्बना से रहित है, न मोह होता है इस मोह ममता से हम रहित है इसलिए हमारा जो राज्य है वह प्रजापति का कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो जहा! प्रजा आनन्द से विचरने वाली, आनन्द से विश्राम गृह में हो और विश्राम ही मानो उनके जीवन का कर्तव्य नहीं बना हुआ हो। तो आओ मेरे प्यारे! देखो मैं अपने विचारो को देता हुआ दूरी न चला जाऊं मैं केवल अपनी आभा में आभाहित रहना चाहता हूं। मेरे पुत्रो! देखो मैं आज विशेष चर्चा न प्रगट करता केवल यह क्या प्रत्येक मानव को अपने जीवन में अपनी महानता की आवश्यकता रहती है। परन्तु देखो राजा ने अमृतम ऋषि अब आश्रम में पहुंचे और आश्रम में जाने के पश्चात् उनका पुत्र देखो राजकुमार विद्यमान है। कहो ऋषिवर। हे राजकुमार तुम्हारा तो राष्ट्र ही निर्मोहियों का है परन्तु देखो माता भी, पिता भी वही वाणी बोल रहा है उसी वाणी का बखान माता कर रही है और माता की वाणी का बखान मेरे प्यारे! देखो अनन्य मोहस्वती देखो वह भी अपने में पाना कर रही है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! मैं विशेष विचार न देता हुआ केवल यह क्या हमें प्रत्येक मानव को अपने जीवन को विचारना है और वह सिंह राज का भोज्य हो गया शरीर ज्यों का त्यों रहा और देखो उसमें जो अवयव थे जल,

अग्नि, तेज, वायु इसमें वह सब निकल गये अमृतम भूतम ब्रह्मा लोकाम वासुदेवात्वाम लोकाम! मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक क्या कह रहा है हम परमपिता-परमात्मा कि अराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करे क्योंकि यही हमारा जीवन है। निर्मोही होना बहुत अनिवार्य है असुताम ब्रह्मे लोकाम वाच सुत। राजा का राष्ट भी वहीं पवित्र होता है बेटा! जो प्रजापतित्व में रहता है और प्रजापति उसे कहते है जो बाह्य-जगत और आन्तरिक-जगत को जो दोनों का समन्वय कर लेता है वही बेटा! देखो प्रजापति है, वही अपने में धारयामि बना हुआ है। बेटा! आज मैं विशेष चर्चा नहीं। वेद-मन्त्र क्या कहता है, वेद मन्त्र यही कह रहा है जो सर्वनाम ब्रह्मा लोकाम वसिसुता विश्वा धर्मणो मेरे प्यारे! देखो जो अपनी प्रजा को धारण करता है बाह्य-जगत की और आन्तरिक-जगत को, दोनों को जो धारण करता रहता है वही ध्रुव कहलाता है। यह है बेटा! आज का हमारा वाक् आज के वाक्। उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हमारे जीवन में महानता आनी चाहिए और हम वसु को अपने में जानने वाले बने हम भी, मानव भी वसु कहलाता है क्योंकि वह बसता है, बसाने वाला है और बसा करके उसका नाम देखो वसु कहा गया है। तो आज का वाक् अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः कि मानव को निर्मोही रहना चाहिए, कर्तव्य का पालन करना चाहिए और राष्ट्रवाद को उन्नत बनाते इस सागर से पार होने का प्रयास करें, अमृतम ब्रह्मा देवाम भूतम ब्रह्मे युवाअस्ते। अब वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन। ओ३म् देवाम् आभ्याम तानु मन्था युवास्ते। ओ३म् देवम् भ्रदानाम आपा रथम माना। अच्छा भगवन्! दिनांक 14-1-1992 स्थान : मकनपुर, गाजियाबाद।

२ तप की मीमांसा 15 01 1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि परमपिता-परमात्मा का यह अनुपम जो ज्ञान है अथवा इसमें जो विज्ञान है वह परमपिता-परमात्मा की महानता और उसका सर्व जगत् उसमें विद्यमान रहता है। किसी भी वेद-मन्त्र के जब मूल में पहुंचोगे तो उसमें एक कर्म चेतना हमें प्रायः दृष्टिपात आती रहती है अथवा उस चेतना का हम अपने में अनुभव करते रहते है और अपने में मानो चेतनित हो करके अपनी चेतना में चेतना का भास करते रहे है। क्योंकि ऋषि-मुनि जब भी किसी वेद-मन्त्र को ले करके प्रायः अपने में अन्वेषण करते रहे है और उस अन्वेषण करने की एक अनुपम पद्धति रही है क्या वह अपने एक एक वाक्य को ले करके उस पर मनन करना प्रारम्भ करते रहे है। परन्तु जब ये विचार आता है कि वेद-मन्त्र मानव को क्या-क्या प्रेरणा देता है। सबसे प्रथम जो प्रेरणा देता है वह कहता है आकाशयाम भूतम ब्रहे वसु वन्मानम ब्रह्मा तपा वेद का वाक् कहता है हे मानव! यदि तू अपने जीवन को महान और पवित्र बनाना चाहता है तो तेरा जीवन तपो में होना चाहिए। क्योंकि तेरा तप ही तेरे जीवन का एक वाहन है जैसे शब्दों का वाहन एक अग्नि कहलाती है। अग्नि जब मानो अपने शब्द को अपने ।पर अश्वस्थ करती हुई गमन करती है तो वह अग्नि ही शब्द का वाहन बन जाती है वह परिक्रमा करना प्रारम्भ करती है इसी प्रकार हमारा जो जीवन है। वह तपो में रहना चाहिए।

महर्षि गाडीवान् रेवक द्वारा तप की व्याख्या

वह प्रायः हमारा वेद का मन्त्र यह कहता है तपम ब्रह्मे वसो रजम कोई भी मानव किसी भी क्षेत्र में वह गमन करना चाहता है तो प्रायः उसका जीवन तपो में होना चाहिए और तप की विवेचना करते हुए एक समय-महर्षि यास्काचार्य से यह प्रश्न किया गया कि महाराज तप क्या है? तो महर्षि ने कहा कि मैं तो इतना जानता नहीं चलो आज देखो हम गाड़ीवान-रेवक के द्वार पर गमन करते है वहां यह प्रश्न करेंगे। अब वहां से जब उन्होंने गमन किया तो गाड़ीवान-रेवक के द्वार पर पहुंचे और गाड़ीवान-रेवक ने ऋषि-मुनियो का स्वागत किया और यह कहा कि महाराज यह तप क्या है? गाड़ीवान-रेवक ने यह कहा तपम भगो वर्णा

सुतम जानाति अस्वताम् देवत्वाम् मानो यह जो तुम्हारा प्रसंग है ये तप क्या है? तप कहते है ज्ञान में तपायमान रहना और अपनी इन्द्रियों को ज्ञान में तपाने के पश्चात् मानो उसका ज्ञान ही उसकी प्रतिभा उसका तप कहलाता है। तो इसीलिए यदि तुम तप का प्रसंग लेते हो तो तप उसे कहते है जो मानव अपने शत्रु और मित्र को, जान सके और जानने के पश्चात् मानो शत्रु और मित्र को दोनों को एक सामान्य दृष्टिपात् करने का नाम तप कहा जाता है। नेत्रों से दृष्टिपात किया जाता है, शब्दों से उद्गीत गाया जाता है और मुनिवरो! देखो वह अप्रणाम ब्रहे नेत्राम भूतम सकरम्भम् ब्रह्मा वह अपने में सुगन्मित भी होता रहा है। तो यहां वेद का मन्त्र, वेद का ऋषि यह कहता है कि तप कहते है जो मानव अपनी इन्द्रियों को जान करके उनको विजय कर लेता है और विजय करके वह परमात्मा के राष्ट्र में स्वतंत्र रूप से वर्णन कर सके और ज्ञान और विज्ञान से अपने को कटिबद्ध करने का नाम तप है। मेरे प्यारे! देखो वेद-मन्त्रो में नाना प्रकार की प्रतिभाओं का प्रायः वर्णन होता रहता है। तो तप की मीमांसा करते ऋषि कहते है कि तपो ब्रह्मण वर्णा ब्रह्म का जानने का नाम तप है। ब्रह्म-ज्ञान में तपायमान होना वह तपो में मानो परिणीत रहता है परन्तु जब और गम्भीरता में प्रवेश करोंगे तो

अन्तकरण में रजोगुण, तमोगुण के संस्कारों को क्षय करने का नाम तप है।

भगवान् राम का तपस्या के लिये आग्रह

बेटा! मुझे वह काल स्मरण आ रहा है जब भगवान राम ने लंका को विजय करने के पश्चात् अयोध्या के लिए गमन किया। तो जब वह गमन उन्होंने किया तो मुनिवरो! वह नाना प्रकार की यातनाएं अपने में सहन करते, भ्रमण करते हुए अयोध्या में गये। अयोध्या नगरी के जितने प्राणी-मात्र थे वह इस प्रतिक्षा में है कि राम का पर्दापण होगा और वह हमारे धिराज बनेंगे। मेरे पुत्रो! देखो इतने में उनका पुष्प विमान आ गया और लंकाम भूते ब्रहेस्वंजनम लंका वास व्रहीक्रतम और अयोध्या वासियों ने उनका स्वागत किया कि लंका से स्वामी का पर्दापण हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो जब वह आये आने के पश्चात् उन्हें ऊर्ध्वा कक्ष में, राष्ट्रीय कक्ष में उनका शयन कराया और सब का बारी-बारी मानों देखो उनसे मिलन हुआ। मानो देखो भरत का एक ही प्रसंग था कि महाराज मैंने आपके कथनानुसार कर्तव्य का पालन किया है अब मैं इस राष्ट्र को नहीं चाहता इस राष्ट्र को अपनाईये। राम ने कहा कि हे भरत तुम्हारा एक ही प्रसंग रह गया है परन्तु मेरे समीप यह प्रसंग नहीं है। उन्होंने कहा प्रभु! आपका क्या प्रसंग है? क्या मेरा यह प्रसंग है तमो वर्णन ब्रह्मे ऋतम

मेरी जो वृत्तियां है वह तमोगुण में रही है और मैं उन तमोगुणी प्रवृत्तियों को शान्त करना चाहता हूं और तमोगुण की प्रवृत्तियां शान्त होने के पश्चात जब सतोगुण रूप पूर्ण-रूपेण मेरे अन्तःकरण में प्रवेश कर जायेगा

तो उस समय कहीं मैं देखो राष्ट्र का अधिकारी बनूंगा। क्योंकि हर प्राणी को अपना-अपना अधिकार होता है वह किस अधिकार का प्राणी है उसको यदि वह अधिकार प्रदान किया जाये तो देखो उस अधिकार को ले करके अपने में महानता का दर्शन कराए और यदि वह अधिकारी है नहीं उसे वह वस्तु प्राप्त हो जाये तो अन्धकार में ले जाता है तो इसलिऐ भरत मैं राष्ट्र को अन्धकार में नहीं ले जाऊंगा। मेरा तो एक ही मन्तव्य

है कि मैं अपने को तमोगुण से दूरी ले जाऊं, रजोगुण से मेरा उपराम हो जाये परन्तु भरत शान्त हो गये।

तप की महत्ता

मेरे प्यारे! देखो वह अपने में अगला दिवस हुआ दिवस के पश्चात् उन्होंने यह घोषणा कर दी। क्या हमारे जो वंशलज हुए है, हमारे जो पूर्वज हुए है वह सब तपस्वी रहे हैं। राजा-सगर ने भी राष्ट्र से पूर्व तपस्या की और सुखमञ्जस उनके पुत्र थे उन्होंने भी तपस्या का जीवन व्यतीत किया और देखो और भी नाना जो हमारे वंशलज हुए है वह सारे तपस्वी थे। महाराज-दिलीप जी तो काममोनु के पीछे ही बारह वर्ष तक देखो

उसके घृत में, दुग्मा में याग करना और जहां वह जाती वही उनका गमन होता, वही उसके दुग्मा का आहार करते। सतोगुणी-बुद्धि बन जाने के पश्चात् ही मानो उसे अधिकार को अधिकार प्राप्त होता है। तो बेटा!

देखो राम ने जब यह कहा कि मैं तपस्वी बनूंगा तो उन्होंने सब राजाओं को निमन्त्रित किया। भरत ने ये निमंत्रित इसलिए किया कि राष्ट्र कोई भोगे तपस्या नहीं। मेरे प्यारे! देखो सब राजा निमन्त्रण के कथानानुसार

अयोध्या में सबका आगमन हुआ महाराजा-शिव भी उसमें थे। जब मुनिवरो! देखो सर्वत्र देवत्वा देव के समान जितने प्राणी थे, राजा थे, वह सब विराजमान हो गये और विराजमान होने के पश्चात् उनकी सभा हुई।

राज्य-सभा और सभा में यह प्रसंग आया कि मैं वेद का मन्त्र उद्गीत गाते हुए उन्होंने कहा राजनम तपम ब्रहे वणुस्ता तपो हिरणायम रथा हे प्रभु! मैं तपो में जा रहा हूं मुझे आज्ञा दीजिए। उन्होंने कहा तप किसे

कहते हैं? यह तपो वर्णनं ब्रह्मा आत्माम भूतम ब्रह्मे ब्रहा क्या देखो इस आत्मा से इन्द्र को जानने का

नाम तप है। उन्होंने कहा चलो प्रियतम जब मुनिवरो! देखो सब राजा एकत्रित हो गये और महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज को उस सभा का सभा पतित्व दिया गया। उन्होंने अपने सभा पतित्व को महाराजा-शिव को प्रदान किया क्या देखो मैं इस योग्य नहीं हू! मैं राज्य सभा के लिए मैं अपना निर्णय दे सकूं यह निर्णय तो जिसे निर्णय देना वही दे सकेगा। मेरे प्यारे! देखो सभा प्रारम्भ हो गई। सभा में यह प्रसंग आया कि राजनम शिव ने कहा महाराज आप राज को भोगिये राज के भोगतव्यवादी बनो क्योंकि प्राणी आहार करता है, प्राणी भोगता है, प्राणी भोगतव्य है मानो वहीं भोगता रहता है मानो संसार को निगल जाता है। जो प्राण-सना है कि ऐसी सना है कि जो संसार को निगल जाती है अपने में धारण कर लेती है। तो इसी प्रकार वह भी तपो ब्रह्मणे तपाम ब्रह्मे वसु मोनु सता मानो देखो मैं तप करने अमृतम तपम ब्रहे मैं तप करने जाऊंगा। जब राम ने यह कहा कि मैं तप करने जाऊंगा तो महाराजा-शिव ने कहा हे राजन! तुम तपस्या क्यों करना चाहते हो राम? उन्होंने कहा प्रभु! आपको तो प्रतीत है, आप तो धिराज है आपका कई समय दैत्य और देवताओं का संग्राम हुआ है परन्तु संग्राम में विजय करना हमारा कर्नव्य है। तो इसीलिए मैं मानो देखो तपस्या में परिणीत होना चाहता हूं तपो गन्मार्वाम भूतम ब्रह्मे असुतम तवाम ब्रह्मे वाचा उन्होंने कहा राम तुम तपस्या करने तो चले जाइये परन्तु मैं तप को जानने के लिए हम सब अवश्य इच्छुक है, क्या तुम्हारे हृदय में तप की मीमांसा अन्तर्हृदय में क्यों जागरूक हुई। तो राम ने कहा प्रभु! आपको यह प्रतीत है कि मैं लंका को विजय करके आया हूं और देखो विजय जब होती है तो उसके अन्तरात्मा, अन्तःकरण में संस्कार होते हैं रजोगुण के, तमोगुण के, सतोगुण के मानो बहुत सूक्ष्म रहते है। तो वह जो संस्कार है मेरे उन संस्कारों के आधार पर मानो देखो मैं अपने में तपो में प्रवेश करना चाहता हूं जिससे मेरा जीवन एक महानता को प्राप्त हो सके।

महाराजा-शिव का निर्णय

मेरे पुत्रों! देखो जब तप के लिए इतना वाक् कहा तो उन्होंने भिन्न-भिन्न विचार लेना प्रारम्भ किया। महाराजा-शिव से कहा कि महाराज राम तपस्या करने जा रहे है राज को भोगे या तपस्वी बने। तो महाराज-शिव ने कहा कि तपस्या पूर्व है राष्ट्र पश्चात है क्योंकि राजा जब तपस्वी हो जाता है तो प्रजा में अनुशासन हो जाता है इसलिए राजा का होना बहुत अनिवार्य है तपस्याम भूतम तपस्या होना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि बिना तपस्या के राष्ट्र का निर्माण नहीं होता बिना तप के मानव ऊंचा नहीं बनता, बिना तपस्या के माता सन्तान को उपार्जन करने का भी अधिकार नहीं होता। मेरे प्यारे! देखो इसलिए प्रथम तप है तप के पश्चात् यह संसार माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो जो इस प्रकार वार्ता प्रगट की महाराजा-शिव ने कहा क्या मैं भी जब यह जानता हूं कि अब राष्ट्र में किसी प्रकार की अशुद्ध वन्तिया या अशुद्ध प्रेरणा से प्रेरित यह समाज बन गया तो मैं भी तपस्या करने चला जाता हूं क्योंकि तप से मानव का अभिमान नष्ट हो जाता है, तप करने से घृणा-वादी नहीं रहता तपस्वी प्राणी के हृदय में साम्यता का देखो बोमा होता है वह उससे बोधित हो करके अपने जीवन में एक अनुपमता को जन्म देते है। तो मुनिवरो! देखो महाराजा-शिव ने अपना यह निर्णय दिया कि राम को तपस्या करने चला जाना चाहिए क्योंकि राष्ट्र और समाज जब भी तपस्या में परिणीत होते है तो वह राजा के तप से ही होते है। यदि राजा में तप नहीं है, क्रियाकलाप नहीं है तो वह शून्य गति को प्राप्त हो जाते है।

तपस्या का निर्णय

मेरे पुत्रो! मैं बड़े आश्चर्य की वार्ता प्रगट करा रहा हूं आज तुम्हें यह प्रतीत है कि राम तपश्यम ब्रह्मे महाराजा-शिव ने कहा कि राम यदि तुम तपस्या के लिए न जाओ तो बड़ा प्रिय है। राम ने कहा प्रभु! मैं क्यों न

जाऊं तपस्या के लिए मुझे तो अपनी आत्मा को बलिष्ठ बनाना है और जो आत्मा को बलिष्ठ बनाता है मानो देखो समब्रही वह अपनी व्रणा प्रवृत्ति से उपरामता को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो यह निर्णय दिया तो वशिष्ठ-मुनि-महाराज से विचार लेना प्रारम्भ किया। महाराजा-वशिष्ठ से कहा कि महाराज कुछ आप अपनी प्रेरणा दीजिए आपका वचन क्या कहता है। महर्षि-वशिष्ठ-मुनि बोले मेरे विचार में तो यह आता है कि राष्ट्र का भोगत्व राम को बनना चाहिए परन्तु जब तक तमोगुणी प्रवृत्ति रजोगुणी है तब तक उसका अधिकार उसे प्राप्त नहीं होगा, तो जाओ तपसचम् ब्रह्मणां ब्रहे तो मानो देखो राजा हो, तपस्या करो बिना तप के राष्ट्र को ऊंचा नहीं बनाया जा सकता, बिना तप के गृह ऊंचा नहीं बनता, बिना तपस्या किए बिना देखो राष्ट्र ऊर्ध्वा को प्राप्त नहीं होगा। मेरे पुत्रों! देखो जब महाराजा-शिव ने यह कहा कि मेरे हिमालय नामक राष्ट्र पर जब मैं राज करता हूं तो प्रायः देखो सब मौन हो जाता हैं सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकाम यह सर्वत्र मानो लोक लोकान्तर अपने में गतिवान हो जाते है। तो मेरे पुत्रो! देखो जब यह वाक् श्रवण किया सर्वत्र ने, तो विचारा गया कि राम को तपस्या करने चला ही जाना चाहिए। वशिष्ठ ने भी यह आज्ञा दी, विश्वमित्र ने भी यही कहा है कि तप से मानव का जीवन बनता है, तप से समाज बनता है।

भगवान-राम का वन गमन

तो राम, बेटा! देखो जब जाने लगे तो भरत ने कहा प्रभु आपाम तपो ब्रह्मे मैं तप को चला जाता हूं प्रभु! आप राष्ट्र को अपने में भोगतव्य करें। तब जब यह वाक् आया तो उन्होंने सम्भवा तपश्चम ब्रह्मणा तपो देवत्वाम तपो हिरणयम ब्रह्मा जब राष्ट्र की और सबकी आज्ञा पाने लगे बेटा! मैं तप करने जा रहा हूं। बेटा! हृदय पुनः से शून्यता को प्राप्त होने लगा, प्राणी मात्र ने कहा प्रभु! राम को अनाथ बना करके तुम यहां से गमन कर रहे हो। मेरे पुत्रों! देखो वह भी अपने में मौन हो गये वह भी मौन हो गये और राम तपस्या के लिए वन चले गये। और राम ने अपना हेतु यही दिया कि मेरी प्रवृत्ति रजोगुणी अन्नो से मानो परिपक्व हो रही है मैं इस अन्न के बिना अन्न को पान करके तपस्या में परिणीत हो सकता हूं। मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है तप करने जब गये तो महर्षि-वशिष्ठ-मुनि-महाराज उनके समीप और भी नाना कुछ ब्रह्मचारी वहां से गमनम ब्रहे गमनम सुता वह वहां से गमन कर गये, भयंकर वनों में बेटा! तप करने लगे। तप किसे कहते है इन्द्रियों के विषयों को जानने का नाम तप है। आगे कहा कि तप क्या है? वह कहते है।

कि मन को वशीभूत करने का नाम तप है। द्वितीय दार्शनिक कहता है कि तपस्या तपने से उसका समन्वय रहता है तपो में हिरणायम ब्रह्मा हिरणयम ब्रह्मा तपाहा क्या यह मानो यह संसार अपने मे तपायमान हो रहा है तपश्चम ब्रह्मा तपमलोकाम तपम हिरणयम ब्रह्मे ऋतम बेटा! इन्द्रियों के विषय को जानने लगे भयंकर वन में और वह अन्नाद भूतम ब्रह्मे देखो अन्न से मानव की बुद्धि का, मन का निर्माण होता है क्योंकि मन प्रकृति का सूक्ष्म-तम तन्तु माना गया है तो मानो देखो उसी सुक्ष्म तन्तु के आधार पर वह मन को पवित्र बनाने में लग गये, इन्द्रियों को संयम में लाने में लग गये। तो मेरे प्यारे! देखो अपने में उन्होंने विचार-विनिमय किया और विचार-विनिमय करके विचाराम भूतम ब्रह्मे वाण सुत देवत्वम ब्रह्मा वह तप करने के लिए भयंकर वन में बेटा! देखो कहीं उस अन्न का सेवन करते रहे जो वायु-मण्डल में तरंगों में रमण कर रहा है। एक भोज्य अन्न में रहता है एक मानो देखो भोज्य जल की अवृत्तियों की धारा में रमण करता रहता है। मानो देखो अग्नि की तरंगों में जो तरंगित हो रहा है वह भी अन्न है। वह प्राणायाम करते हुए कहीं भस्त्रिका के द्वारा, कहीं शीतली प्राणायाम के द्वारा वह प्रायः अपने मन को पवित्र बनाने में लग गये। अन्तःकरण के जो संस्कार रजोगुणों, तमोगुणी

उनको नष्ट करने में परिणीत हो गये।

भगवान् राम की तपस्या

बेटा! मुझे स्मरण है कि राम ने जब इस प्रकार तपस्या करनी प्रारम्भ की इस समय अनुष्ठान किया छः माह का। छः माह के अनुष्ठान में उन्होंने केवल जल का सेवन किया और वायु का सेवन किया। परन्तु छः माह तक देखो उन्होंने अग्नि के परमाणु और जल के परमाणुओं का समन्वय करते हुए उसको अपने में सिंचन किया। बेटा! मन पवित्रतता की आभा में परिणीत हो गया। मन पवित्र बनने लगा, प्रभु का यशोगान गाते है। वशिष्ठ इत्यादि मुनि देखो आश्रम में गमन करते रहे। पर ब्रह्मण प्रणाम भूते प्रेतम ब्रह्मा तपाम मेरे प्यारे! देखो वह अपनी प्रवृत्तियों को तपो में ले गये। ऐसा स्मरण आता रहता है देखो रजोगुण, तमोगुण केवल अन्नाद के द्वारा ही समाप्त होता है प्राण को अपने संग का साथी बना करके समाप्त होता है। बेटा! मैं साधना की चर्चा तो तुम्हें नहीं दूंगा, केवल विचार-विनिमय यह कि हम सामाक बने और साधना में तपस्या का आश्रय ले और तपस्वी बन करके ही हम अपने जीवन को ऊर्ध्वा में प्रवेश करा सकते है। विचार आता है तप किसे कहते है, तप कहते है मनोवान्छन जगत प्रीत मानो देखो तप उसे कहते है जो अशुभ-शुभ प्रेरणा है, अशुभ प्रेरणा के आधार पर हम सर्वत्र विनाशता को प्राप्त हो जाते है। परन्तु देखो जब तवम भूतम ब्रह्मे वह तप में परिणीत हो गये तो तप ही मानव का जीवन है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है राम के द्वारा नाना ऋषिवर उनके चरणों की वन्दना करने के लिए उनका आगमन होता रामभ भूतम राम उनको अपनी सुकामना देते। प्रजा में एक तरंगवाद उत्पन्न हो गया तो वह तपो हिरणयम तपम ब्रह्मा वह तप में परिणीत हो गये क्योंकि वह हिरणय गर्भ थे, जैसे परमपिता-परमात्मा का जगत है वह हिरणय है, हिरणय जन्म ब्रह्मे हिरणय ब्रही अपने में मानो देखो अपने में रत्त होता चला जाता है अभ्यम देवा भ्रमम ब्रह्मे अहम स्द्रो अहम भावा व्ति देवा मानो उसी समय के दान अमृति को प्राप्त करने के पश्चात् मानव का जीवन एक मानवीयता में परिणीत हो जाता है।

भगवान् राम का पुनः अयोध्या आगमन

राम ने, बेटा! बारह वर्ष का तप किया और बारह वर्ष के तप के पश्चात् वह अयोध्या में आये और अयोध्या में बेटा! उन्होंने भरत को निमन्त्रित किया। महर्षि-वशिष्ठ-मुनि-महाराज उससे पूर्व आ गए। वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने कहा राम तुम्हारा तप पूर्ण हो गया। राम ने कहा प्रभु! आपकी अनुपम छपा है सम्भूति देवाम सम्भूति लोकाम वाचन स्वजनम ब्रहे। उन्होंने कहा प्रभु! आप अपने राज को भोगिये, उन्होंने, राम ने कहा यह राज भोगने की वस्तु नहीं होती भरत, यह राष्ट्र तो मानो देखो सेवक बनने की वस्तु होती है। जब राष्ट्र में सेवक बना जाएगा दूरी जा करके तो वही शब्दम गमनम ब्रह्मे शबदम दिव्यम भूतम ब्रह्मा

वाणसुति देवत्वाम ब्रह्मे हमारे यहां आख्यिका यह कहती है। विचारों की क्या उन्होंने जब राम ने यह कहा कि तप करने का सुयोग्य अधिकार मुझे मेरे प्रभु! ने मुझे प्रदान कर दिया है मैं उसी के आश्रित रहता हूं। तो बेटा! मुझे स्मरण है जब उन्होंने ऐसा कहा तो बड़े प्रसन्न हुए और देखो भरतम ब्रह्मे सब कुछ प्रसन्न करके राम को राजा बनाया गया। उसके पश्चात् जब राजा बना जब भी राजा-महाराजा और महाराजा-शिव उस समय विद्यमान थे। उन्होंने विभाण्डक को निमन्त्रित किया और जब विचार-विनिमय होने लगा तो उनका विचार क्या कि देखो प्रजा को सुखद बनाया जाये। जब प्रजा सुखद होगी उसी काल में हमारे राष्ट्र का जीवन पवित्र बनेगा और हम सफलता को प्राप्त होंगे तपो ब्रह्मणे तपा मेरे पुत्रो! देखो इतना उदगीत गा करके राम ने अपनी राज्य सभा में अपना एक उपदेश प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा हे राजाओं!, हे धिराज! शिव-महाराज मैंने यह आपके

कथानानुसार यह अपनाया है परन्तु मेरा प्रजा को एक सन्देश है। सबसे प्रथम प्रजा में क्या-क्या गुण होने चाहिए जो मैं यहां से घोषित कर रहा हूं। देवी ने कहा कहिए उद्गीत गाने के लिए हम सदैव तत्पर है सम्भूति ब्रह्मा सम्भूति लोकाम अग्नि ब्रह्मणा वस्तुते। यह ब्रह्माग्नि है जिसके मानो देखो ब्रह्म की अग्नि ब्रह्म में समाहित हो जाती है परन्तु पंच-महाभूतों से संकल्प धारण करने वाले को मानो देखो पृथ्वी

का रूप कहा जाता है। बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूं। विचार यह दे रहा हूं कि हम अपने में तपस्वी बने और तप किसे कहते है मन, वचन देखो मन-मस्तिष्क और वचन सबको पवित्रता की वेदि पर ले जाना। बेटा! राम अपनी राज्य सभा में उपस्थित हो गये नाना ऋषिवर उनसे समन्वय करने के लिए, मिलान करने के लिए अपने आसन को त्याग करके कजली-वनो से आ गए। वह बडे प्रसन्न हो गये, प्रसन्न युक्त हो करके कहा सम्हा मंगलाह भवे राजनमम ब्रह्मे भरत ने यह कहा हे प्रभु! अब आप इस राष्ट्र पर शयन कीजिए राम ने कहा बहुत प्रियतम ऐसी ही मेरी विचारधारा बन गयी है।

तप से ऊंचा जीवन

तो मुनिवरो! देखो मुझे वह काल स्मरण है कि संसार में जब तक तपेगा नहीं जीवन ऊंचा नहीं बनेगा चाहे वह गृह में प्रवेश करने वाला हो, चाहे वह राष्ट्रीयता को अपनाने वाला हो, चाहे सामाजिक जीवन हो, चाहे आमयात्मिकवेत्ता हो। तो मुनिवरो! देखो तप के बिना जीवन नहीं बनता। माता अपने में तप करती रहती है तो उसका तपस्वी जीवन है, सन्तान का जन्म होना कोई आश्चर्य नहीं परन्तु उसको प्रजा बना देना ही आश्चर्य है। तो मानव को अपने में तप करके अपने को बनाना चाहिए, रजोगुण, तमोगुण की जो प्रवृत्ति उन्हें शान्त कर देना चाहिए। राम ने कहा है, क्या महाराज मेरी प्रवृत्ति अपवित्र बन गई मैंने बारह वर्ष का अनुष्ठान किया कुछ समय वायु का सेवन किया कहीं अन्नाद का सेवन किया मानो देखो इसी प्रकार मैं पाता हुआ दूरी चला आया हूं। सम्भूति लोकाम सम्भूतिवर्णानं वाचसुतम ब्रह्मे लोकाम वायु सम्भवा देवा। मेरे प्यारे! देखो राम ने महाराजा-शिव के कथनानुसार प्राय उस याग का प्रारम्भ किया दिव यज्ञजनम देवा यज्ञंजन्म दिव्या यंजनम देवा प्रणाम ब्रहे ऋतम देवा। मेरे पुत्रो! देखो मैं तुम्हें यू उद्गीत गा रहा हूं।

क्या मानव को तपस्वी बनना चाहिए क्योंकि बिना तप के राजा राष्ट्र को ऊंचा नहीं बना सकता और यदि तप नहीं है तो वह राजा नहीं और तपस्वी बन करके किसी क्रियाकलाप को करना अधिकार अनधिकार को

न विचार करके यह वरण होगा तो मानो देखो वह विचार कोई विचार नहीं होता, विचार तपस्वियों का होता है। तो मेरे प्यारे! देखो राम अपने में राज करते रहे और संघर्ष भी प्रजा के समीप होता रहा, भिन्न-भिन्न प्रकार का संघर्ष होना एक स्वाभिविक्तम माना गया है। मेरे प्यारे! देखो मैं अभी-अभी उद्गीत गा रहा था हे उद्गानम भूतम हे उदगानम भूतम ब्रह्मे व्राचसुतम ब्रह्मा एक ब्रह्मज्ञानी है ब्रह्म के ज्ञान में तपता रहता है। एक मानव पृथ्वी के गुणों में दृष्टिपात करता है उसे प्रभावित कर देता है परन्तु कोई भी मानव हो किसी प्रकार का वह साधना में प्रवेश करना चाहता है तो उसको उन गुणों को अपनाना बहुत अनिवार्य है। जिससे

जीवन एक महान से महान बन जाये और पवित्रत्व में रमण करता हुआ इस सागर से पार होने का प्रयास करें। बेटा! राम अपने अयोध्या में अपना प्रवेश करते हुए और प्रवेश करके बेटा! उसी में वह उसी में अमृता तत्वों को प्राप्त करते रहे। तो आओ मेरे प्यारे! यह तो ऋषि का अपना मन्तव्य है क्या वह सर्वभूताम भूतम ब्रहे क्या यह जो संसार है सब एक प्रकार का भूतज्ञ कहलाता है। भूतज्ञ उसे कहते है जो वर्तमान में कुछ दृष्टिपात हो रहा हो, वृद्धपन में कुछ और दृष्टिपात हो रहा है। अपने-अपने आहार जैसे किया जाएगा उसी प्रकार

मानो देखो उसकी प्रतिभा का जन्म होता रहेगा। तो मन-मस्तिष्क एकाग्रता की वेदी पर होने चाहिए। बेटा! तपस्वी राजा ही राष्ट्र को सुखद अनुभव करा सकता है। यहां एक रावण का राज्य है जो रावण के राष्ट्र में कोई सुविधा भौतिक ऐसी नहीं जो न थी। वह भौतिकवाद में, त्रेतवाद में रमण करते रहे। मुनिवरो! देखो उत्सुकता केवल यह कि ऊंचा जब बनते है जब ऊर्ध्वा में गमन करने के पश्चात वह ध्रुवा की प्रतिभा मे रत्त हो जाते है।

भगवान् राम का राष्ट्र निर्माण

मेरे पुत्रो! देखो राम ने अपने राष्ट्र को अपनाया भरत को सहायक बनाया, लक्ष्मण को आज्ञा भूतक बनाया और उन्होंने अगले दिवस बेटा! राष्ट्र का निर्माण करना प्रारम्भ किया। राष्ट्र की प्रतिभा में बड़ी ऊर्ध्वा में सभा होना राम ने सबसे प्रथम अयोध्या के नगर वासियों की सभा की और यह राम ने कहा तुम्हें प्रतीत है मैंने तुम्हें क्यों एकत्रित किया है। प्रजा ने कहा प्रभु! यह हमारा सौभाग्य है और हम सौभाग्यशाली है जो मानो देखो आपकी संरक्षण में हम पालना के मूल में विद्यमान है। मेरे पुत्रों! देखो राम ने कहा हे अयोध्यावासियों! तुम्हारा मैं सेवक हूं मैं राजा नहीं हूं, तपस्वी जो होता है वह समाज का, संसार का, प्रभु का सेवक होता है वह किसी की प्रजा नहीं होता इसीलिए मैं प्रजा नहीं हूं मैं प्रजावान नहीं हूं, केवल मैं अपने आभा के दो शब्दों को उद्गीत गाने के लिए आया हूं। तो विचार-विनिमय क्या स्वन्मानम देहि ऋताम राम ने बेटा! नाना प्रकार के अपने क्रियाकलाप प्रारम्भ कर दिए। अस्पुतम देवा उन्होंने सबसे प्रथम सभा में यही कहा हे राम! तुम सहयोग दो और सहयोग से अमृता को प्राप्त हो जाओ, प्रजा ने यह कहा। प्रजा को राम ने यह कहा प्रजाओ तुम अमृत बन जाओ, और राष्ट्र को अमृतमयी परिवर्तित कर दो। राम के और प्रजा के दोनों के विचार एक-दूसरे के मानो देखो पूरक थे। धामनि मवंजनम धामानिभूतम अव्यवतम देवत्वाम देवा मेरे पुत्रों! देखो राम का जो शब्द है वह अद्वितीय है और प्रजावासियों, अयोध्या वासियों से यही कहा कि हमारे जो पूर्व राजा हुए है, वंश है वह सब तपस्या में परिणीत होते और मैंने भी तपस्या की है तपो हिरण्यम तपाम ब्रह्मे वह मानो देखो तप में मैं रत्त होना चाहता हू। उन्होंने बहुत प्रियता की आभा प्रगट करते उन्होंने कहा कि हे भगवन! आपाम देवम बहुअतम आपाम रोह अमणी ऋतम देवत्वाम कर्णा वर्णासुते उन्होंने कहा कि राजा को चाहिए की वह प्रजा और राजा दोनों सम्मलित हो करके अपने क्रियाकलापों में तत्पर हो जाये मेरे पुत्रों! उन्होंने वैसा ही स्वीकार किया। प्रजावान बनना सन्तान उत्पन्न होना यह सब हमारे वैदिक-साहित्य में प्रायः आता रहता है। तो मानव को प्रजावान बनना चाहिए क्योंकि प्रजावान बन करके ही देखो स्वतः प्रजापति को सुखद बना सकते है। तो हम ब्रह्मणा ब्रह्मणे ऋतम देवतो ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो हम राजा अमृतम राम ने कहा कि हम राजा नहीं सेवक है। प्रजा की जो सेवा करना जानता है वह राष्ट्रीय ऋण से अवऋण हो जाता है तो वह अवऋण होना चाहिए। प्रत्येक मानव को अपने में अपनेपन का भान होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो बारह वर्ष का अनुष्ठान राम ने किया उसके पुनः अयोध्या में उनका आगमन हुआ और अयोध्यावासियों को वह राष्ट्र की शिक्षा क्या तुम्हें अश्वमेघ-याग करना है। अश्व कहते राजा को और मेघ कहते है प्रजा को, जो मिलन हो करके याग करता है, विचारक, एक दूसरे के विचारों से सहमत हो जाता है एक दूसरे के विचारों में तन्मय हो जाता है बेटा! वह महान् विचारक है और वह बड़ा सौभाग्यशाली है। मुनिवरो! देखो इस प्रकार प्रत्येक मानव अपने में गुणगान गाना चाहता है। धारयामि वर्णनं ब्रह्मा ध्रुवो सम्ब्रहे वह धारयामि बनना चाहता है। मेरे पुत्रो! मैं कोई व्याख्यता नहीं हूं मैं केवल तुम्हें यह विचार ले करके चला हूं कि मानव अपनी इन्द्रियों को परिपक्व बनाता हुआ और राष्ट्रीयता और राजा हो तो राष्ट्र का पालन करें और राष्ट्र में किसी प्रकार की अशुद्धिया न हो।

यह बेटा! आज का हमारा मन्तव्य है। यह क्या कह रहा है कि हे अयोध्यावासियों! तुम अपने राष्ट्र को अपनी राष्ट्रीयता को ऊंचा बनाओ पुनः से उन्होंने वैसा ही किया तपस्या में महानता को प्राप्त होने लगे। मेरे पुत्रो! उन्होंने राष्ट्र का जो अधिकारीपन स्वीकार किया तो इसलिए राजा को यह अधिकार होता है जब तक वह तपस्वी नहीं, विचारक नहीं है तब तक वह राष्ट्र का अधिकारी नहीं है। जैसे माता का पुत्र है माता का पुत्र इसी प्रकार के दर्शनों में रत्त होता है परन्तु देखो वह अपने से दूरी नहीं जाना चाहता। अपनाम भूतम ब्रह्मे अपनाम ब्रही प्रायः अपना ही संसार में सर्वत्र है अपनेपन में हृदय निहित रहे और महानता की ज्योति का दर्शन कराता रहे बेटा! देखो वह महान कहलाता है। तो यह आज का हमारा विचार क्या कह रहा है, हम परमपिता-परमात्मा की अराधना करते हुए वह परमपिता-परमात्मा राष्ट्र का स्वामी है और राष्ट्र का स्वामित्व से राष्ट्र में एक महानता का जन्म होता है जब देवतवाम भूतम ब्रह्मा वासु सम्भवा महानता की ज्योति जब ही उत्पन्न हो जाती है जब तपस्वी प्राणी आ जाते है अपने पूर्वजों की आभा को प्राप्त करते हुए महाव्यापी बन जाते है और बन करके ही मुनिवरो! वह महानता का दर्शन कराते है। तो विचार क्या मुनिवरो! राम ने बारह वर्ष का तप किया वशिष्ठ और महाराजा-शिव की आज्ञा से और प्रजा को वह राष्ट्रीयता की आभा में ले जाने का प्रयास किया। बेटा! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूं विचार यह देने के लिए आया हूं कि प्रत्येक मानव को अपने विचारों में, अपने में तपस्वी बनना चाहिए क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जानना, उनका शाकल्य बना करके खरल करके, बेटा! उसको हृदय में प्रवेश करा देना चाहिए। हृदयम भूवम ब्रह्मा अरे! हृदय से ही तो मानव देखो प्रीति करता है, हृदय में ही तो संसार समाहित हो जाता है, हृदय में ही मुनिवरो! देखो सर्वत्र राष्ट्र के राष्ट्र समाहित हो जाते है। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। अच्छा भगवन्! दिनांक 15-1-1992 स्थान : मकनपुर, गाजियाबाद

३ अनुशासन की प्रतिभा 16 01 1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा महिमावादी है और उसकी महिमा इस महान जगत में एक-एक कण-कण में प्रायः हमें दृष्टिपात आती रही है। तो हम उस परमपिता-परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणवादन करते रहे। क्योंकि जो भी मानव इस संसार में प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है चाहे वह किसी भी योनि के रूप में हो सर्वत्र प्राणी अपने में ज्ञान और विज्ञान को चाहते हैं। उनके हृदय में एक पिपासा लगी रहती है कि मैं परमपिता-परमात्मा की अनुपम सृष्टि को अपने मे निहारता चलू। आत्मा का जो ज्ञान है वह अनुपम है और आत्मा उस अपने सखा को अपने धारण करना चाहती है और आत्मा प्रत्येक प्राणी के अन्तर्हृदय में विद्यमान है चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाले हो, चाहे वह जल में रमण करने वाले हो, चाहे वह पृथ्वी पर रेंगने वाले हो परन्तु सर्वत्र में प्राणी ज्ञान को चाहता है और अपने माता-पिता की प्रशंसा को चाहता है। क्योंकि वह जो परमपिता-परमात्मा है वह सर्वत्र का माता और पिता कहलाता है। इसीलिए प्रत्येक मानव के अन्तर्हृदय में एक पिपासा रहती है कि मैं अपने ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाऊं और ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो करके उसकी सृष्टि को निहारता रहू। हमारे यहां प्रत्येक वेद-मन्त्र उस महान देव की महिमा का गुणगान गाता रहता है और प्रत्येक प्राणी के हृदय में उसकी पिपासा जागरूक रहती है क्योंकि ज्ञान कदापि भी वृद्धपन को प्राप्त नहीं होता, ज्ञान सदैव मानो एक रस बना रहता है। जो एक रस रहने वाला, न तो उसे वृद्धपन आता है और न उसे शिशुपन आता है, वह सदैव नवीन बना रहता है। तो हमें उस नवीनता के । पर विचार-विनिमय करके अपने ज्ञान और विज्ञान का जो एक अनुपम विषय है उसको अपने में धारयामि धारण करते रहे।

अनुशासन

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद-मन्त्र बहुत सी वार्ताएं प्रकट कर रहा था, जहा! यह वाक् प्रगट कर रहा था वहां राष्ट्र के प्रति मानो देखो अपनी विचित्रता प्रगट कर रहा है। वेद-मन्त्र कहता है कि राष्ट्रदम ब्रह्मा वर्णस्वता मनाहा क्या प्रत्येक जो भी राष्ट्र में प्राणी-मात्र रहता है वह मानो देखो अपने में राष्ट्र उनका नवीन रहता है। जैसे मानव-समाज का राष्ट्र है इसी प्रकार तुम समुद्रों के आंगन में जब प्रवेश करोगे तो वहां भी एक मनु समाज है, वहां भी एक मानव-समाज है जिनके मन रहता है वह राष्ट्रम अपने में राष्ट्र की विवेचना करते रहते है। परन्तु एक पृथ्वी तुम्हें मण्डल पर नहीं नाना प्रकार के जो लोक-लोकान्तर है उनमें भी देखो राष्ट्र और सृष्टि है और वहां भी मानव गमन करता रहता है, वहां विज्ञान भी है, जलाशय भी है परन्तु सर्वत्र वहां विद्यमान रहता है। तो मानव सदैव यह चाहता रहता है क्या मैं अनुशासन में हूं। क्योंकि अनुशासन प्रत्येक लोक-लोकान्तरों में अपना एक अनुशासन है। क्योंकि जैसे परमपिता-परमात्मा ने सृष्टि का निर्माण किया तो निर्माणवेत्ता ने मानो देखो यह भी एक नियम और अनुशासन में सर्वश सृष्टि रहती है। एक लोक दूसरे लोक की परिक्रमा करता है तो वह भी एक अनुशासन कहलाता है। तो इसी प्रकार प्रत्येक मानव मानव के समीप रहता है तो वह भी अनुशासित रहता है तो इसीलिए प्रत्येक मानव मानो वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू अपने में अनुशासन की प्रतिभा को अपने में धारण कर जिस समय अम्ब्रहा उसको धारण करने वाला ही मानो अपने में

मानवीयता का ही मानो अपने में मनो-वस्तु को प्राप्त करता रहता है। तो आओ मुनिवरो! देखो आज का हमारा वेद-मन्त्र यह कहता है कि सार्वभौम जो प्राणी-मात्र है, मानव समाज है वह अपने में मन की आभा को धारण करता रहता है और उनके राष्ट्र है परन्तु अपने-अपने राष्ट्रों में सबसे प्रथम जो राष्ट्र होता है वह मानव का अपना जीवन है। अपने जीवन में यदि मानो वह अनुशासित रहता है तो उसका राष्ट्र जैसे मानो देखो एक राजा है और राजा स्वयं अनुशासित है, नियमित है तो उसका राष्ट्र भी अनुशासन नियमित होता चला जायेगा। यदि राजा के मनो में बिखरा हुआ बिखरापन रहेगा तो अनुशासन नहीं रहेगा तो प्रजा भी अनुशासित नहीं हो सकेगी। इसीलिए हमारा विचार यह कहता है, वेद का मन्त्र यह कहता है कि प्रत्येक मानव को अपने में अनुशासित होना है और प्रजा उसके अनुसार अनुशासित हो जाती है।

भगवान् राम का राज्यभिषेक

मेरे प्यारे! मैंने कई कालों से इससे पूर्व काल में मैं तुम्हें राम की चर्चा कर रहा था। राम ने बेटा! देखो यही कहा था लंका को विजय करने के पश्चात् क्या मैं अपने को अनुशासित तो कर लूं। जब तक मेरा जीवन ही अनुशासित नहीं रहेगा रजोगुण, तमोगुण मेरा शान्त नहीं होगा तो मैं राष्ट्र का पालन नही कर सकता, मैं

राष्ट्र को अनुशासित नहीं बना सकता। क्योंकि मेरा जीवन अनुशासित होना बहुत अनिवार्य है। तो बेटा! मैंने तुम्हें कई कालो में कहा है कि राम ने तप किया और अपनी इन्द्रियों को जय करके अपने आहार और व्यवहार को पवित्र बनाया और आहार व्यवहार को पवित्र बनाना उनको सात्विकता का एक नृत कराते हुए उन्होंने बेटा! देखो अपने राष्ट्र को, राष्ट्र को उन्नत बनाने के सुयोग्य जब बन गये, अनुशासित हो गये तो बेटा! देखो राष्ट्र को अपनाने का प्रयास किया। तप करने के पश्चात् मानो देखो वह तपो वनो को त्याग करके, भयंकर वनों को त्याग करके मुनिवरो! वह अपने राष्ट्र को अपनाने का उन्होंने प्रयास किया। राष्ट्र को अपनाने के पूर्व उन्होंने एक सभा की और सभा में मुनिवरो! देखो उन्होंने महाराजा-शिव, महाराजा-इन्द्र और मुनिवरो! देखो उन्होंने और भी नाना राजा जैसे अश्वपति और भी नाना ऋषि-मुनियों को निमन्त्रण दिया। जिसमें बेटा! देखो महर्षि-विभाण्डक, महर्षि-पारेत्वर ऋषि-महाराज, महर्षि-वशिष्ठ और महर्षि-विश्वामित्र, महर्षि-श्रृंनि और मुनिवरो! देखो और भी नाना ऋषियों को उन्होंने जैसे महर्षि-पारावाह, वैश्मपायन और गाड़ीवान-रेवक और भी नाना-ऋषि मुनियों का बेटा! एक समूह एकत्रित हुआ जिसमें प्रव्हाण, शिलक और दालभ्य मेरे प्यारे! देखो सर्व ऋषि-मुनियों का उन्होंने समाज एकत्रित किया। उनमें राजा भी विद्यमान थे, माता-अरून्धति को विशेषकर उन्होंने निमन्त्रण दिया और महर्षि-भारद्वाज आदि ऋषि-मुनियों को निमन्त्रित करते हुए उन्होंने ऊर्ध्वा आसन प्रदान किए और आसान प्रदान करने के पश्चात उन्होंने कहा, कहो ब्राहा वृति ब्रह्मा वर्णसुतो और मुनिवरो! देखो और भी नाना-ऋषि-मुनि एकत्रित हो करके उन्होंने कहा कहो राजन! आज कैसे हमें निमन्त्रित किया है। तो महाराजा-भरत ने यह कहा प्रभु! मेरी इच्छा यह है क्या मैंने एक राष्ट्र को बहुत समय तक मैंने प्रजा की सेवा की है और मैं प्रजा का सेवक बन करके रहा हूं और मैं राम का सेवक विशेषकर बन करके रहा हूं परन्तु मेरी इच्छा यह है क्या आप देखो राम का राज्यभिषेक होना चाहिए और राज्यभिषेक होने के पश्चात मानो देखो इसको अपनाये और प्रजा को मानो देखो जैसे हमारे पूर्वजों ने, हमारे महावृत्तियों ने प्रजा को नाना प्रकार का मार्ग दिया इसी प्रकार भगवान-राम देखो एक महानता का उपदेश दे और वह मानो अपना सन्देश दे करके प्रजा को ऊंचा बनाए। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कहा बहुत प्रिय, तो सब ऋषि-मुनि मानो अपने-अपने आसनो पर विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो महाराजा-शिव को उसका अमयत्त बनाया गया सभा का और शिव की अमयत्तता में मानो देखो

उनके विचार-विनिमय होने लगे। मेरे प्यारे देखो! सन्देश देने लगे जिसे कुछ उच्चारण करना हो और राष्ट्र के विषय में किसी को किसी प्रकार का आपत हो वह उच्चारण करो क्योंकि देखो वही राजा उसका प्रयत्न करेगा। मेरे प्यारे! राम एक आसन पर विद्यमान है, एक पर लक्ष्मण है और मुनिवरो! देखो भरत, शत्रुघ्न अपने भिन्न-भिन्न आसनों पर विद्यमान है, राजलक्ष्मीया भी उनके अपने-अपने आसनों पर विद्यमान है। मेरे प्यारे! देखो एक स्थान पर पुरोहित है और द्वितीय पर मानो देखो उनके राजपुरोहित विद्यमान है।

महर्षि-वशिष्ठ-मुनि महाराज के उद्गार

तो विराजमान हो करके बेटा! देखो सबसे प्रथम महर्षि-वशिष्ठ मुनि-महाराज उपस्थित हुए और महात्मा-वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने यह कहा क्या मैं हे राम! तुम्हें राज्यभिषेक करता हूं और राज्यभिषेक पूर्व, राज्यभिषेक से पूर्व एक मेरा विचार है कि सबसे प्रथम राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होना चाहिए यदि राजा के राष्ट्र में ब्राह्मणत्व नहीं है, बुद्धिमान देखो प्रजा नहीं है तो राष्ट्र को कोई भी उन्नत नहीं बना सकता। मानो एक राष्ट्र पर मेरा विचार यह है कि राष्ट्र पर किसी भी प्रकार का मानो देखो अपने मनोवांछित उनमें विचार

नहीं प्रस्तुत किया जाये। मेरे प्यारे! राम ने, सबने उसका देखो हृदय से स्वागत किया और उन्होंने कहा कि राजा के राष्ट्र में विद्यालय होने चाहिए परन्तु विद्यालयों में देखो वानप्रस्थ जितनी शिक्षा परम्परा से हमारे यहां नियमावली चली आई है क्या वानप्रस्थ और ब्रह्मवेत्ता देखो वह राष्ट्र में शिक्षा देने वाले हो। कन्या को जब भी शिक्षा दी जाये मेरी पुत्रियों को उनमें देखो वानप्रस्थ या जो गृह से उपरामता को प्राप्त हो चुकी है विदुषी वह विदुषी मानो देखो राष्ट्र को उपदेश दे। देखो वह देवी को उपदेश देने वाली हो, कन्या का उन्हें कन्या का मार्ग देना चाहिए कन्यान भूतम ब्रह्मा क्योंकि मेरी पुत्रियों का जो सद-मार्ग है वह पवित्र होना चाहिए। यदि पुत्रियों का मार्ग पवित्र नहीं होगा, देवियों का मार्ग पवित्र न होगा तो राष्ट्र में सन्तानों का जन्म नहीं होगा। महर्षि-वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने यह कहा कि तुम्हारे यहां विज्ञान होना चाहिए और वैज्ञानिकों को नाना प्रकार की प्रति श्रोत्रतियता प्रदान करनी चाहिए। जिससे देखो विज्ञान मानो पृथ्वी से लेकर के राजा के राष्ट्र में मानो सूर्यमंडलों तक की उन्हें सूचकता होनी चाहिए। इस प्रकार का विज्ञान हो जिससे लोकलोकान्तरों में राजा के राष्ट्र में यातायात बना हुआ होना चाहिए। जैसे एक समुद्र से पार राजा द्वितीय राष्ट्रो में भ्रमण करता है इसी प्रकार अपने वाहन के द्वारा तो विज्ञान भी इसी प्रकार का होना चाहिए। वह लोक-लोकातन्तरों का गमन करने वाला हो और वहां का विज्ञान, वहां की वृत्तियां सब राजा के राष्ट्र में होनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो महात्मा-वशिष्ठ ने कहा ऐसे ब्रह्मचारी हो जो ब्रह्म का ही मानो देखो उनके द्वारा चलन रहना चाहिए। यह उस काल में होगा जब राजा का सन्देश प्राप्त होगा राजा की प्रतिभा का जन्म मानो देखो जब वायुमण्डल में प्रवेश करेगा और विद्यालयों में जिस प्रकार का उपदेश होगा और देखो कन्याओं के विद्यालयों में जब भी शिक्षक हो तो वह इस प्रकार का हो जिसकी तरंगे चंचलता को प्राप्त न हो। ब्रह्मचरियों के द्वारा ब्रह्म का ही चिन्तन हो और यदि चंचलता आ गई है तो देखो उनका जो ब्रह्मचर्य-व्रत है या वृनिया है उनके हृदय की तरंगे मानो वह तरंगित करती रहेंगी। मेरे प्यारे! इतना वाक् उच्चारण करके वषिश्ठ-मुनि-महाराज ने यह कहा कि ब्राह्मण होना चाहिए राजा के राष्ट्र में मेरे प्यारे! देखो उन्होंने वह अप्रतम उच्चारण करके वह शान्त हो गये।

महर्षि-विश्वामित्र का उपदेश

ऋषि-विश्वामत्रि उपस्थित हुए और विश्वामित्र ने यह कहा कि प्रभु! यह राम का बड़ा सौभाग्य है कि भगवान-राम ने यह अपने में व्रत धारण किया कि मैं सबसे प्रथम तपस्या करूंगा क्योंकि तपस्या करके राजा

देखो ब्रह्मवेत्ता बने है। इसी प्रकार मेरा देखो एक ही उपदेश रहता है क्या मेरे हृदय में जब महात्मा-वशिष्ठ-मुनि-महाराज ने मुझे एक प्रेरणा दी और एक प्रेरणा मुझे कामधेनू से, एक गऊ से प्राप्त हुई और उसी गऊ के उस प्रेरणा से ही मानो प्रेरित हो करके मानो राष्ट्र को त्याग करके और भयंकर वन में गायत्री-छनदों में प्रवेश कर गया। जब मैं वेद-मन्त्रों में अमययन में लग गया और मेरा तप विशाल बन गया तो मानो देखो मैं बहुत से देखो मैं जानकारी में नाना प्रकार के मेरे में अभिमान की मात्रा बनी परन्तु जब ज्ञानी ब्रह्मवेत्ता ज्ञान की प्रेरणा देता है, वेद की प्रेरणा देता है, उस प्रेरणा के साथ मानो देखो मैं अपने में ब्रह्मवेत्ता बन गया और ब्रह्मवेता बन करके आज मैं अप्रतम ब्रह्मे अपने आत्मा मानो देखो मन, मस्तिष्क, मन-मस्तिष्क को मैं सदैव अपने में धारण किया क्योंकि अपने में ही प्रत्येक प्राणी समाहित हो रहा है। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो जब महात्मा-विश्वामित्र ने कहा कि मैं मानो देखो जय बन गया और जय बनना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है वही ब्राह्मण होता है, ब्राह्मण में यदि देखो ब्राह्मण वही है जो तपस्या में परिणीत हो जाये। मुझे ब्रह्मवेत्ता कह करके आचार्य ने मुझे जब पुकारा तो मेरा अन्तर्हृदय प्रसन्न हो गया परन्तु देखो उस अन्तर्हृदय के प्रसन्न होने पर मैंने तपस्या में तपस्यामग्ने मैंने तपस्या का अनुभव किया, क्या तपस्या का यह प्रभाव होता है। तो यह आज बड़ा सौभाग्य है कि जो अयोध्या-पुरी में जो राजा वह इतने तपस्वी कि वह बारह वर्ष का उन्होंने अनुष्ठान किया है इसके लिए हम सब प्रजा और जितने भी ज्ञानम-ब्रह्मे सब मानो देखो अपने में प्रसन्न है। मेरे पुत्रों! देखो विश्वामित्र यह उच्चारण करके और उच्चारण करके यह उनका एक वाक्य रहा क्या राजा के राष्ट्र में मानो देखो प्रत्येक प्राणी अपने में देखो प्रसन्न रहना चाहिए और प्रसन्न वह रहता है जिस राजा के राष्ट्र में मानवीयता का मानो देखो मनन करने का समय प्राप्त होता है। राजा स्वयं मनन करता है, प्रजा स्वयं मनन करती है, देखो राजा स्वयं यागिक होता है तो प्रजा भी स्वयं यागिक बना करती है। जब प्रजा में यागिकता का, यागिकतता की भावना होती है तो मानो देखो प्रत्येक वस्तु को ज्ञान से दृष्टिपात किया जाता है। तो वह राजा और प्रजा दोनों पवित्रतता को धारण करके मानो देखो वहां प्रत्येक मानव एक दुसरे से प्रसन्न रहता है। तो इस प्रकार देखो उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में उपता नहीं रहनी चाहिए। उपता उस काल में आती है जब राजा के राष्ट्र में नाना-प्रकार के सम्प्रदायों का जन्म हो जाता है और सम्प्रदायों के जन्म का एक ही हमारे द्वारा एक ही निर्णय हुआ है कि राजा रावण के यहां नाना-प्रकार के सम्प्रदाय कहलाए गये क्योंकि राक्षस भी एक सम्प्रदाय थी। राजा रावण स्वयं मानो देखो अपनी इस राक्षस सम्प्रदाय को स्वीकार करते थे और उनके जो पुत्र थे, अहिरावण वह मानो देखो अनार्यता के राष्ट्र में देखो वहां भी वह उस अमृति-सम्प्रदाय को अपने में धारण करते थे। इसी प्रकार उनके पुत्र जो इन्द्रजीत कहलाते थे मानो मेघनाथ के नामम् ब्रह्मे वह इन्द्र को विजय करके उन्होंने देखो एक ब्री-सम्प्रदाय का जन्म उनके अन्तर्हृदय में हुआ उनके बहुत से अनुयायी बने और जो देखो जो भी सम्प्रदाय बनता है उस सम्प्रदाय में कोई न कोई मानो ऐसा नृत रह जाता है क्योंकि व्यक्ति की वह जो एक सम्प्रदाय, एक चलन होता है उसमें कोई न कोई त्रुटि रह जाती है। वह वेद से गुथा हुआ नहीं होता है और वेद से गुथा हुआ कोई भी मानव देखो वह मत नहीं होता वह तो मानो देखो अपने में सम्पूर्णता को प्राप्त किए रहता है और क्योंकि वह वेद नाम प्रकाश का है इसलिए प्रत्येक मानव प्रकाश के लिए वह सदैव रत्त रहता है। तो इस प्रकार महात्मा विश्वामित्र ने अपना उपदेश दे करके कहा कि राजा के राष्ट्र में प्रत्येक मानव एक दुसरे से ज्ञान में प्रसन्न रहे, ब्राह्मण समाज ब्रह्मा ब्राह्मण होने चाहिए जिससे सम्प्रदाय न पनप पाये और यदि सम्प्रदाय पनपेगी तो उसके द्वारा कुरीति आयेगी और कुरीती आयेगी तो मानो देखो राष्ट्र अन्धकार में चला जाएगा। मेरे प्यारे! देखो यह महात्मा-

विश्वामित्र ने अपना वाक् उच्चारण करके वह भी अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महर्षि-भारद्वाज-मुनि द्वारा मार्गदर्शन

मेरे पुत्रो! इतने में महर्षि-भारद्वाज-मुनि-महाराज उपस्थित हुए और भारद्वाज-मुनि ने कहा हे प्रभु! मेरी इच्छा यह है क्या राजा के राष्ट्र में इस प्रकार का विद्यालय होने चाहिए जिन विद्यालयों से विज्ञान का जन्म हो और वह वैज्ञानिक मानो देखो अपने यन्त्रों का स्वतः निर्माण करने वाला हो और निर्माण करके सूर्य की ऊर्ज्वा

के साथ में यन्त्रों का गमन करना होना चाहिए। क्योंकि सूर्य की ऊर्ज्वा के साथ में जब यन्त्र लोकों की परिक्रमा करता है मानो देखो वह लोकों को जानने वाले यातायातों को जन्म देता है इस प्रकार का विज्ञान राजा के राष्ट्र में होना चाहिए और राजा के राष्ट्र में मानुर्याग होने चाहिए क्योंकि मानुर्याग उसे कहते है, अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या राजा के राष्ट्र में राजकुमारों में होनी चाहिए और राजा स्वयं उस प्रकार के मानो देखो वह यन्त्रों को जान करके अपने राष्ट्र और मानवीयता को ऊंचा बनाने में लगे रहे। तो इस प्रकार देखो मुनिवरो! उपदेश दे करके और यह कहा कि राष्ट्र के माध्यम से ही विज्ञान पराकाष्ठा में होना चाहिए और मानुर्याग होना चाहिए। जिस मानो मानुर्याग के द्वारा प्रत्येक मानव देखो ब्रह्मचारी अपने में पवित्रता का संदेश दे करके अपने राष्ट्र को उन्नत और अपने राष्ट्र को पवित्र बनाने वाला हो। मेरे प्यारे! यह वाक उच्चारण करके उन्होंने कहा और विद्यालयों में देखो ब्रह्मचारी और आचार्य दोनों नैतिकता में तपे हुए होने चाहिए और जब नैतिकता में तपा हुआ समाज होता है तो उस समाज में मानो देखो कुरुतियों का जन्म नहीं होता। इस प्रकार मुनिवरो! देखो महर्षि-भारद्वाज अपने वाक् उच्चारण करके वह भी अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महाराजा-अश्वपति की शिक्षा

इतने में बेटा! महाराजा-अश्वपति उपस्थित हुए और महाराजा-अश्वपति ने कहा क्या भगवन! मैं इस देखो बुद्धिमानों और विवेकी पुरुषों की सभा में मैं क्या उद्गीत गा सकता हूं मेरा तो यही है क्या राजा को राष्ट्र का अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए जो राजा यह चाहता है कि मैं अपने राष्ट्र को उन्नत बनना चाहता हूं, मैं प्रजा को सुखद बनाना चाहता हूं तो राजा को स्वयं अपने में मानों देखो कला-कौशल करके और अपने में कृषि का उदगम करके उस अन्न को पान करना चाहिए। क्योंकि मैं स्वयं उस अन्न को पान करता हूं समय-समय पर मानो, राजा के राष्ट्र में नाना प्रकार के यागों का विधान होना चाहिए जैसे वृष्टि-याग है, अश्वमेध-याग है, अजामेध-याग है और भी नाना जैसे वाजपेयी और अग्निष्टोम-याग है इस प्रकार के यागों का चयन होना चाहिए और राजा के राष्ट्र में देखो राजा को उस अन्न को ग्रहण करना चाहिए जिस अन्न

से मानो देखो उसकी बुद्धि का पवित्र निर्माण हो क्योंकि मन कि जो उत्पति है वह अन्न के द्वारा होती है इसलिए अन्न पवित्र होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो उन्होंने कहा क्या भारद्वाज-मुनि-महाराज यहां विद्यमान है भारद्वाज-मुनि-महाराज देखो शिलस्थन अन्न को ग्रहण करते थे। और उस अन्न को खरल बना करके अग्नि में तपा करके पान करते रहे मानो देखो राजा जब अपने राष्ट्र को त्याग करके भयंकर वन में तप करने चले गये है तो उनका अन्न मानो देखो यही रहा है कहीं वायु का सेवन है तो कही आपोमयी मानो देखो अन्न का सेवन करते रहे खरल बना-बना करके उस अन्न से मुनिवरो! देखो मानव का मन पवित्र बनता है और मन के पवित्र बनने से देखो बुद्धि पवित्र बनती है और बुद्धि से मेधावी आती है और मेधावी से प्रज्ञावी आती है देखो वह वसुन्धरम ब्रह्मा मेधा से देखो वसुन्धरा आती है और वसुन्धरम बुं मेरे प्यारे! देखा प्रज्ञावी पुरुष बन जाता है और राजा जितना प्रज्ञावी होता है उतना उसको ईश्वरीय विवेक होता है और जितना विवेक होता है उतना ही मानो

देखो उसका राष्ट्र पवित्र होता है, वह ब्रह्मवेत्ता राजा होता है।

मेरे प्यारे! देखो राजा महाराजा-अश्वपति ने इस प्रकार अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में देवियां भी इसी प्रकार की राजलक्ष्मीया होनी चाहिए जिससे राजलक्ष्मीयां तपस्वी हो और मानो वह तपश्चर से अपनी संतान को जन्म दे सके। क्योंकि माता जितनी तपी हुई होती है माता का जितना भी देखो राष्ट्र में उनका राष्ट्रीयत्व जीवन पवित्र होता है वह माताएं मानो देखो पवित्रता को अपने में धारण करती उनका अन्न, अन्न पवित्र होने से सन्तान को पवित्र बनाया जाता है। मानो देखो याज्ञकाचार्य ने आवृनि देखो वेद-मन्त्रों के माध्यम से इस प्रकार का व्यवधान किया है क्या माता देखो जो अपने गर्भ में अन्तरात्मा में, शरीर में जो मानो बाल्य पनप रहा है, शिशु पनप रहा है देखो माता उसका प्रायः दर्शन करने वाली बनती है। अपने गर्भ में जो माता अपने पुत्रो का, पुत्रियों का दर्शन करती है उन माताओं को देखो यहां संसार में व्रत्यम ब्रह्मा व्रते देखो उनको सन्तान को जन्म देने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो वह अमृतम राजा ने जहां अमृतमयी इन वाक्यों को उद्गीत रूप से गान-गाने से अमृतम ब्रव्हे देखो गान के रूप में उन्होंने इस प्रकार का उपदेश दिया तो मुनिवरो! देखो राम का और सभी का हृदय पवित्रतता में परिणीत हो गया और यह कहा राजा अश्वपति ने कहा प्रभु! मैं स्वयं मेरी देवी और हम दोनों प्रातःकाल में कृषि का उद्गम करते है और उस अन्न को पान करके जब हम राष्ट्र के क्रियाकलापों को हम पवित्र बनाते है मानो देखो अन्नाम भूतम ब्रह्मे और राष्ट्र में याग करते है जिससे किसी प्रकार की त्रुटि न आ जाये। तो मेरे प्यारे! देखो उनका यह उपदेश जब प्रारम्भ रहा तो मुनिवरो! देखो वह वशिष्ठ इत्यादि प्रसन्न हुए और राजा ने यह कहा कि राजा स्वयं मानो देखो अपने शारीरिक और भौतिक जीवन को ऊंचा बनाए सबसे प्रथम देखो शारीरिक उन्नति करना राजा का कर्तव्य है। उसके पश्चात् वह देखो अमृतम जब शरीयणाम ब्रहे आत्मा का उत्थान हो जाता है आत्मा बलिष्ठ हो जाता है मानो देखो शारीरिक और देखो आत्मिक चेतना उसकी पवित्रता को धारण करती है इन्द्रियों पर जय होता रहे तो वह राजा अपने राष्ट्र को ऊंचा बनाता है। मेरे प्यारे! देखो यह महाराजा-अश्वपति यह उच्चारण करके बोले कि राजा के राष्ट्र में राजा भी स्वयं ब्रह्मत्व को प्राप्त होना चाहिए और यदि राजा ब्रह्मत्व को प्राप्त नहीं होगा तो राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण भी नहीं होगा। तो इसीलिए उसका मन, मस्तिष्क मेधावी रहना चाहिए प्रज्ञावी और मुनिवरो! देखो वह मेधाम भूतम ब्रह्मा वसुन्धरम ब्रह्मे वसुन्धरावि रहना चाहिए। जिससे बेटा! देखो राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण जो कर्मकाण्डी उसके समीप आये वह भी यह उच्चारण अपने मन में विचारे कि मैं राजा के समीप कोई अशुद्ध वाक् न प्रगट कर जाऊं जिससे राजा मेरी अशुद्धियों को अपने में धारण करें और वह मुझे मानो किसी प्रकार का दण्डित कर दे। मेरे प्यारे! देखो राजा यदि अपने राष्ट्र में ब्राह्मणों का निर्वाचन करता रहा है। और वह राजा जो ब्राह्मण है परन्तु उसकी परीक्षा देखो वर्ष में एक समय उनकी परीक्षा का समय आता है तो राजा के समीप उन राजा ब्रह्मवेत्ता होने चाहिए इसीलिए देखो राजा के राष्ट्र में ब्रह्मणत्व की आवश्यकता है। मेरे प्यारे! देखो महाराजा-अश्वपति इस प्रकार का उपदेशम ब्रह्मा वाक् उच्चारण करके उन्होंने एक वाक् और कहा कि राजा के राष्ट्र में विद्यालयों में राजा को जाना चाहिए प्रत्येक विद्यालय में और वहां जा करके उन्हें यह मानन ब्रह्मा देखो कि उनके यहां किसी प्रकार की चंचलता तो नहीं है विद्यालयों में। मेरे प्यारे! देखो यदि ब्रह्मचारियों के समीप आचार्यो की चंचलता होगी या उनके द्वारा मानो देखो प्रतिशोध, काम, क्रोध लोभ हो गया होगा तो मानो देखो विद्यालय में ब्रह्मचारी कदापि भी ऊंचा नहीं बन सकेगा। चंचल भावना उत्पन्न हो गयी है तो वह उनके विचारों के अन्तःकरण में स्पर्श होते रहे है, और उनके विचारों में इस प्रकार राजा के राष्ट्र में यत्र होने चाहिए वह यत्र

विद्यालयों में रहने चाहिए। मुनिवरो! देखो जैसे कोई अशुद्ध चंचलता आचार्य में आ जाये या ब्रह्मचारी में आ जाये उनके चित्र मुनिवरो! देखो उसी चंचलता को लिए हुए भाव को ले करके ही मानो देखो वह चंचलता के विचार जब आते है तो बेटा! उनका बहिष्कार करना चाहिए। मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं मैं यह उच्चारण कर रहा हूं यदि समाज को ऊंचा बनाना है अन्यथा राजम ब्रह्मा राजा को ऊंचा बनाना चाहिए, राजा देखो अपने यहां विज्ञान और मानवीयता के लिए ज्ञानम भूतम ब्रह्मा मेरी पुत्रियों का जीवन पवित्रतता में राजा के संरक्षण उनके ज्ञान-विज्ञान के द्वारा होने चाहिए। मेरे प्यारे! देखो इस प्रकार का महाराजा अश्वपति ने अपना वाक् प्रगट करते हुए उन्होंने कहा कि अपने शान्त और इन्द्रियों पर विजय और बौद्धिक और शारीरिक सर्वत्रता का उन्नत होना राजा का कर्तव्य है। मेरे प्यारे! वह अपने कक्ष में विद्यमान हो गये। विद्यमान हो करके मुनिवरो! देखो अपना-अपना उन्होंने मन्तव्य प्रगट किया और एक ही वाक् को ले करके सम्भूति ब्रह्मा वर्णोसुते।

महर्षि-प्रवाण-जी की प्रसन्नता

इतने में बेटा! महर्षि-प्रवाण-जी उपस्थित हुए और महर्षि-प्रवाण ने यह कहा है क्या समय वेताम् समाव्रतम ऋतम दक्षपय वां क्या हे राजो, हे प्रजाओं! आज हमारा यह बड़ा सौभाग्य है जो राम जैसे सखा मानो उनका राज्यभिषेक होने जा रहा है और हमारा यह सौभाग्य है क्या ऐसे तपस्वी राजा जो मानो देखो बारह वर्ष का अनुष्ठान करने के पश्चात् उन्होंने देखो इस राष्ट्र, अपनी वेदि को अपनाने का प्रयास किया है। हमारा यह बड़ा सौभाग्य है, हम बड़े सौभाग्यशाली है प्रजा अपने में बड़ी सौभाग्यशाली रहती है जब इस प्रकार के तपस्वी राजा हो क्योंकि तपस्वी तपस्वी का ही विचार-विनिमय करता रहता है और वह तपस्वीयों की रक्षा करता रहता है राजा, तो इस प्रकार का राजा के राष्ट्र में आपति ही नहीं होता जो राजा स्वयं तपस्वी होता है वह मानो देखो उस राजा के राष्ट्र में आपति काल नहीं आता। आपति काल जब आता है जब राजा स्वयं अपने में देखो राजा नहीं रहता वह दूसरों की प्रजा के वैभव को अपने में संग्रह करने वाला बनता है। तो प्रजा में मानो उसके प्रति रक्त भरी-वन्ति आ जाती है और देखो प्रजा मंगलम ब्रह्मे वह रक्तमयी क्रांति आ करके देखो राष्ट्रीयता नष्ट होने के लिए तत्पर हो जाती है। तो इस प्रकार मानो देखो राष्ट्रम ब्रह्मा ऋतम देवो तो राष्ट्र देखो अपने में भ्रष्ट हो जाता है। इसीलिए राजा, जब तपे हुए होते है और राजा इन्द्रियों पर विजय करने वाले होते है और स्वयं अपने में कृषि का उद्गम करके जैसे महाराजा अश्वपति ने कहा है ऐसे राजा मानो देखो अपने को अपनी प्रजा को ऊंचा बनाते है, तपस्या में परिणीत कर देते है मानो देखो इस प्रकार वह उच्चारण करते हुए वह भी अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महर्षि-अंगिरस-मुनि-महाराज का आशी-वचन

मेरे प्यारे! देखो अंगिरस-मुनि-महाराज ने यह कहा कि मैं तो पूर्व ही यह कहता रहता हूं कि देखो यहां तपश्चर होना चाहिए। जब हमने देखो शृंगी ने और हमने, दोनों ने याग किया था पुत्रेष्ठि तो उस समय कौशल्या ने हमे दक्षिणा प्रदान की थी और वह दक्षिणा में हमने यही स्वीकार किया था क्या हमें तो मानो देखो ऐसे सन्तान को जन्म देने की प्रतिज्ञा करो, संकल्प करो जिससे देखो वह राष्ट्रीय ऐश्वर्यो मे न परिणीत हो जाये। वह कौशल्या ने हमें दक्षिणा में प्रदान की और वह स्वयं तपस्वी बनी। क्योंकि माता तपस्वी होगी तो देखो माता के गर्भ से महान पुत्रों का, तपस्वीयों का जन्म होगा और यदि माता तपस्विनी नही होगी सन्तानों का जन्म होगा वह सन्तान देवियों के शृंगारों को हनन करने वाला बनेगा। मानो देखो राष्ट्र में, समाज में अराजकता आ जायेगी और समाज मानो देखो अपवित्र बन जायेगा। मेरे प्यारे! यह महर्षि ने, अंगिरस ने यह अपनी चर्चाएं की।

अंगिरस ने कहा क्या मेरे विचार में तो यह आता है कि जितने भी पाण्डित्व है, वह तपस्वी है वह याग करते समय देखो संकल्प कराते चले जाये, दक्षिणा में देते चले जाये कि हम यह चाहते है, हम देखो तुम्हारे गृह को उज्ज्वल और प्रकाश में लाना चाहते है। मानो देखो इस प्रकार के वाक उच्चारण करके उन्होंने कहा राम जैसे सखा का यह जन्म है और यह हम बड़े सौभाग्यशाली जो इतना महान तप करने के पश्चात् वह अपनी राष्ट्रीयता को अपनाने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार बेटा! उच्चारण करके वह अपने ही आसन पर विद्यमान हो गये। मेरे प्यारे, यह तो ऋषि-मुनियों का अपना-अपना विचार है उन्होंने अपना-अपना राष्ट्रीयता और मानव-समाज के लिए उन्होंने अपना-अपना उपदेश दिया और अपने-अपने वाक प्रगट किए बेटा! देखो इसमें बहुत से विचार रह गये है। विचार केवल यही है कि राजा, राष्ट्र जब आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में राष्ट्र की चर्चाए आ रही थी और वह राष्ट्र की चर्चाएं ये कि राजा अपने में जय हो और परमात्मा का चिन्तन करने वाला हो क्योंकि परमात्मा निरभिमानी है इसलिए राजा को निरभिमानता से लेना चाहिए। राजा इस संसार को धारण कर रहा है इसीलिए वह अपने सर्वत्र राजा को भी देखो, अपने में राष्ट्र को, राजा को धारण करना चाहिए और राजा स्वयं और मानो देखो स्वयं प्रजा से कुछ नहीं चाहते वह स्वयं मानो देखो इसी प्रकार राजा अपनी कुशलता में पूर्णता का अपना परिचय देता रहे। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो उन्होंने उच्चारण करके ऋषि-मुनियों ने अपने विचार, देखो अपने-अपने विचार देखो सब शान्त कर दिये। उन्होंने कहा राजा के राष्ट्र में समय-समय पर ब्रह्मवादियों की चर्चा होनी चाहिए जिससे राजा में देखो ब्रह्मवेत्ता बनने की क्षमता बनी रहे और ब्रह्म का उपदेश बना रहे। तो इस प्रकार विचार मेरे प्यारे! देखो अपने में महानता को ले जाते है और राष्ट्र और समाज दोनों पवित्र बनते है। उस समाज में मुनिवरो! देखो प्रत्येक गृह अपने में मुनिवरो! देखो सामाजिक और जिस सामाजिक आत्मिक उन्नति करता हुआ समाज अपनेपन को प्राप्त हो जाता है। तो इस प्रकार का मुनिवरो! देखो अपना-अपना मन्तव्य दे करके ऋषि-मुनि अपने अपने कक्ष में विद्यमान हो गये और विद्यमान हो करके अपने में सान्तवना को प्राप्त होते रहे। तो आज बेटा! देखो मैं कोई व्याख्यता नहीं हूं मैंने तुम्हें वह विचार दिए है कि सभा में, राष्ट्रीय सभा में अपने अपने प्रजा के विचारों को राजा को अपने में धारण करना चाहिए। उनके विचारों को अपने विचारों से सन्तुलना करके अपने को ऊंचा बनाना चाहिए। बेटा! चाहे वह वैज्ञानिक विचार हो चाहे वह देखो वह मानो चाहे ब्रह्म ज्ञानी विचार हो, चाहे राष्ट्रीय अनुशासन के विचार हो, चाहे इन्द्रियों को जय करने के विचार हो उन सर्वत्रतता को राजा को समय-समय पर अपने राष्ट्र में अपना करके उनमें बेटा! देखो समाज सदैव नवीन बनता है, विचारों से नवीनता को प्राप्त होता है और वेदज्ञ बन करके अपने को प्रकाश में ले जाता है। तो यह है बेटा! आज का वाक। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें आगे की शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। क्योंकि यह तो उनके यहा! समय-समय पर विचार होते रहते थे और उन विचारों का जो समूह है वह एक महानता में गमन करता रहा है। बेटा! तो आज का विचार क्या कि हम मुनिवरो! देखो अपने में महान बनने के लिए नाना प्रकार के विचारों को अपनाये और वह परमात्मा से प्रत्येक विचार सुगठित होना चाहिए जैसे मानव की प्रत्येक इन्द्रिया मन से सुगठित होती है तो उनका मन इस शरीर रूपी रथ का सार्थी कहलाता है। इसी प्रकार अपने सार्थी से बन्धा हुआ प्रत्येक इन्द्री जय बन करके बेटा! अपने को प्राप्त हो जाता है। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हे शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज का विचार समाप्त। अब वेदो का पठन-पाठन। अच्छा भगवन्! दिनांक 16-1-1992 स्थान : मकनपुर, गाजियाबाद।

४ अनुष्ठान 17 01 1992

जीते रहो, देखो, मुनिवरों आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी है ओर उसी के जगत में हम सदैव विद्यमान रहते हैं मानो उसकी महिमा इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत है और अपने में ही मानो वह समाहित रहती है विचार आता है कि हम परमपिता परमात्मा कि महिमा का सदैव गुणगान गाते रहे क्योंकि उसी का गुणाध्यानम करना प्रायः हमारी आत्मा में उन्नत प्रह्ना प्रकाशम व्रहा आत्मा में प्रकाश आता है तो इसीलिए प्रत्येक मानव को प्रकाशक बनना ओर प्रकाश मं रत्त रहना ही उसका कर्तव्य माना गया है। तो आओ मुनिवरों आज का हमारा वेदमन्त्र हमें क्या प्रेरणा दे रहा है क्यांकि प्रत्येक वेदमन्त्र हमें कोई न कोई प्रेरणा देता रहता है ओर हम मानो प्रेरणा को प्राप्त करते हुए उसमें प्रेरित होते हुए अपने विचार ओर अपनी मानवीयता को उसी के आधारित मानो अपने जीवन को उन्नत बनाते रहे। प्रायः मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानो अपने में विचार-विनिमय करता रहा है ओर नाना प्रकार के अनुष्ठान करता रहा है अनुष्ठान कही मानो वह वाणी के द्वारा अपना अनुष्ठान करता रहा है ओर कहीं नेत्रों के द्वारा अपना अनुष्ठान करता रहा है ओर कहीं घ्राण व त्वचा के द्वारा अपने में अनुष्ठानित रहा है। यह विचार रहा है कि मैं अनुष्ठान करूं। मेरी इन्द्रिय मानो पवित्रता को धारा करती रहे, मेरा इन्द्रियम मंगलम ब्रहे सम्भवाः ओर इन्द्रिया पवित्रता में रत्त हो जाएं। क्योंकि हमारे यहाँ जब परमपिता परमात्मा ने इस संसार का निर्वाचन किया तो मानो वह अपने में बड़ा पूर्णता को प्राप्त होता रहा है ओर प्रत्येक मानव का अंग-प्रत्यंग का निर्माण किया। वह इतना विशाल निर्माणवेत्ता है क्या वह निर्माण करता हुआ कितना चिन्तन और कितनी महानता मे अपने को लिए हुए जब बेटा! इसका निर्माण का इसकी प्रतिभा को साक्षात्कार में दृष्टिपात कराई।

ऊर्ध्व गति

तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या है मै। इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही केवल यह क्या प्रत्येक साधक यह चाहता है कि मेरी इन्द्रियां पवित्र हो जाए। जो भी अनुष्ठान रने वाला है चाहे वह भयंकर वनों में अनुष्ठान कर रहा है, चाहे वह गृह में अनुष्ठान कर रहा है किसी भी प्रकार का अनुष्ठान हो परन्तु उसके मन की एक ही पुकार है, उसके मन की एक ही मनत्वा है क्या वह अपने को महानता में ले जाना चाहता है ओर अपने को मानो देवत्व बनाना चाहता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यही कि प्रत्येक मानव को अपनी मानवीयता उस प्रभु के संरक्षण में ले जानी चाहिए।

राष्ट्र को ऊँचा बनाना

तो आओ मुनिवरों देखो, आज मैं इसमें व्रत्यम् भवितम् ब्रह्मा वेद का वाक् यह कहता है हे मानव तू अपने जीवन में मानवीय राष्ट्र को ऊँचा बना क्यांकि राष्ट्रीयता उसी में पवित्रता को धारण करती रही है ओर प्रत्येक इन्द्रियों को मानो देखो, अनुष्ठानित बना जिससे प्रत्येक इन्द्रियों का विषय तेरे द्वारा मानो एकत्रित हो करके वह हृदय रूपी यज्ञशाला में मानो दख्ेो वह समाहित हो जाए ओर उसी में वह अपने में अपनेपन को ही धारण करता रहे। आओ बेटा! देखो, इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय क्या कि हम अपने में अपनेपन को अपने इस परमपिता परमात्मा के अमूल्य जगत के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे ओर अपने को अपनेपन में ही मानो धारयामि बनाते रहे। तो आओ बेटा! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा नही प्रगट करना चाहता हूँ तुम्हें

उसी राष्ट्रीय विचारों में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो, राष्ट्र जब ऊँचा बनता है और राजा बनना चाहता है तो उस राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होने चाहिए और ब्राह्मण कैसे हो, ब्राह्मण ब्रह्मे ब्रह्मज्ञान सवतप प्रह्ना जो ब्रह्म को जानने वाले हो मानो जो माताओं के गर्भ से उत्पन्न होने वाले ब्रह्मवेत्ता हो मानो देखो, वह ब्राह्मण कहलाता है मेरे पुत्रों! देखो, जैसा याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन करते हुए कहा हे कि ब्राह्मण कौन है तो वह कहता है ब्रह्म जानाति ब्राह्मण जो ब्रह्म को जानने वाला है। आगे वेद का ऋषि कहता है ब्राह्मण कौन है? जो ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में जो स्वीकार करता है वह ब्राह्मण कहलाता है मेरे पुत्रों! देखो, वह ब्राह्मण की विवेचना करने वाला अपने में ब्रह्मवेत्ता कहलाता है इसीलिए राजा कौन है? वेद का मन्त्र कहता है, कि राजा कौन है, पर वह कहता है कि जो अपने शरीर रूपी जो यज्ञशाला है, शरीर रूपी जो उसका साम्राज्य है जब तक उसका साम्राज्य शरीर ऊर्ध्वा में नही होगा और संयमी और मानो विजय करने वाला नही होगा तब तक वह राजा नही होगा, वह राजा अमृत कहलाता है और वह राजा राष्ट्र को ऊँचा बनाता है क्योंकि राजा का कर्तव्य है कि अपने को अपनेपन में धारण करता हुआ समाज को उन्नत बनाता रहे। तो बेटा! देखो, मैं राष्ट्र की चर्चा कर रहा था, विचार-विनिमय क्या मुनिवरों देखो, महात्मा अंगिरस मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य दिया और अंगिरस ने यह कहा क्या राजा के राष्ट्र में समय-समय पर मानो पुत्रेष्टि यागों के कर्मकाण्ड वाले ब्राह्मण होने चाहिए, मानो देखो, ब्राह्मण जो कर्मकाण्ड से मानो ओत-प्रोत होते है। वही समाज को ऊँचा बनाते है।

ब्रह्मवेत्ता के दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है कि जब माता मदालसा मुनिवरों देखो, अपने पुत्र को अपने गर्भस्थल में जब उसे ब्रह्मवेत्ता निर्वाचित किया। तो ब्रह्मवेत्ता जब बन गया तो मुनिवरों देखो, वह केवल चार वर्ष का ब्रह्मचारी, पांच वर्ष का जब हुआ तो मेरे प्यारे! वह ब्रह्म का ब्रह्म को जानने वाला है माता के प्रश्न कर रहा है माता उत्तर दे रही है तो मुनिवरों देखो, एक समय महाराजा सोमकेतु राजा के मन में यह विचार आया क्या माता मल्दालसा का पुत्र पांच वर्ष में ही ब्रह्म वेत्ता बन गया हैं मैं उसके दर्शन करने चलूं क्योंकि ब्रह्मवेत्ता का दर्शनार्थ पान करना भी मानव का एक सौभाग्य माना जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, राजा श्येनकेतु अपने आसन को त्याग करके मुनिवरों देखो, वह मन्त्रियों सहित गमन करता है औ गमन करते हुए बाल्य मानो उस समय अपने सहपाठियों में मुनिवरों देखो, क्रीड़ा कर रहे थे। जब उन्होंने कहा कि महाराज यह ब्रह्मचारी है, जो माता मल्दालसा का पुत्र, ब्रह्मवेत्ता है। ब्रह्म की ही मानो देखो, आभा में रत्त रहता है तो राजा ने उन्हें मन ही मन में ऊर्ध्वा शब्दों में भी उन्हें नतमस्तिष्क हुए और नतमस्तिष्क हो करके राजा, मानो ब्रह्मचारी मौन हो कर वह ब्रह्मचारी अपनी क्रीड़ा करता रहा तो राजा ने कहा हे ब्रह्मचारी! तुमने मेरा कोई वादन नही किया है तो उस समय ब्रह्मचारी कहता है महाराज मैं किस शब्दों में तुम्हारा वादन करूं। उन्होंने कहा ब्रह्म वर्णा सुतं एक वेदमन्त्र उन्हें उच्चारण किया हृदयसुतम हृदयमान ब्रह्मे ऋतम हृदय वर्णानं ब्रह्मे कृता वह कहता है कि मैं किस शब्दों में देखो, मैं तुम्हारा वादन कर सकता हूँ। जब तुम मानो देखो, राष्ट्र से चले हो और यह इच्छा करके चले हो कि मैं ब्रह्मवेत्ता का दर्शन करना चाहता हूँ तो उस समय देवताओं के आसन भी मानो देखो, अपनी स्थलियों से अपने में ही मानो देखो, ओजस बन गये हे राजन! जिस समय तुम्हारे हृदय मे जो देवता क्रियाकलाप कर रहेर हैं वह देवता अपने में मौन हो गये थे क्या राजा एक ब्रह्मवेत्ता का दर्शन करने जा रहा है मानो देखो, जब देवताओं ने तुम्हारा देखो, वादन किया मैं किस शब्दों से तुम्हारा देखो, वादन कर सकता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, मैं उन शब्दों से तुम्हारा कोई वर्णन नही कर सकता क्यांकि जो वह वादन किया वह अवर्चनीय शब्द है वह तुम्हारे

हृदय ममें जो देवता क्रियाकलाप कर रहरे है वह देवत्व की अपने में धारणा को ले करके अपने वाक् उच्चारण कर रहे है। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा के राष्ट्र में राजा को स्वयं ब्रह्मवेत्ता बन करके मुनिवरों अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहिए। अपने हृदय प्रमाण ब्रह्मे हृदय रूपी यज्ञशाला को ऊँचा बनाये। तो मेरे प्यारे! देखो, माता यह होती है तो मुनिवरों देखो, अपने बाल्य को अपने गर्भस्थल में अपनी लोरियों का पान करा करके उसे ब्रह्मवेत्ता बना देती है और ब्रह्म का वह जिज्ञासु बन करके यथार्थी बन करके और मानो देखो, वही सहवृत्ति बन करके मुनिवरों देखो, अपने में वृत्तियों का धारण करता रहा है तो विचार आता रहा है कि मुनिवरों देखो, हमारे यहाँ विचारवेत्ता कहते हैं कि हम अपने में ही मानो देखो, उस प्रकार का वादन करने वाले बने तो राजा जब मौन हो गया। राजा ने कहा तुम्हें धन्य है। वास्तव में तुम ब्रह्मवेत्ता हो क्योंकि ब्रह्मवेत्ता जैसे तुम्हारे शब्द है तुम बाल्यों में क्रीड़ा अवश्य कर रहे हो क्योंकि अभी बाल्य है परन्तु बाल्यों में मुनि कहलाते हो इसीलिए मैं तुम्हारा देखो, वादन कर रहा हूँ। तो राजा ने उस ब्रह्मचारी के चरणों का अनुमोदन किया और देखो, यह कहा कि धन्य है ब्रह्मचारी।

माता का तप

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या वेदमन्त्र कहता है कि क्या सबसे ऊर्ध्वा में गमन करने वाला वह मानव है जो ब्रह्म में लीन रहने वाला, ब्रह्म में ओत-प्रोत रहने वाला है माता वह सौभाग्यशालीनि होती है जिनके गर्भ में ब्रह्मवेत्ता पुत्रों! का जन्म हो जाएं और माता का हृदय भी मानो देखो, देवता उसकी प्रशंसा करते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं राजाओं की चर्चा कर रहा था कि भगवान राम के यहाँ जब तपस्या करने के पश्चात ब्रह्मवेत्ताओं का, देखो, राजाओं का सर्वत्र मानो देखो, सभा हुई। तो सभा में मुनिवरों देखो, वह महर्षि अंगिरस ने कहा हे राजन! हम बड़े प्रसन्न है मानो देखो, माता का तप है, माता का तप विद्यमान है। जिस समय देखो, पुत्रेष्टि याग हुआ था तो पुत्रेष्टि याग में देखो, जब ब्रह्मचारी ब्रह्मवर्चोसी बन गये मानो एक-एक वर्ष तक ब्रह्मवर्चोसी बन गये। बनने के पश्चात पुत्रेष्टि याग हुआ, अनुष्ठान किया गया तो देखो, एक माह और बारह दिवस तक पुत्रेष्ठ्रि याग का देखो, अवधान चलता रहा बेटा! देखो, मुझे वह काल स्मरण है मानो देखो, यज्ञमान उसी तपे हुए जल को पान करते थे तो यज्ञ में तरंगें उत्पन्न होती हैं वह तरंगें जल अपने में धारण करता था उन तरंगों को और अग्नि को कहा जाता है हे अग्नि! तू तपायम ब्रहे अग्नि में ही वह तपता रहा तो जल भी वही पान करना, आहार भी देखो, यज्ञशाला में यज्ञाग्नि में देखो, वह उसी अन्न को तपा करके मुनिवरों देखो, वही पान किया जाता। तो मानो देखो, राजा के हृदय में और देवियों के हृदय में मानो उनके हृदय में तरंगों का जन्म हो जाता है उन परमाणुवादों में एक बलवती शक्ति आ जाएं देखो, जिससेस वह पुत्रेष्टि अपने में सुयोग्यता में परिणत हो जाएं और ब्रह्मचारी इस प्रकार होने चाहिए जिनका ब्रह्मचर्य तेज मानो उनकी वाणी प्रत्येक इन्द्रियों में वह देखो, वह तेजस्वी बनी रहे। तो इस प्रकार अंगिरस ने कहा क्या राम देखो, वह माता कौशल्या ने वही कहा था कि तपो ब्रह्मा तपं दिव्यं ब्रह्मे कृतं देवो राष्ट्रतप प्रह्रा क्या मेरा बाल्य यदि राष्ट्रवेत्ता भी बनेगा तो वह महापुरूष बन करके रहेगा अन्यथा वह तपस्वी बन करके देखो, वनचरों में गमन करके, देखो, अपनी प्रतिभा का प्रसारण करेंगें तो इस प्रकार देखो, माता का यह तारतम्य था कि वह कला कौशल करके द्रव्य का अध्ययन करती थी तो विचार आता रहता है कि देखो, उसी समय जब याग किया गया तो याग में दक्षिणायाम में देहि क्योंकि प्रत्येक मानव देखो, दक्षिणा देना चाहता है। विचार आत रहता है जब कौशल्या जी ने, कौशल्या जी ने याग सम्पन्न होने के पश्चात यह कहा कि हे आचार्य मैं आपको दक्षिणा प्रदान करना चाहती हूँ और वेद मन्त्रों का

उदगीत गाते हुए कहा दक्षिणाम् भवितम् ब्रह्रे व्रतम दिव्यां गतम ब्रह्मा वाचःसुति तो माता कौशल्या ने जब जिन वेदमन्त्रो का उदगीत गाया ओर यह कहा कि हे आचार्य हे आचार ब्रह्मे हे पूज्यपाद मानो जब मैं बाल्यकाल में अध्ययन करती थी तो उस समय मेरे पूज्यपाद इस प्रकार के वेदमन्त्रों का उदगीत गाते रहे हैं ओर उन्हीं उदगीतों को ले करके मैं आपके समीप विद्यमान हूँ उदगीताम् उदगीतम ब्रह्रे उदगम ब्रह्मा वर्णसुते ओर मैं उन्ही उदगीतों को ले करके मेरी इच्छा यह है कि मैं आचार्य को दक्षिणा प्रदान करूं, प्रभु क्या चाहते हैं? उन्होंने कहा दिव्याम्! मानो देखो, जो तुम्हारा हृदय उदगीत गाता हो वही दक्षिणा प्रदान करो। उन्होंने कहा कहो मेरा हृदय क्या चाहता है क्या नही चाहता परन्तु देखो, यह हमारा स्वयं का विषय आप अपने उदगार उदगीत गाईये। तब आचार्यों ने कहा कि मैं हम उदगीत क्या देखे दक्षिणा तो ऋत्याम भूतप प्रह्रा यज्ञमान में जो त्रुटियां होती हैं, यज्ञमान में जो मानो देखे विचारधारा अशुद्ध होती है, मानो देखो, उन त्रुटियों को आचार्य को वह प्रदान करता है वह उसकी सर्वत्र दक्षिणा होती है। तो मानो देखो, तुम आप क्या दक्षिणा चाहते है? तो मंगलम ब्रह्मा व्रतम मेरे प्यारे! तो उन्होंने कहा तो भगवन मुझे मेरे में इस प्रकार की तो कोई त्रुटि नही परन्तु कोई अपना उदगार प्रगट कीजिए। उन्होंने देखो, शृंगी जी ने कहा क्या हे देवी! मानो देखो, इच्छा यह है कि तुम्हारे गर्भ से ऐसी सन्तान का जन्म हो जिससे वह ब्रह्मवेत्ता भी हो ओर ब्रह्मनिष्ठ भी हो ओर मानो देखो, उसकी प्रतिभा चंहु ओर रमण करने वाली हो, उनका संकल्पमयी जीवन हो मेरे प्यारे! ऐश्वर्य में जीवन न हो उस समय माता ने जब यह कहा मंगलम ब्रहे, जब माता ने यह शब्द श्रवण किये तो अपने में मौन हो गयी, उसने कहा आचार्य मैंने यह दक्षिणा में प्रदान कर दिया।

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह काल तो स्मरण आता रहा है तब माता ने बेटा! वही दक्षिणा प्रदान की। उन्होंने तपस्या की ओर राष्ट्रीय अन्न को ग्रहण नही किया क्योंकि मन की जो उत्पति होती है वह अन्न के द्वारा होती है ओर अन्न जितना पवित्र होता है उतना ही मानो देखो, बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा ओर प्रज्ञावी यह सर्वत्र बुद्धियों का निर्माण होता रहता है ओर वह मुनिवरों दउेखो जय बन जाता है तो इसीलिए मानम् ब्रह्मा देखो, उस अनन को उन्होंने पान करना प्रारम्भ किया। हे माता तू वास्तव में देखो, राम को जन्म देगी तो तुझे कौशल्या जैसा तप करना बहुत अनिवार्य होगा अन्यथा देखो, तेरे गर्भ से सन्तानों का जन्म होता रहेगा परन्तु वह पुनरूक्ति मानव पुनरूक्ति जीवन में रहेगी तो यह सदैव तव ओर आपतियों का एक समूह बनके रहेगी। तो विचार आता रहता है कि माता तपस्वी होनी चाहिए तो बेटा! देखो, उस समय अंगिरस ने सभा में कहा था क्या यह राम का जीवन तो बखान करने की आवश्यकता नही है इनके उदगीत गाने की कोई आवश्यकता नही क्योंकि यह ऋषियों के तप ओर अन्नाद भूतम ब्रह्मे मानो देखो, उनका तप ऋषियों जैसा रहा है माता का जीवन ऐसा रहा है तो इसीलिए देखो, इनको इनका राष्ट्र इनका जो अपना अनुशासन है वह देखो, अपने में अद्वितीय कहलाएगा। यह उच्चारण करके मेरे प्यारे! देखो, अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महर्षि शृंगी जी की अमृत वर्षा

मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् प्रारम्भ हो रहा था तो उस समय देखो, महर्षि शृंगी ने कहा अमृतम ब्रह्मा वर्णसुते क्या यह तो वह राम तो अमृतमयी है मानो देखो, यह बाल्यकाल से ले करके ओर यह मानो देखो, अब तक इनका जीवन बड़ा महान रहा है पवित्रता के यह मानो देखो, पवित्रता की एक अवृत्ति एक आभा बन करके रही है तो हे राम हे मंगलम ब्रहे, हे सभासदों मानो देखो, राम का जीवन तो ऋषि-मुनियों का जीवन है, ऋषि-मुनियों की धरोहर है ओर यह धरोहर मानो ऋषियों तक सीमित नही देवताओं तक सीमित रहेगी। यह

उच्चारण करके बेटा! यह भी अपने में शान्त अपने कक्ष में विद्यमान हो गये।

महर्षि वैश्म्पायन के उदगार

जब मुनिवरों देखो, यह वाक् सब ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय प्रारम्भ रहा तो वैश्म्पायन अपने मे उपस्थित हुए और वैश्म्पायन ने कहा क्या हमारा अन्तर्हृदय बड़ा प्रसन्न है और प्रसन्न इसीलिए है क्योंकि राष्ट्र का जो निर्माण वास्तव में जो राजा होते हैं पवित्र उन्हें शासन की आवश्यकता नही होती है वह तो स्वयं अपने पर अनुशासित करते हैं तो समाज अनुशासित हो जाता है। मेरे प्यारे! यह महर्षि वैश्म्पायन ने अपने विचार दिये यदि हम स्वयं अनुशासन करेंगें, हमारा जीवन अनुशासित रहेगा समाज स्वतः ही अनुशासित बन जाएंगा और हमारी इन्द्रियों में से तरंगों का जन्म होता रहेगा तो तरंगों से ही जीवन का निर्माण होता है, तरंगों से मनस्तव आता है देखो, तरंगों से बुद्धित्व आता है इसीलिए तरंगेंवादी बन करके उन तरंगों को धारण करके अपने में महानता का दर्शन करना है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके उन्होंने अपना उदगीत गा करके वह भी अपने आसन पर शान्त हो गये।

महाराजा शिव द्वारा अनुमोदन

तो मुनिवरों देखो, इतने में ब्राह्मण विभण्डासकाम् भूतम ब्रह्मे महाराजा अंगरस मुनि महाराज के विचार सर्वत्र के विचारों को श्रवण करने के पश्चात महाराजा शिव उपस्थित हुए और महाराजा शिव ने कहा क्या देखो, हम सभा में विद्यमान हैं जहाँ ऋषि-मुनि, ब्रह्मवेत्ता हैं, मेरी पुत्रियां, माताएं सब ब्रह्मवेत्ता हैं ब्रह्म का बखान करके राष्ट्र की चर्चा होती रही है। मुझे मानो देखो, सबका अनुमोदन करना है क्यों यह जो अयोध्या है इसका निर्माण सबसे पूर्व देखो, अक्षवा मनु ने किया था और मानो देखो, इसमें बहुत से राजा होते चले आये हैं और राजाओं में मानो देखो, साढ़े सात हजार वंशलज मानो देखो, वंश यहाँ मनु जी के इस अयोध्या में राज किया। जब देखो, अयोध्या का निर्माण हुआ तो यह अयोध्या समुद्र के तट पर थी, समुद्र के तट पर यह अयोध्या का वास किया था। उन्होंने क्योंकि भगवान मनु ने जीवन में मानो जीवन को अध्ययन करने से यह प्रतीत हुआ वह कितना अहिंसा परामेधर्म थे। महाराजा मुन जब देखो, वह समुद्र में स्नान करने जाते तो समुद्रों में स्नान करके और संध्या और तर्पण किया करते थे। एक समय तर्पण के लिए जब उन्होंने कमण्डल में जल लिया तो जल में मुनिवरों देखो, एक मछली आ गई। जब मछली आ गई तो कमण्डल के जल से उस मछली ने अमृतम देखो, मछली समुद्र में समर्पित करने लगे। देखो, तब मछली अपने वाक् अपनी वेदना में परिपूर्ण हो करके कहती हे हे राजन! हे मनु राज्य प्रमाणमं ब्रह्मे आप तो राजा बनने वाले हैं पभु मैं आपकी शरण में आई हूँ क्योंकि राजाओं की शरण में आपात काल वाला जाता है हे प्रभु समुद्रों का यह नियम है समुद्रों में जितनी सृष्टि है यह जितने भी प्राणी मात्र है एक मछली देखो, सूक्ष्म मछलियों को आहार करती है और वह प्रबल बन जाती है तो मैं भगवन यह चाहती हूँ कि मैं प्रबल मछलियों का आहार बनना नही चाहती मैं आपकी शरण में आई हूँ मेरी रक्षा करो। तो भगवान मनु ने बेटा! उसके उन शब्दों को ग्रहण किया और ग्रहण करके कुछ समय देखो, वह मौन रहे और वह मौन रह करके कमण्डलू में मछली का स्वागत किया। मेरे प्यारे! देखो, मछली उस कमण्डल में पनपती रही। वह कुछ समय के पश्चात उन्होंने मेरे प्यारे! एक गद्देले का निर्माण किया गद्देला अमृते देखो, उसमें मछली पनपती रही। जब वह मछली पनपती रही तो कालेत्वर ऋषि और मनु जी का दोनों का विचार-विनिमय प्रारम्भ होता एक समय मछली ने कहा हे वेदनित हो करके हे मनु तुम एक नौका का निर्माण करो तो नौका में तुम अपना वास करो क्यांकि कुछ समय के पश्चात देखो, जल पलावन आयेगा। तो मेरे प्यारे!

मनु जी ने एक नौका का निर्माण किया और निर्माण करने के पश्चात उसमें उनका वास होने लगा। कालेत्वर ऋषि और भगवान मनु मानो देखो, उसमें विद्यमान रहते और वह यह कहते कि राष्ट्र कैसे ऊँचा बनेगा। तो उन्होंने कहा कि राजा के राष्ट्र में सबसे प्रथम शिक्षा प्रणाली पवित्र होनी चाहिए और शिक्षा प्रणाली में मानो ब्रह्मचारियों का निर्माण किया जाएं, और निर्माण करके उन्हें शिक्षित बनाया जाएं, उनके हृदयों में मानो देखो, पच्चीस वर्ष तक की आयु तक कोई भी ऐसा व्यवधान, कोई भी ऐसा श्रोत्रों में शब्द क्रियाकलाप नही होना चाहिए जिनसे उनका हृदय मानो कुण्ठित हो जाएं, हृदय में किसी प्रकार की अशुद्ध वेदना प्रवेश हो जाएं तो मानो देखो, इस प्रकार भगवान मनु ने अपना वाक् उच्चारण किया कालेत्वर ऋषि ने उन्होंने और द्वितीय राष्ट्र में यह है कि जो शिक्षा प्रणाली है वह जब ऊँची बनती है जब उसमें वानप्रस्थी और वानप्रस्थियों जिनकी देखो, संसार से जिनका जीवन उपरामता को प्राप्त हो गया वह शिक्षक होने चाहिए। जिससे उनका ब्रह्मचर्य मानो देखो, उनकी संसार में तृप्ति हो गई है और वह तृप्ति देखो, सन्तानों से तृप्ति हो गई है और वह देखो, जब शिक्षक होंगें तो वह तृप्त हो करके मुनिवरों देखो, अपने राष्ट्र को ऊँचा बनायेंगें। मेरे प्यारे! देखो, शिक्षा प्रणाली के लिए कालेत्वर ऋषि और भगवान मनु ने अपना मन्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि ऐसा चंचल देखो, विद्यालय में देखो, चंचलता नही होनी चाहिए। देखो, ब्रह्मचारिणी, ब्रह्मचारियों का हृदय चंचलवत बन करे और उनमें अशुद्धियों का प्रसार हो जाएं तो ऐसा भगवान मनु ने अपने लेखनियां बद्ध करते हुए अपना विचार वह नौका में निर्माण करते रहते विचारो का उन्होंने कहा उसके पश्चात राजा को मानो जो अध्ययन किया अपने उसने आचार्यों के समीप उन्हीं आचार्यों के समीप अध्ययन की प्रणाली है उसे अपने जीवन में धारण करने वाले हो, क्रियात्मक में मानो देखो, राष्ट्र ऊँचा बन जाएंगा। इस प्रकार कला कौशल स्वयं राजा करने वाले हो, राष्ट्र के प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला राजा नही होना चाहिए, संग्रह करने वाला जो राजा है वह राष्ट्र को अधोगति को पंहुचा देता है। अपने को अधोगति में और देखो, रक्तभरी क्रान्तियों का संचार हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, भगवान मनु ने इस प्रकार और कालेत्वर ऋषि ने अपने विचार और अपना व्यक्तव्य दिया।

तो मेरे प्यारे! देखो, जो इस प्रकार प्रत्येक मानव अपने कर्तव्य का पालन करेगा तो वहाँ शासक की आवश्यकता नही रहती है वहाँ देखो, केवल नियमित जीवन हो जाता है प्रत्येक प्राणी का तो बेटा! देखो, राष्ट्र और शासक वहाँ होता है जहाँ प्रजा कर्तव्य से विहिन होने लगती है, उग्रवाद बन जाता है कर्तव्यवाद से मानो देखो, वृत्ति बन जाते हैं और जब राजा स्वार्थी हो जाता है, तो वह स्वतः अपने राष्ट्र में उग्रवाद चाहता है औरयदि वह देखो, कर्तव्य कापालन करें तो उग्रवाद की उत्पति नही होगी राजा के राष्ट्र में। तो मेरे प्यारे! देखो, वह वाक् उन्हांने उदगीत रूप में गाया। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों देखो, यह वाक् उन्होंने महाराजा शिव ने यह राम की सभा में अपने वाक् उच्चारण किऐ और उन्होंने कहा कि भगवान मनु और कालेत्वर ऋषि नौका में अपना अमृतम देखे वह जब मछली प्रबल हो गई। मछली के प्रबल होने से मछली ने भगवान से कहा प्रभु आपको मैं क्या अपने उदगार प्रगट कर सकती हूँ क्या मैं अपने समुद्र को जा रही हूँ, राष्ट्र को जा रही हूँ प्रभु मुझे आज्ञा दीजिए अब मैं ऐसी बन गई हूँ कि बड़ी मछली पान नहीं करेगी मैं स्वतः प्रबल हो गई हूँ मेरे प्यारे! देखो, वह नौका अमृतम देखो, नौका में रहना उपदेश्ज्ञ दे गई देखो, चतुदर्शी के दिवस अमुक समय में मानो एक जल प्लावन आयेगा और मेरा हिमालय से मिलान होगा और मेरे मानो देखो, ऊर्ध्वा विभाग में एक सिंग है और उससे नौका को जकड़ देना। मेरे प्यारे! देखो, भगवान मनु ने इन वाक्यों को स्वीकार कर लिया परन्तु मछली समुद्र में चली गई बेटा! वह समय आया, जल प्लावन आया जब जल प्लावन आया तो बेटा! देखो,

समुद्र में नौका देखो, हिमालय के आँगन को वह जाने लगी। मेरे प्यारे! देखो, दोनों का कालेत्वर ऋषि भगवान मनु दोनों विद्यमान हैं मेरे प्यारे! देखो, हिमतालय से उसका मिलान हुआ तो वह मछली वहाँ विद्यमान थी तो मुनिवरों देखो, नौका को जकड़ दिया नौका को जकड़ देने के पश्चात जड़वृत्ति जड़म ब्रह्मा वह जल प्लावन बेटा! कुछ समय शान्त होने लगा नौका भी रमण करने लगी मछली भी अपने समुद्र की तरंगों के साथ में गमन करने लगी। वह नौका देखो, अपने निश्चित स्थान पर नौका स्थिर हो गई।

तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इसीलिए इन वाक्यों को उच्चारण कर रहा हूँ क्या भगवान मनु ने उस नौका को अमृत करते मानो अयोध्या का निर्माण किया और अयोध्या का जब तो तब अष्ट चक्रा नौ द्वारा वाली पुरी का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो, जैसे मानव शरीर परमपिता परमात्मा ने जब निर्माण किया, सृजन किया तो इसमें आठ चक्र हैं नौ द्वार हैं मेरे पुत्रों! देखो, ऐसी यह शरीर रूपी अयोध्या पुरी है ऐसे ही उन्होंने अयोध्या नगरी का निर्माण किया बेटा! उसमें आठ चक्र है आठ चक्र और नौ द्वार थे जहाँ भगवान मनु ने बेटा! अपनी राष्ट्रीय पद्धति का निर्माण किया। मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मवर्णा विचार-विनिमय यह मुनिवरों देखो, राजा में इतना अहिंसा परमोधर्म होना चाहिए क्या एक मछली से ले करके देखो, प्राणी मानवत्व की रक्षा होनी चाहिए यदि राष्ट्र को तुम ऊँचा बनाना चाहते हो या इसको महानता में दृष्टिपात करना चाहते हो तो मेरे प्यारे! देखो, वह राष्ट्र पवित्र होता है जिस राजा के राष्ट्र में मानो स्वयं अपने में जय हो करे अपने में अहिंसामयी विचार बना करके बेटज्ञ मछली से ले करके मानवत्व की रक्षा होनी चाहिए। अरे राष्ट्र तो वही ऊर्ध्वा में गमन करने वाला है। मानो देखे गऊम ब्रहे ब्रह्म राजाम् देह मेरे प्यारे! देखो, राजा ने अयोध्या का निर्माण किया और उस अयोध्या में भगवान मनु के देखो, वंशजों ने बहुत समय तक मानो साढ़े सात हजार वंशजों ने बेटा! राज्य का पालन किया क्योंकि राजा से राष्ट्र में जब अहिंसा परामेधर्म होता है बेटा! उसमें नम्रता होती ै, राजा इन्द्रियों पर जय होता है उस राजा की कई हजार प्रणालियां राज करती रहती है। उनको कोई दूरिता को दृष्टिपात करने वाला नही होता। वह स्वयं न तो उग्रवादी बनते हैं न तो उग्रवादी समाज में कोई प्राणी होता है। जब अपने-अपने कर्तव्यवाद में निहित होते हैं और कर्तव्यवाद में वह निहित रहने वाला प्राणीत्व है मुनिवरों देखो, वही समाज को ऊँचा बनाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, वह महाराजा शिव ने देखो, अयोध्या में यह वाक् अपना उदगीत रूप में गाया और उन्होंने कहा यह वह अयोध्या है जिसका निर्माण मानो अद्वा मनु ने किया और मनु ब्रह्मणे व्रतम ब्रह्रे सूर्य से मर्यदेवतम सूर्य के पुत्र कहलाते थे मेरे प्यारे! देखो, अमृतम ब्रह्मण वर्णसुते देवताम् आभ्याम देवो ब्रह्मा तो विचार आता रहता है बेटा! अपने जीवन को ऊँचा बनाना है अपने जीवन और राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाना है तो बेटा! देखो, उसे अहिंसा में, अहिंसा परमोधर्म में रत्त होना होगा और वह अपने को अपने में दृष्टिपात करनेवाला समाज अपने पवित्रता को धारण करने लगता है तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ यह मानो देखो, सभापति का अन्तिम एक विचार है और उन्होंने यह विचार दिया कि देखो, राम उसी प्रकार अपनी अयोध्या को पुनः से सजातीय बनायेंगें और सजातीय बनाने का अभिप्राय केवल यही है कि राम जैसे सौभाग्य से राजा का जन्म होता है और अयोध्या को सजातीय बनाना यह मानो देखो, हम सब प्राणियों का सौभाग्य है, यह चक्रवृत्ति राजा है। जो राजा बनेंगें जो सर्वत्र पृथ्वी पर राष्ट्र में देखो, अपनी प्रतिभा का जन्म होगा तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उन्होंने उदगीत रूप में गाया और यह कहा कि अयोध्या अपने में जहाँ देखो, राजा सगर जैसे राजा महाराजा दिलीप और रघु जैसे जिन महाराजा रघु ने अपने जीवन में देखो,

सर्वत्र याग करते रहते थे, जितना द्रव्य है सबका याग करते रहे हैं महाराजा दिलीप और रघु जैसे जिन महाराजा रघु ने अपने जीवन में देखो, में देखो, सर्वत्र याग करते रहते थे, जितना द्रव्य है सबका याग करते रहे हैं महाराजा दिलीप भी बारह वर्ष तक देखो, कामधेनु देवत्वाम गऊ के पीछे अपने जीवन को व्यतीत कर रहे हैं तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! देखो, क्या राष्ट्र जब ऊँचा होता है जब राजा स्वयं तपस्वी होता है और अहिंसा परमोधर्मी होता है। भगवान मनु की देखो, विचारधारा क्या-क्या मछली से ले करके और मानवतव की रक्षा करते रहे हैं उन्होंने अयोध्या का निर्माण किया।

तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल आज यह क्या मुनिवरों देखो, राष्ट्रम् ब्रह्मा वर्णसुते राष्ट्र को देखो, वर्णा है, अपने में धारण करना है मुनिवरों देखो, जैसे कुबेर जैसे राजा भी आ करके नमः करते हो तो मुनिवरों देखो, जब यह समाज पवित्र होता है तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, प्रत्येक मानव देखो, अपने राष्ट्र को, अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहता है तो वह ब्रह्मवेत्ता बनने से पाण्डितव से ऊँचा बनता है इसीलिए पाण्डितव होना चाहिए हमारे अन्तर्हृदयों में और वह तपस्वी बन करके अपने जीवन को अनुष्ठानित करता रहे और अनुष्ठान करते हुए सागर से पार होने का प्रयास करे। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा।

महर्षि वशिष्ठ और महर्षि विश्वामित्र द्वारा भगवान राम का राज्यभिषेक

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या मुनिवरों देखो, महाराजा शिव ने अपना अन्तिम देखो, यह सभात्व का अपना उपदेश दे करके देखो, अपनी उपदेश मंजरी समाप्त करके मुनिवरों वशिष्ठ से कहा तुम राज्यभिषेक करो। तो राज्यभिषेक किया बेटा! महाराजा विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ ने और देखो, क्योंकि दोनों ही ब्रह्मवेत्ता थे ब्रह्मवेत्ता से निर्वाचन होना चाहिए राजा का, राजा का निर्वाचन जब ब्रह्मवेत्ता करते हैं तो जब राजा सदैव ऊँचा बनता है और राजा देखो, जैसा मुझे इस समय मेरे पुत्र महानन्द जी ने वर्णन कराया कि देखो, आधुनिक काल में राजा का निर्वाचन देखो, साधारण समाज करती है, अपठित समाज करती है तो राजा अपठित समाज को सुखद नही बना सकेगा। विचार-विनिमय क्या राजा का निर्वाचन देखो, ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा होना चाहिए। उन्होंने निर्वाचन किया और मुनिवरों देखो, अपने में विचार-विनिमय करते कि हम संरक्षक हैं, देखो, राष्ट्र में त्रुटियां नही होनी चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, उस समय राज्यभिषेक किया, राम ने स्वीकार कर लिया सहर्ष ऋषियों के चरणों की वन्दना करते, महाराजा शिव के चरणों की भी वन्दना करते हुए मुनिवरों देखो, अपने-अपने कक्ष में और वह सभा सब समाप्त हो गई।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों देखो, हमें अपने जीवन में विचार लेना चाहिए हमारा जीवन मानो जय होना चाहिए और इन्द्रियों को अमृतव को प्राप्त करना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाइन होगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गतं आप्यां देवाः ओ३म् यश्शचाम् गायन्त्वा रथं आ पाः रेवाः गायन्त्वा ओ३म् रथं माहं प्राची गतं मां रेवाः अच्छा भगवन दिनांका-17 01 1992 मकन पुर गाजियाबाद

५ गृह निर्माण 20 01 1992

जीते रहो, देखो, मुनिवरों आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे यह भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा गृह स्वामी है और यह जो ब्रह्माण्ड है यह मानो देखो, उसक अवृत्व है और वह उसी में मानो वास करता रहता है इसीलिए हम परमपिता परमात्मा का गृह स्वामी कहते हैं। हमारे यहाँ प्रायः जब इन लोक-लोकान्तरों का वर्णन किया जाता है और नाना प्रभु की प्रतिभा का वर्णन आता रहता है तो प्रायः ऐसा वेदमन्त्र हमें प्रेरणा देता रहता है कि जितने ब्रह्माण्ड में ग्रह है, परमात्मा के जगत में जितने भी यह पिण्डाकार ग्रहों का निर्माण किया है, उन सर्वत्र प्राणियों में सर्वत्र ग्रहों में कोई न कोई मानो गृह स्वामी वास करता है परमपिता परमात्मा ने दो प्रकार के ग्रहों का निर्माण किया एक तो यह जो ब्रह्माण्ड है यह ग्रहों का समूह कहलाया गया है गृह पति कहा है और इस मानव शरीर रूपी जब गृह का निर्माण किया तो इसमें जो आत्मा है, वह गृह स्वामी है परन्तु मानव शरीर में आ करके उसमें प्रच महाभूतों के इन शरीर को धारण किया और धारण करने के पश्चात उसमें भी एक पंच महाभूतों के गृह का निर्माण किया।

गृह की व्याख्या

मुझे आज यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है क्या इन गृहों के सम्बन्ध में विचार-विनिमय दिया जाएं क्यांकि गृह और गृह स्वामी और गृह स्वामिनी, सर्वत्र मानो इस गृह में वास करते हैं। क्योंकि आत्मा का तो गृह केवल पंच महाभूतों का निर्मित है, परन्तु जब वह इस संसार में भौतिक जगत में आ करके भौतिकता के गृहों का निर्माण करते हैं, तो उस समय उनका गृह स्वामी और गृह स्वामिनी के नामों से मानो उसक वर्णन किया जाता है प्रायः वास्तव में तो यह जो मानव का पंच महाभौतिक जो पिण्ड है इसमें जो आत्म वास करता है, वह स्त्रीलिंग है, और और न पुल्लिंग कहलाता है वह एक रस रहने वाला आत्मा है चेतना है और वह पंच महाभूतों को धारण किए हुए मानो देखो, पिण्डाकार में निहित रहता है, जैसे परमपिता परमात्मा इस पंच महाभौतिक के प्रायः ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रहा है और यह नाना प्रकार के जो लोक-लोकान्तर है किसी लो में अग्नि प्रधान है तो किसी ग्रह में आपो जल प्रधान है और किसी मण्डल में वायु प्रधान मानो पृथ्वी प्रधान माना गया है तो तीन प्रकार के परमाणुओं से, तीन प्रकार की आभाओं से मानो देखो, गृहों का निर्माण होता है हमारे यहाँ परमाणु तो तीन ही माने गये हैं गुरुतव, तरलतव और तेजोमयी मानो देखो, वायु इनको परमाणुओं को गमन कराती है और अमृतम ब्रह्मा अन्तरिक्ष में ये भ्रमण करते है। तो विचार-विनिमय क्या देखो, मुनिवरों जितने भी यह लोक-लोकान्तर है मानो जैसे चन्द्र मण्डल है अथवा मंगल है और भी नाना मण्डल जैसे बृहस्पति और अरूणधती और देखो, वशिष्ठ का वर्णन आता रहा है परन्तु ध्रुव मण्डल है और ध्रुव मण्डल से ऊर्ध्वागति भागों में आरूणी और आरूणी और अरूणाती आरूणी और मूल नक्षत्रों का वास रहता है और मूल नक्षत्रों के निचले भाग में पुष्प् नक्षत्र और स्वाति ग्रह का भी वास रहता है। मानो इसी प्रकार यह मण्डलों का एक दूसरे का तारतम्य बना हुआ है जैसे माला में एक सूत्र में मनके पिरोने से माला बन जाती है इसी प्रकार लोक-लोकान्तरों की एक माला बन गई है और वह माला मानो देखो, एक दूसरे में पिरोई हुई है तो इसीलिए वह अवन्तिका के रूप में गमन करती रही है।

तो आज मैं बेटा! देखो, इस सम्बन्ध में लोक-लोकान्तरों में न जाता हुआ केवल यह कि यह ग्रह कहलातते हैं जैसे हमारे यहाँ देखे मंगल ग्रह है इसी प्रकार बुध भी ग्रह माना गया है। शनि भी ग्रह माना गया है और मुनिवरों देखो, और भी नाना जैसे शुक्र ग्रह का वर्णन आता है तो हमारे यहाँ देखो, इन लोक-लोकान्तरों का जो एक समूह बन गया है इसमें सब प्राणी वास करते रहते हैं जब मैं बेटा! इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करता हूँ तो विचार आता है कि जब मुनिवरों देखो, सूक्ष्म शरीर वाला आत्म जब यह स्थूल शरीर को त्यागता रहता है तो यह कुछ ग्रहों में भ्रमण करने चला जाता है माना देखो, यह कुछ वायुमण्डल इस प्रकार के हैं जिन वायुण्डलों में यह आत्मा अपने सूक्ष्म शरीर द्वारा वास करता रहता है अथवा भ्रमण करता है तो आज बेटा! इस सम्बन्ध में चर्चाएं नही, केवल यह क्या यह ग्रह हैं, ग्रहों में प्राणी वास करते हैं। जैसे मंगल मण्डल है यह जो मंगल गृह है, इसमें जैसा यह पृथ्वी मण्डल का जीवन है या पृथ्वी मण्डल पर जैसे प्राणी वास करता है, इसी प्रकार मंगल और बुध दोनों में वशिष्ठ अरूणधती इन मण्डलों में इसी प्रकार पार्थिव तत्त्व वाले प्राणी वास करते हैं, तो मानो देखो, वह गृह कहा जाता है ग्रह का अभिप्रायः यह है जहाँ मानव, जहाँ प्राणी गृह बना करके अपना वास करता है। तो मेरे प्योर देखो, मैं आज गृहों के सम्बन्ध में वेदमन्त्र के जो किस प्रकार के संकेत अथवा प्रेरणा मुझे प्राप्त हो रही थी, जहाँ प्रायः ग्रहों का वर्णन आता रहा है। मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहा है ऋषि-मुनियों का प्रायः यातायात भी बना रहा है और वह पृथ्वी मण्डल और मंगल मण्डल के दोनों का यातायात और देखो, वह अरूणधती और वशिष्ठ मण्डल का इनका सबाक यातायात एक कृतियों में विद्यमान रहा है।

महाराजा अर्जुन का मंगल ग्रह में भ्रमण

तो मुनिवरों देखो, जहाँ पार्थिव तत्त्व वाले प्राणी रहते हैं वहाँ विज्ञान भी है, वहाँ अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या भी मानो निर्माणित की जाती है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब महाराजा अर्जुन इन्द्र के द्वार पर पंहुचे तो इन्द्र के द्वारा इन्द्र के संरक्षणता में तपस्या की और तपस्या करने के पश्चात अस्त्र-शस्त्रों की विद्या का उन्होंने मानो शिक्षण किया और वह शिक्षा को प्राप्त करते रहे। उसके पश्चात वह अपने यन्त्रों को निर्माण करके मंगल मण्डल में भी प्रायः दे वह भ्रमण करने के लिए और अपने अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या पान करने के लिए भी मानो देखो, मंगल में वह पंहुचे। तो आज मैं बेटा! देखो, इस सम्बन्ध में चर्चा नही केवल क्योंकि कई काह तक मुनिवरों देखो, मंगल मण्डल में उनका वास रहा, क्योंकि मंगल मण्डल का जो प्राणी है अथवा वहाँ का जो वायुमण्डल है, वह पार्थिव तत्त्वों से मानो देखो, इसके कुछ समकालीन माना गया है, तो इसी प्रकार जैसे बुध मण्डल का भी और अरूणधती और देखो, वशिष्ठ मण्डल का भी इसी प्रकार वायुमण्डल हमारे यहाँ स्वीकार किया गया है। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा शिव और मुनिवरों देखो, उसके पूर्व काल में गणेश जी और महाराजा हनुमान जी दोनों बड़ी मित्रता मानो देखो, विज्ञान की मित्रता इन दोनों की थी, वह समुद्र के तट पर विद्यमान हो करके अन्वेषण करते रहे।

आत्म का गृह

तो आज मैं बेटा! तुम्हें विज्ञान के युग में नही जा रहा हूँ। केवल यह कि मुनिवरों देखो, आज मैं और ऊर्ध्वा में तुम्हें गमन कराना है केवल यह कि हमारा गृह प्रविशाम ब्रह्मा कृति मैं वेद का मन्त्र आता है हे मानव! तू गृह में प्रवेश हो जा और कौन से गृह में प्रवेश हो मानो सबसे प्रथम तू जो परमात्म ने तेरे शरीर रूपी गृह का निर्माण किया है, इस गृह में आत्मा वास करता है तू इसमें मानो प्रवेश कर जब आत्मा इसमें प्रवेशिका को

प्राप्त करता है, तो मेरे प्यारे! देखो, यह ये चेतनित बना रहता है और गृह हैं इसमें पंच महा मानो देखो, भूत जो परमाणुओं का एक दूसरे का समूह बना रहता है जैसे मुनिवरों देखो, हमारे यहाँ पार्थिव जब इसमें तरलतव और तेजोमयी परमाणुओं का मिलान होता है तो उसके पश्चात गुरुतव परमाणु आता है तो यह शरीर का, पिण्ड का निर्माण हो जाता है और पिण्ड का निर्माण हो करके मानो देखो, इसमें पिण्ड को गति देने के लिए मुनिवरों देखो, वायु का व्यवधान होता है और वायु अपने में पांच प्रकार के रूप को धारण करता है और पांच प्रकार का रूप उसका प्राण, अपना, उदान, समान, औऱ व्यान मानो यह पंच महा एक ही वायु के पांच प्रकार के स्वरूप माने गऐ हैं तो हम प्राण शक्ति कहते हैं और वह प्राण मानो देखो, इन पंच महाभूतों में प्रवेश हो करके मुनिवरों देखो,वायु इसमें मिश्रित होती है और जब यह गमन करता है तो मानो देखो, इसको अन्तरिक्ष कहा जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार जब इसमें देखो, यह गतिवान बन गया और गति आ गई तो मानो देखो, ब्रह्मणे जानाम भूतम ब्रह्मा इसे ज्ञान भी होना चाहिए तो ज्ञान के लिए बेटा! देखो, आत्मा सूत्र बन करके क्रियाकलाप किया और सूत्र बन करके मुनिवरों इन पंच महाभूतों में प्राण में भी गृरुतव परमाणु में भी तेजोमयी और देखो, तरलतव में भी इन सबमें मिश्रित हो करके यह एक धागा बन करके सूत्र बन करे इन सब परमाणुओं को मानो देखो, एक पिण्डाकार के रूप में वर्णित किया। आत्मा इसमें विद्यमान हो करके यह ज्ञान हो गया कि देखो, प्राण परमाणुओं का आवागमन करता है इसका नाम प्राण है अपान का जितना भी फेंकने का दूरित में जितनी शक्ति है, उतना परमाणु जाता है या वृत जाता है तो मानो वह अपान है और व्यान मानो देखो, जो सबमें रमण कर रहा है और समान मुनिवरों देखो, जो सबका निरीक्षण कर रहा है और उदान मेरे प्यारे! जो उदगम ब्रह्मा उदने प्रवाहा कृतं जो चित्त के मण्डलों की भी प्रतिभा लाता है।

बेटा! मैं बड़े भयंकर वन में चला गया हूँ यह वन है एक प्रकार का मानो विचारों के वन में जाता हुआ केवल यह क्या मुनिवरों देखो, इन प्राणों में भी जो उदान प्राण है उन उदान प्राण में एक संस्कार एक चित्त नाम का स्थान माना गया है और जो मेरे प्यारे! आन्तरिक जगत में आता है और ति में जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं, उन संस्कारों, जो मानो देखो, मन, बुद्धि, चित, अहंकार के रूप में रमण करता हुआ मानो देखो,उसी में वह उदान प्रवेश हो करके मेरे प्यारे! जब इस शरीर को त्यागा जाता है यह गृह को आत्मा त्यागता है तो इस समय मुनिवरों देखो, मनं ब्रहे मन और देखो, यह उदान प्राण के साथ में मन के मण्डल में चित्त का मण्डल देखो, सूक्ष्म रूप से प्रवेश रहता है जब इस शरीर को त्यागता है तो बेटा! वह एक मण्डलात्मक बन जाता है। तो विचार आता है मुनिवरों देखो, यह एक पिण्डाकार बन करके मानो सूक्ष्मतम ब्रह्मां सूक्ष्म शरीर रूप बन जाता है तो विचार आता है मुनिवरों देखो, यह जो गृह है इसमें गृह स्वामी है और यह गृह स्वामी आत्मा है मानो देखो, यह प्राणम ब्रह्मा यह उदान, समान, प्राण और व्यान प्राणों की मुनिवरों देखो, इसमें पुट लगी हुई है तो गति करता है, चिन्तन करता है, मनन करता है, वैज्ञानिक बनता है, दार्शनिक बनता है यह नाना प्रकार की आभाओं में उड़ाप उड़ता हुआ नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की माला बना देता है।

शरीर का गृह

मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार जब इसका नृत्त होने लगता है तो उस नृतिका में प्रवेश इसी प्रकार देखो, गृह अनम् ब्रह्मा जब इस मानव शरीर में इस गृह के ऊपर विचार लिया, विचारते उन्होंने देखो, पंच महा पंच महारूपम को ले करके उन्होंने एक बाह्य इस पृथ्वी पर देखो, ए क गृह का निर्माण किया। जो यह शरीर का गृह कहलाता है। शरीर का गृह कौन सा है जहाँ शरीर में वह अपने में देखो, उसमें वास कर सकें। प्राकृतिक

जो नाना प्रकार के प्रकोप हैं, जैसे शीतलता है, उष्णता है और मुनिवरों देखो, जैसे ऋतुएं है मानो देखो, इसमें शरद ऋतु आती है ग्रीष्म आती है और वसन्त आती है और मुनिवरों इन सब ऋतुओं की रक्षार्थ के लिए गृह का निर्माण करता है और गृह अरवणाम् ब्रह्मा देवत्वाम् देवो ब्रह्म इस गृह का निर्माण करके बेटा! देखो, अपने शरीर को वासम् ब्रह्मा देखो, शरीर को आत्मा बनाता है इस मानो देखो, गृह का जो स्वामी है, इस गृह का स्वामी और स्वामिनी मानो दोनों इसमें वास करते हैं और कहते हैं प्रजामयी प्रजाम् भूतम् ब्रह्मा हे प्रभु मानो देखो, हमने इस गृह में प्रवेश किया है तो में अब प्रजा दे। तो वह प्रजामयी देव की उपासना करते रहते हैं तो विचार आता है कि मुनिवरों देखो, यह ग्रह और गृह स्वामिनी के लिए दोनों ने अपने गृह का निर्माण किया। जैसे परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी गृह का निर्माण किया है, नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों में जो गृह परिणत हो रहे हैं यह उसको संचालित करने वाला है।

इसी प्रकार आत्मा का जो शरीर है। यह गृह यह मानव का शरीर है, पंच महाभौतिक कहलाता है। इसको संचालन करता है। और यह जो पार्थिव तत्त्वों को ले करके इसमें जल है, अग्नि है, और मुनिवरों देखो, इसी में पार्थिवकता है इसी में वायु है इसी में अन्तरिक्ष है तो मुनिवरों देखो, इसका निर्माण उसी प्रकार का है, जैसे शरीर का निर्माण माता के गर्भ में हुआ और माता के गर्भ में इसी प्रकार निर्माण हुआ जैसे परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ जैसे परमपिता परमात्म ने इस संसार रूपी ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है। तो मेरे प्यारे! एक दूसरे के दृष्टिपात करते हुए एक दूसरे का निर्माण हो रहा है तो निर्माण होते यह जो गृह का पंचम भूतम ब्रह्मा यह पार्थिवतकता मेरे प्यारे! देखो, वह अमृतम ब्रह्मे कृतम अवृत्ति देवा जब गृह का स्वामी निर्माण करता है और गृह स्वामिनी का दोनों का अपना एक विचार-विनिमय होता ै हमें एक गृह का निर्माण करें तो गृह का मानो देखो, निर्माण करते। वह मेरे प्यारे! दखे उसका द्रव्य एकत्रित करता है और वह जो द्रव्य है, मानो देखो, सबसे प्रथम वह पिण्डाकार के रूप में गृह को एकत्रति करता है और पिण्डों से बहुत विशाल पिण्ड का निर्माण करता है मेरे प्यारे! गृह एक प्रकार का पिण्ड है और उस पिण्ड में मुनिवरों देखो, जो हमारे स मानव शरीर में गति है या ब्रह्माण्ड में गति है उसी प्रकार देखो, ग्रह में भी इसी प्रकार का गति वर्ण होता रहता है जैसे मानो देखो, इसमें अन्तरिक्ष भी है, इसी में आपोमयी मानो देखो, जल भी है और इसी में मानो पार्थिव तत्त्व भी माना गया है तो यह नाना प्रकार के रूपां में प्रायः हमें दृष्टिपात आ रह है तो विचार आता है वेद का वाक् कहता है गृहणाम् व्रते देवम् गृह स्वामीम् ब्रह्मा प्रजाय देवत्वाम् प्रजम ब्रह्म वह कहता है कि हे गृह स्वामी हे गृह स्वामिनी अब तुम देखो, प्रजा की उपासना करो, हे प्रभु तू हमें प्रजामयी दे जिसमें गृह में मानो प्रजामयी हूँ मैं सन्तान को नही चाहता हूँ मैं प्रजा को चाहता हूँ प्रजा उसे कहते हैं जो मानो देखो, व्यापक रूप में देखो, वह सन्तान रूप में भी मानो देखो, वह सन्तान के रूप में तो निर्मित है, परन्तु देखो, प्रजा के रूप में व्यापकवाद है।

निर्माण करने वाला प्रभु है

तो आज विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो, यह हमारे यहाँ यह सब ब्रह्माण्ड की ऊर्ध्वा में कल्पना मानी गई है जैसे परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के सृजन करने वाले ने परमपिता परमात्मा ने बेटा! सृष्टि का सृजन किया और सृजन करते हुए शरीर रूपी अमृत का मानो सृजन किया। यह माता ने भी किया है पिता ने नही किया है वह तो केवल एक निमित एक स्थान माने जाते हैं मानव द्रव्य को वनस्पतियों से वह द्रव्य आता है और वनस्पतियों का द्रव्य रेतस के रूप में माता के गर्भस्थल में प्रवेश होता है, परन्तु दख्ेो उसी को ले

करके रेतस के द्वारा परमपिता परमात्मा जो कलाकार है अथवा निर्माण करने वाला वह निर्माण करता है, बुद्धि भी बुद्धि है मेधा है, ऋतम्भरा है, और प्रज्ञावी कहलाती है मेरे प्यारे! देखो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार यह चतुष मानो देखो, सबसे प्रथम अन्तःकरण का निर्माण किया जाता है। परन्तु देखो, वह अन्तःकरण को जानने वाली निर्माता है और न मुनिवरों देखे वह पुत्र है माता नही जानती, माता जानती तो अपने पुत्र के आन्तरिक जगत के उस बुद्धि को भी जानती, मन को भी जानती, चित्त और अहंकार को भी जानती यह किस प्रकार का अहंकार इसमें हैं। परन्तु माता नही जानती। इसीलिए निर्माण करने वाला प्रभु है वह चेतन्य देव है, वह निर्माण करने वाला है तो मैं इसीलिए यह कहा करता हूँ हे ब्रह्मवर्चोसी ब्रह्मा वह जो ब्रह्म है वह वर्चस कहलाया जाता है आज हम देखो, उसी की संरक्षणता में रह करके अपने को तेजोमयी बना सकते हैं और वर्चस बना सकते हैं तो इसी प्रकार बेटा! न पिता को यह प्रतीत है जो यह कहता हे कि मैं पिता हूँ और न पिता को यह प्रतीत है कि नेत्रों का निर्माण कैसे होता है, नेत्र से तो मानो ज्योति आती है और वह एक मानो यन्त्र बना हुआ है, यन्त्र मात्र कहलाता हे तो मानो देखो, ज्योति तो कहीं और से आती है ज्योति के निचले विभाग मानो नेत्र गोलकना है, यन्त्र है यन्त्र के पिछले भाग में एक और यन्त्र है, उस यन्त्र के पिछले विभाग में एक ज्योति वर्णकेतु विद्यमान है, वह ज्योतिवान है। आत्मा नही होगी, तो शरीर का गोलकना भी है, पीला पटल भी है, उससे पिछले भाग में यन्त्र भी विद्यमान है, परन्तु देखो, वह ज्योतिवान नही हो रहा है तो इससे हमें सिद्ध हुआ क्या आत्मा ही ज्योतिवान है, आत्मा ज्योतियों का भी ज्योति है जो मेरेपुत्रों! देखो, नेत्रों को ज्योतिवान बनाता है, श्रोत्रों को श्रोत्रवान बनाता है, श्रवण करने की सता प्रदान करता है तो इसी प्रकार मुनिवरों देखो, यह आत्मा इस गृह स्वामी का वह गृह स्वामी बना हुआ है, जैसे मुनिवरों देखो, इस समाज ने अपने में देखो, जैसे गृह अनम ब्रहे गृह स्वामी ने गृह स्वामिनी ने अपना संकल्प बनाया है तो वह संकल्प कहाँ रहता है बेटा! वह संकल्प मानो वाणी में नही रहता वाणी तो माना यन्त्र है उच्चारण करने के लिए वाणी के पिछले विभाग में एक यन्त्र है, जहाँ मानो कहीं से सूचना आती है वह सूचना केन्द्र है और केन्द्र मानो देखो, सूचना भी वह प्रेरणा नही है, वह संकल्प शक्ति नही हैं उससे पिछले में मानो देखो, प्राणत्व और मनस्तव है, मानो देखो, वह भी एक वायु का और देखो, एक प्रकृति का रू है, परन्तु जो आत्मा देखो, जिसको प्रकाश्ज्ञ से संकल्प करता है, उसका नाम आत्मा माना गया है। तो बेटा! हम आत्मा के ऊपर चले जाए तो विचार आता है कि संकल्प का स्वामिनी गृह स्वामी गृह स्वामी जब गृह का निर्माण का संकल्प करते हैं तो संकल्प भी आत्मा से होता है अथवा आत्मा और गृह मानो देखो, का समूह होता है, गृह जो है अमृतम ब्रह्मा, वह जो हृदय है, हृदय ही मानो दखे आत्मा दूतक है आत्मा के प्रकाश और कृतियों को लेकर परमात्मा के हृदय से हृदय का जब समन्वय होता है बेटा! देखो, वह संकल्प पूर्णता को प्राप्त होता है संकल्प प्रमाणाव्रतम देवत्वाम् जैसे माता पिता का संकल्प माता पिता का पुत्र है पुत्रिया हैं ऐसे गृह है मानो देखो, वह पिण्डम् ब्रह्मा देखो, पिण्डोसे पिण्ड का निर्माण हो रहा है। वाह रे प्रभु तू कितना विज्ञानवेत्ता है जब तू विज्ञानवेत्ता बन करके इसका निर्माण करता है, तो पिण्डों का निर्माण करता है, मानो रेतस से रेतस का निर्माण करता है। उग्र से उग्र का निर्माण करता है।

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं प्रभु की महिमा का कहाँ तब वर्णन करूं विचार-विनिमय क्या मुनिवरों देखो, इसी प्रकार हमारा जो गृह है और गृह स्वामिनी है उसमें प्रवेश करने का यह कहा कि हे गृह स्वामी तू इसमें प्रेवश कर मानो देखो, जैसे आत्मा का जब देखो, माता के शरीर, माता के गर्भ में प्रवेशिकण भूतम् ब्रह्मा आत्मा प्रवेश करता है, इसी प्रकार जब यह भौतिक गृहों के निर्माण होते हैं, यहाँ आत्मा के सहित पंच महाभौतिक

पिराडों वाला गृह स्वामी बन करके उसमें वास करते हैं जैसे परमपिता परमात्मा स्वयं मानो देखो, गृह का निर्माण होता है, संसार रूपी जब ब्रह्मारड का, गृह का निर्माण हुआ तो वह इसको संचालन करता है, इसको मानो देखो, गतिवान बनाता है और वह पंच महाभूतों के द्वारा गतिवान है, परन्तु देखो, वह जो नियमन करने वाला है वह चेतन्य देव कहलाता है अरे नेत्र तो मानो देखो, दृष्टिपात करते हैं और वह जो नियमन करने वाला है वह चेतन्य देव कहलाता है जैसे मानो सूर्य अपनी आभा में गमन कर रहा है तो गमन तो कर रहा है परन्तु निमय में धारण करने वाला अपने अमुख समय में सूर्य का उदय होगा, अमुक समय पर रात्रि का आवरण आ करके रात्रि आ जाएगी चन्द्रमा में उसकी प्रतिभा उसमें निहित हो जाएगी, चन्द्रमा अमृत बिखरेगा, सूर्य उस समय देखो, रात्रि उसके आवरण में प्रवेश हो जाएगा। तो मानो वह कौन नियमन कर रहा है बेटा! वही तो नियमन करने वालो चेतन्य देव कहा जात है।

प्रजा की उपासना

तो आओ मेरे प्यारे आज मैं तुम्हें इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही प्रगट करने आया हूँ। विचार-विनिमय केवल यह क्या हम मुनिवरों देखो, गृह स्वामी और गृह स्वामिनी अपने गृह में मानो देखो, प्रजा की उपासना करे और कहे प्रजा में ही ब्रह्मणा प्रजा में ही देवत्वाय प्रजाम भूतम् ब्रह्मा मानो देखो, हे प्रजाओ! आओ तुम मेरे गृह में वास करो और प्रजा उसे कहते हैं जो सु क्रियाकलाप करने वाला बाल्य, बालिका के रूप में होते हैं वह एक समय प्रजा बन करके रहते हैं और वही मानो देखो, समाज का कल्याण, निर्माण और समाज में मानो देखो, अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करते रहते है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ केवल यह कि आज हम बेटा! देखो, अपने इस परमपित ापरमात्मा ने अनूठे ज्ञान को तारतम्य रूप से विचार-विनिमय करते रहे। इसका मानो स्वामी देखो, स्वामिनी दोनों देखो, एक-दूसरे के पूरक कहलाते है।

मानो न किसी कोई आत्माका पुत्र होता है न पुत्री होता है परन्तु देखो, समाजिक जैसे भौतिक पिराड यह संसारम् ब्रह्मे यह गृह का निर्माण पिराड के द्वारा होता है। इसी प्रकार पिराडों के नामो से उदगीत गाये जाते हैं मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता में प्रवेश करता रहे। एक जीवन सता को प्राप्त करता रहे और अपने में हम स्वामी अपने शरीर के स्वामी बन करके आत्म भूतम ब्रह्मा देखो, आत्मा को जानते रहे और आत्मा के द्वारा परमात्मा को जानते रहे। यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा यह क्या वेदमन्त्र काबेटा! अनूठे-अनूठे उपदेश देता है उसे हमें धारण करना है और संसार सागर से पार होने का प्रयास करना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवा आभ्याम् मनुगायन्त्वा रथम्माहम् ग्रहे वरुणा देवाः वाचनम्ः ओ३म् यज्ञश्चारविन्ना रथम आपाः।

६ ब्रह्माण्ड के ऊपर चिन्तनीय बनना है 22 01 1992

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ परम्परगतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी है, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आते रहते हैं। इसीलिए उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी माना गया है। प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में लगा हुआ है। परन्तु उसका ज्ञान और विज्ञान अनन्तमयी माना गया है। क्या अन्तिम चरण में मानव मौन हो जाता है। और सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल नाना विज्ञानवेत्ता हुए हैं। परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके, क्योंकि वह सीमा से रहित है, और उसका ज्ञान और विज्ञान सीमा में आने वाला नही हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा और उसका प्रायः अपने में वर्णन करते रहते हैं, और गम्भीर मुद्रा मं मुद्रित हो करके उस परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान वेद रूपी प्रकाश के माध्यम के उसको जानने का प्रयास कर रहे हैं।

परमपिता परमात्मा से समन्वय

तो आज का हमारा वेदमन्त्र अपने में मानो उद्गीत गा रहा है। और उस परमदेव आनन्द की महिमा का सदैव अपने में बखान कर रहा है। वेदमन्त्र कहता है प्राणम्मे पाहि, उदानम्मे पाहि, चक्षुर्म्मे पाहि, वर्ण ब्रह्वा प्रत्येक मानव अपने में विचारता रहा है कि मैं परमात्मा का चक्षु के द्वार जानना चाहता हूँ। परन्तु देखो, उसको पाने की इच्छा कर रहा है, नेत्रों को शान्त कर लेता है चक्षु, अग्नि के रूप में जब दृष्टिपात करता है। तो वह स्वतः अग्नि जो जाती है। परन्तु जब वह यह कहता रहता है। तो स्वतः अग्नि हो जाती है। परन्तु जब वह यह कहता है कि श्रोत्रम्मेपाहि वह श्रोत्रों के ऊपर चिन्तन करता हुआ परमात्मा को पाना चाहता है। तो वह भी अन्तरिक्ष और दिशाओं का रूप बन जाता है। परन्तु वह कहता है कि घ्राणम्मे पाहि, जब वह घ्राण के द्वारा पाना चाहता है। तो घ्राण स्वतः अपने में वायु का स्वरूप धारण कर लेता है। तो मेरे प्यारे! वह कहता है, चक्षु अमृतम ब्रह्मारसनं ब्रह्वे अवृतम् देवाः यह कहता है कि मैं त्वचा से पाना चाहता हूँ। तो बेटा! वह त्वचा अपने में स्पर्श का अवृत रूप धारण कर लेता है और घ्राण पृथ्वी के रूपों में रत्त हो करके अपने में शान्त हो जाता है। तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा को कैसे प्राप्त करें? क्योंकि इन्द्रियों के द्वारा तो उसे पाया नही जाता। चक्षु में जाते हैं। तो अग्नि बन जाती है, और श्रोत्रों में जाते हैं, तो वह दिशा बन जाती है, और रसना में जाते हैं। तो वह रस जल बन जाता है, आपोमयी प्रवेश हो जाता है, और यदि उसको त्वचा के द्वारा पाना चाहते हैं, तो वायु स्वरूप बन जाता है, और घ्राण के द्वारा पाना चाहते हैं, तो वह गुरूतव, पृथ्वीतव में प्रवेश हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, वेदमन्त्र कहता है कि कैसे प्राप्त करें? तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, जब मैं याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के उस विचार-विनिमय क्षेत्र में विचारकों के द्वारा प्रवेश करते हैं। जहाँ के ब्रह्मचारियों के मध्य में विद्यमान हो करके और ब्रह्मचारी आचार्य जन मानो देखो, एक पंक्ति में विद्यमान हो करके विचार-विनिमय करते रहे हैं। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का वह विद्यालय मुझे स्मरण आ रहा है। जहाँ मुनिवरों! नाना ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हैं। प्रातःकालीन आचार्य नैतिक शिक्षा में और परमपिता परमात्मा के पाने के लिए सदैव उनका कुछ न कुछ उपदेश होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब वह आचार्य

प्रातःकालीन एक समय जब वे बेटा! याग के पश्चात उन्होंने ब्रह्मचारियों को उद्गीत गाना प्रारम्भ किया और वेदमन्त्रों में आया सम्भवा प्रवेः व्रातम् तपो वर्णास्सुति देवत्वाम् लोकाः तो उन्होंने यह उद्गीत गाया कि अमृतम् मानो देखो, हम परमपिता परमात्मा की अमूल्य विद्या को अपने में धारण करना चाहते हैं। तो यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! वेद में मन्त्र आया है कि हम नेत्रों से तो विद्या को और देखो, अग्नि को जाना जाता है। उन्होंने कहा हे प्रभु! हम श्रोत्रों के द्वारा जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा यह जो श्रोत्र है, ये दिशा रूप बन जाते हैं। यह दिशाओं का और अप्रतम् देवत्वाम् यह जो हमारे यहाँ जो दिशाएं हैं। जैसे हमारे यहाँ देखो, पूर्व दिशा है, दक्षिण है, और देखो, अमृतम् पश्चिम, प्राचीदिग है, और उदीचिदिग् यह हमारे यहाँ देखो, ध्रुवा और ऊर्ध्वा में मानो देखो, यह दिशा रूप बन जाती है। जब शब्द का उद्बोधन होता है कि जब शब्द उच्चारण किया जाता है। तो यह देखो, पूर्व से दक्षिण में गमन करता है, और गमन करता हुआ मानो देखो, यह दिशाओं को भ्रमण करता हुआ मानो श्रोत्रों में प्रवेश करता रहता है। इसी प्रकार वह शब्द रूप देखो, दिशाओं के अपने स्वरूप को यह धारण कर लेता है। वह स्वतः दिशा बन जाते हैं। वह अपने में मानो देखो, उसको देखो, हम प्राप्त नही कर सकेंगें। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा सम्भव ब्रहे घ्राणम्में पाहि। हे प्रभु! हम घ्राण के द्वारा कैसे जानें? उन्होने कहा घ्राण तो देखो, यह पृथ्वी का गुण है, और पृथ्वी से मानो इन घ्राण इन्द्रियों का समन्वय रहता है। इसी की मन्द सुगन्ध को वह अपने में ग्रहण करता रहता है। इसी प्रकार देखो, त्वचा वायु से यह प्राणम्मे पाहि रूपों वर्सुतम देवाः मानो प्राणम्मे पाहि हम प्राण के द्वारा हम वायु को जानना चाहते हैं। वायु प्राण रूप बन गया है, प्राण से अपान बन गया, अपान से व्यान बन गया और व्यान से समान बन करके उदान बन गया। मेरे प्यारे! देखो, प्राणों का अप्रतम् देखो, करोड़ों प्रकार के परमाणु लाकर के यह बाह्य जगत से आन्तरिक दोनों प्रकार का यह क्रियाकलाप करता है। अपान जितनी भी ऊर्ध्वा गति है, फैंकने वाली गति है। यह सब अपान के द्वारा उत्पन्न होती रहती है और इसी प्रकार अमृतम देखो, व्यान निरक्षणां ब्रह्वा कृतं वह सर्वत्र निरक्षवादी है और समान मेरे प्यारे! देखो, सब में दृष्टिपात करने वाला समान है और उदान मेरे प्यारे! देखो, उदाने अमृतम् चित्रम् ब्रह्वा कृतो देवाः यह चित्त के मण्डल में प्रवेश हो जाते हैं। नाना प्रकार का जो हमारा आन्तरिक जगत है। इसको मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के रूप में परिणत किया जाता है। तो इसके द्वारा हम इसको जानने के लिए तत्पर होते हैं।

तप से उपलब्धियां

तो आज बेटा! मैं तुम्हें दर्शनों में विशेष चर्चा का विषय नही बनाना चाहता हूँ, विचार-विनिमय क्या जब यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! आप कहीं कहते हैं कि इस मानव वृत्तियों को याग के द्वारा जानो। आप आज यह उच्चारण करने लगे हैं। क्या यह मानो इन्द्रियों के द्वारा भी प्राप्त नही कर सकते तो प्रभु! तो यह कैसे तो ऋषि कहता है। एक वेदमन्त्र उच्चारण करता हुआ तपम् ब्रह्मे तपम् दिव्यां तपो वर्सुत प्रहा लोकाः हे ब्रह्मचारियों! मेरा वेदमन्त्र यह कहता है कि तपो वर्णनम् क्या मानव को तपना चाहिए। क्योंकि तप के पश्चात ही मानव को नाना प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धियां होती हैं, और वह सम हो जाता है, और शान्त हो करके अपने अन्तर्हृदय में अपनी आत्मा का दर्शन करता है। आत्मा में मानो चेतना को अपने में भाषता रहता है। मेरे प्यारे! जब उन्होंने यह कहा अमृतम् तो प्रभु! तपम् ब्रह्वे इसी प्रकार वेदमन्त्र के नाना उद्गीत गाए और उन्होंने कहा तपो ब्रह्मणे तपम् देवत्वाम् राजनं ब्रह्वे कृतो देवाः अपानाम् ब्रह्मे देवत्वाम् तपाः मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है कि राजा भी जब ही ऊँचा होता है। जबकि उसका राष्ट्र, और राष्ट्र में उसका राजा तपा हुआ होता है। और राजा

का जीवन तपों में क्रियात्मक हो मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रिय उसकी ज्ञान में तपी होनी चाहिए। तो इसीलिए वह राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बना सकता है। तपम् आचार्य ब्रह्मणे देवा आचार्य का भी जब आचार पवित्र होता है। आचार में सतत्व हो जाता है। तो मानो वह ब्रह्मचारियों को अपने में मानो आचार-संहिता का प्रदान करता रहता है। वह आचार्य कहलाता है। तो मानो देखो, इन्द्रियां पर जय करने वाला विजय को प्राप्त होता हुआ, मुनिवरों! देखो, तप को प्राप्त होता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा अमृतम् तपो ब्रह्मणे तपाः क्या मेरे विचार में यह आता है कि ब्रह्मचारियों तुम तपस्वी बन जाओ। और तप करो। मानो गार्हपथ्य नाम की अग्नि में तपायमान हो जाओ और गार्हपथ्य नाम की अग्नि में जो तपता है। वह ब्रह्मचारी मानो देखो, ब्रह्म में ब्रह्मणां ब्रह्मे ऋकृताः मानो देखो, ब्रह्म में प्रवेश हो जाता है। और वह ब्रह्मचारी को उपदेश दिया तो वे बोले यज्ञम् ब्रह्मा देवत्वाम् तुम याग के पश्चात मानो देखो, तप में प्रवेश कर जाओ। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा तो ब्रह्मचारी तो मौन हो गएं। परन्तु उन्होंने न्यौदा में से वेदमन्त्रों का और उद्गीत गाया और नैतिकवाद दे करके ब्रह्मचारियों से बोले कि हे ब्रह्मचारियों! मेरी इच्छा यह है कि मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरी तप करने की इच्छा बन गई है। ब्रह्मचारी बोले कि प्रभु! जैसे आप की इच्छा हो यदि आपका तप का विचार है। तो तप कीजिए।

आचार्य से विद्यालय

उन्होंने कहा तुम्हारा विद्यालय सुरक्षित रहेगा। ब्रह्मचारी बोले हे प्रभु! तो विद्यालय और भी सुरक्षित हो जाएंगें, क्योंकि विद्यालय मानो देखो, गृह को विद्यालय नही कहते हैं। विद्यालय कहते हैं, तपे हुए आचार्यों का जहाँ अनुमोदन होता है। जहाँ उनके विचार, उनकी धाराएं, मानो देखो, धारा प्रवाह हमारे अन्तःकरण को स्पर्श करती रहती हैं। तो विद्यालय मानो उन्हीं से बनता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। ब्रह्मचारियों के इस प्रकार उच्चारण करने के पश्चात उन्होंने कहा कि मैं तप करने जा रहा हूँ। मेरे पुत्रों! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने देखो, विद्यालय को त्याग दिया और त्यागने के पश्चात भयंकर वन में पंहुचे।

मन का मन से समन्वय

वन में जाने के पश्चात उन्हें कुछ वेदमन्त्रों न्यौदा में से उच्चारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तो उसमें एक वेदमन्त्र आया मनावचश्प्रहे मनावात प्रहाः मना देवत्वाम् ब्रह्मा ऋतो देव सुताः तो वह ऋषि ने एक वेदमन्त्र अपने में भयंकर वनों में स्थिर हो करके उच्चारण किया और यह कहा वेदमन्त्र कहता है कि मन का जिससे समन्वय होता है, और मन का मन से समन्वय होता है, और यदि हम उसको सन्तुष्ट किए बिना यदि हम गृह को त्याग देते हैं। तो उसके मन की जो तरंगें हैं, वह चाहे दुखद में जो चाहे वह सुखद में हो, परन्तु वही तरंगें वायुमण्डल में मिश्रित हो करके उस मानव के अन्तःकरण में प्रवेश करेगी। और उसका तप मानो खण्डित हो सकता है। उसके तप में मानो अन्धकार आ जाएगा। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने और चिन्तन किया और मनन करने के पश्चात उन्होंने विचारा मेरी तो दो पत्नियां हैं, और मैंने उन्हें सन्तुष्ट नही किया है। मैत्रयी और देखो, याग ब्रहा कात्यायनी, दो मेरी पत्नियां हैं। उन्हें मुझे सन्तुष्ट करना है। बेटा! वहाँ से उन्होंने गमन किया और गमन करने के अप्रहा अपने गृह में उन्होंने प्रवेश किया जब गृह में पंहुचे तो सबसे प्रथम कात्यायनी के गृह में पंहुचे और कात्यायनी ने अपने स्वामी को दृष्टिपात करके वह आश्चर्यचकित हो अप्रहा अव्रतम देवत्वाम् उन्होंने वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया और उद्गीत गा करके देवी ने कहा प्रभु! वेदमन्त्र यह कहता है कि आचारम् ब्रह्मा सूक्त प्रह्वा वेषाम् भूतम् ब्रह्मे अन्तर्गदाः मेरे पुत्रों! देखो, कात्यायनी ने कहा प्रभु! आप के हृदय में विद्यालय से यह

कैसी प्रेरणा जागी है। क्या आज मैं गृह में प्रवेश करूंगा। क्योंकि यह तो बड़ा हमारा कोई सुशोभनीय विचार नही हैं। आपका इसमें क्या रहस्य है? तो याज्ञवल्क्य मुनि बोले हे देवी! ऐसा नही वेदमन्त्र यह कहता है कि मना वाचम् ब्रहे मना ऋतम् देवाः तपम् ब्रह्मे वाचस्सुताः क्या हे देवी! वेदमन्त्र यह कहता है कि क्या जो मन से सम्बन्धी हैं, मानो उसे सन्तुष्ट करना है। मैं तप करने जा रहा हूँ, तो कात्यायनी बड़ी प्रसन्न हुई, और कात्यायनी ने कहा प्रभु! आपको धन्य है। मानो मेरे विचारों में कुछ और ही कृतिकता आ गई। तो भगवन्! आप धन्य हैं, आप तप करने जाईएं। उन्होंने कहा-देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ। तुम सन्तुष्ट हो। उन्होंने कहा प्रभु! यह तो हमारा सौभाग्य है। क्योंकि संसार में जिस मानो देवी का पति तपस्वी हो और ब्रह्मज्ञानी हो मानो देखो, उसका सौभाग्य है। हे प्रभु! आप तप करने के लिए जाईएं। क्योंकि इन्द्रियों का तप करना, इन्द्रियों को तपाने का नाम तप है। और इन्द्रियां जिसकी संसार में उदासीन हो जाती हैं। हे प्रभु! यह तो हमारा सौभाग्य है। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण है, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न चित्त हो करके बोले धन्य है देवी!

मेरे पुत्रों! वहाँ से उस आसन को त्याग करके वह मैत्रयी के समीप पंहुचे और मैत्रयी ने भी उसी प्रकार उनको आसन दिया और आसन दे करके कहा कहो भगवन्! आप कुशल हैं? उन्होंने कहा-देवी! मैं अपने में मंगलमय हूँ। उन्होंने कहा तो प्रभु! अमृतम् ब्रह्मे वाचसुताः आपने कहाँ को गमन किया, अपने विद्यालय से उन्होंने कहा-देवी! मैं आज प्रातःकालीन न्यौदा में वेदमन्त्रों का अध्ययन कर रहा था और अध्ययन में यह आया कि तपम् ब्रह्मे मनावाचां तपम् देव प्रवाः इन्द्रो समभ्ब्रहे ऋतो देवसुतम् हे देवी! देखो, वेदमन्त्र आता है क्या मानव को तप करना चाहिए। तो हे देवी! मैं तप करने जा रहा हूँ, क्योंकि तपस्वी बनना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि जब ही यह मानव पवित्र होता है और शरीर सार्थक बनता है। उन्होंने कहा तो प्रभु! आप तप करने जा रहे हैं। तो देव मेरा क्या बनेगा? मैं आपकी देवत्वा हूँ। उन्होंने कहा हे देवी! तुम ये क्या उच्चारण कर रही हो? मानो तुम्हें यह प्रतीत है, जब मेरा तुम्हारा किसी काल में संस्कार हुआ था आत्मा के ऊपर तो तुमने यह संसार को मिथ्या और आवरण कह करके मानो देखो, बहुत से ऋषि-मुनियों को आने देखो, वाक् से सम्भे वाक्, से शान्त कर दिए थे, तो देवी! यह अज्ञान तुम्हें कहाँ से आया? तुम्हें यह प्रतीत है, क्या संसार में पति जो होता है वह पत्नी तक सीमित होता है। परन्तु जब वह अपने लिए मानो देखो, अपने लिए अपने में स्वतः वह पति बन जाता है। तो उसका कल्याण हो जाता है। हे देव इसी प्रकार पत्नी जो है, वह पति तक सीमित रहती है। परन्तु यदि वह अपने लिए यह विचार ले कि मैं अपने में स्वतः पत्नी हूँ। मैं अपनी इन्द्रियों का स्वामी हूँ। और इन्द्रियों की मानो देखो, मुझे अधिपथ्य करना है। तो देवी! तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। जैसे एक मानव देखो, यह माता का पुत्र, माता अपने पुत्र तक सीमित रहती है। यदि वह यह विचार ले कि मैं देखो, अपने में पुत्रोहुवा प्रमणां ब्रहे, मैं परमात्मा का पुत्र हूँ और मेरा देव ही वह है, तो मानो देखो, उसका कल्याण हो जाए। हे देवी! पिता अपनी पुत्री तक सीमित रहता है, यदि वह पुत्री अमृतं पुत्री जान ले कि मैं प्रभु की पुत्री हूँ, और मेरा यह संसार एक प्रपंच है, तो मानो देखो, उसका कल्याण हो जाए। क्या वित जो होता है, यह आत्मा मानो देखो, मनस्तम् ब्रह्मे यह मन तक सीमित रहता है। हे देवी! देखो, वित, वित के लिए नही होता है, यह वित मानो देखो, तृप्ति के लिए होता है। इससे वह संसार में नाना प्रकार के क्रियाकलापों में मानो सदैव तत्पर रहे यह उसी की क्रीड़ा कृति जैसे एक मानव देखो, लोकप्रिय बनना चाहता है। तो वह लोकप्रिय अपने ही लोकप्रिय बनता है और जब वह अपने में लोकप्रिय बनता है, और जब वह अपने में लोकप्रिय बन जाता है। तो उसका व्यापक जीवन बन जाता है, वह ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है।

परन्तु देखो, जैसे एक राजा है, वह राजा देखो, अपने लिए ही राजा नही वह अपनी प्रजा के लिए है। वह अपने मनस्तव के लिए राजा है, और यह विचारता रहता है कि राजन्नम्मब्रह्मा कृतो देवाः मानो देखो, यह जो राष्ट्र है। यह मेरी आत्मा की तृप्ति के लिए है, मैं अपने लिए ही तो रजा बना हूँ। मानो देखो, प्रजा के लिए नहीं और जब वह अपने लिए राजा बन जाता है कि मैं प्रभु का सेवक हूँ, तो प्रभु! के राष्ट्र में हूँ। मानो देखो, उसका कल्याण हो जाता है। तो हे देवी! यह तुम क्या उच्चारण करने लगी हो, क्या मानम् ब्रह्मे तुम आत्मा को जानो और आत्मा तुम्हारे अन्तःकरण मानो तुम्हारे मनस्तव का स्वामीतव कहलाता है। यह मन मानो देखो, यह आत्मा, आत्मा के कारण ही तुम्हारा मन गति करता रहता है, प्राण गतिवान होते रहते हैं। और यह शरीरम् भूतम् यह आत्मा देखो, वेदज्ञ बन करके ब्रह्मत्व को प्राप्त करता रहता है। यह मानो देखो, योगेश्वर बन करके यह विष्णुतव को प्राप्त करने लगता है। तो हे देवी! तुम मानो देखो, अपने में तृप्त न हो, तुम व्यापक रूपों से तृप्ति को प्राप्त हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के इन शब्दों को पान करने के पश्चात देवी अपने में शान्त हो गई। मैत्रेये ने कहा प्रभु! आपको धन्य है, आपने यह मधु विद्या मुझे प्रदान की है। इससे मानो देखो, मेरा अन्तःकरण प्रकाश में आ गया है। मेरा अन्धाकर समाप्त हो गया है। हे देव! आपको धन्य है। मानो देखो, आप तपम् ब्रह्मे आप तपस्या करने जाईएं।

मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे देवी! जो भी मानव कर्म करता है, वह अपने लिए ही कर रहा है। मानो कोई पुत्र की तृष्णा में लगा हुआ है, कोई पुत्री की तृष्णा में लगा हुआ है, नाना कोई वित की देखो, वित में लगा हुआ है। यह चाहता है कि मैं यह वितैष्णा मेरे समीप आ जाए, मुझे वित की प्राप्ति हो जाए। तो यह क्योंकि वह अपने हृदय को तृप्त करना चाहता है। इस संसार में देखो, यह ब्राह्मण्ड की रचना करने वाले जब शरीर की रचना की तो मानो देखो, यह सूक्ष्म रूपों से ब्रह्माण्ड की रचना की है, और इसमें जो जो है। प्रकृति के आवेश तुम अपने में ब्रह्मज्ञान का चिन्तन करो ब्रह्मज्ञान में प्रवेश हो जाओ जो यह आत्मा तुम्हारे शरीर में विद्यमान चेतना है। इस चेतना में चेतना का भान करते रहो, जिस चेतना में चेतना को अपने में प्रवेश कर जाओगे। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि अमृतम् जब देवी ने यह श्रवण किया तो वह चरणों में वन्दनित हो गई और चरणों की वन्दना करते हुए बोली हे प्रभु! आपको धन्य है, आप प्रकाशक है, आप ज्ञान के मानो देखो, पुंज कहलाते हैं, आप ज्ञानम ब्रह्मे आप ज्ञानी हैं। प्रभु! आप मुझे क्षमा कीजिए। मेरे प्यारे! देवी ने कहा आप तप करने जाइये भगवन! तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने उपदेश में वह सफलता को प्राप्त हो करके बड़े हर्ष ध्वनि करने लगे और उन्होंने कहा तो देवी मैं तुम्हारा दोनों का बंटवारा किए देता हूँ। मेरे पुत्रों! मैत्रयी ने कहा प्रभु! यह बंटवारे की आपको आवश्यकता नही हैं। यह हम स्वतः अपना बंटवारा कर सकेंगें। आप तप करने जाईएं, तप ही हमारा बंटवारा है। तो मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बड़े प्रसन्न हुए, और प्रसन्न चित्त हो करके वहाँ से वह गमन करते हैं, और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, वह भयंकर वन में पंहुचे।

पवित्र अन्न

वन मे जा करके देखो, एकान्त स्थली पर वेदमन्त्रों का उद्गीत गाने लगे और वेदमन्त्रों में जो उद्गीत गाते देखो, वह वेदमन्त्र आ रहे थे, यम्ब्रह्मा प्राणम्ब्रहे कृतम् देवाः असुतम्ब्रह्मा मन्नव्रती देवत्वाम् तपाः वश्रुतम् ब्रह्मणा प्रति देवत्वाम् तपोः। वेद का ऋषि यह विचारने लगा, वेदमन्त्र यह प्रश्न कर रहा है कि तप किसे कहते हैं? तो वह वेदमन्त्र यह प्रश्न कर रहा है कि तप किसे कहते हैं? तो वह वेदमन्त्र उसका उत्तर देता है, तपं ब्रह्मे मना

अस्वत् क्या मन को पवित्र बनाने का नाम तप है। मन को पवित्र कैसे बनाया जाएं? तो बेटा! उसके ऊपर विचार करने लगा ऋषि। ऊपर विचार करते-करते वेदमन्त्रों में चले गये, गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो गये। उन्होंने बेटा! देखो, अन्न को चुना। उन्होंने कहा कि अन्न से मन का निर्माण होता है। तो उन्होंने मुनिवरों! देखो, उस अन्न को एकत्रित करना प्रारम्भ किया, जिस अन्न पर किसी का अधिकार नही था। उसे शिलस्थ अन्न कहा जाता है। उस अन्न को एकत्रित किया और उसको वह मानो जल में तपा अग्नि में जल के द्वारा तपायामान करके उसको खरल बना करके उसको पान करते थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने छह माह तक, जब पान किया तो मन पवित्र बन गया मन में पवित्रता आ गई।

शतपथ ब्राह्मण की रचना

उन्होंने बेटा! एक लेखनियां बद्ध करने लगे, एक पोथी का निर्माण करने लगे, जिस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। तो शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का उन्होंने निर्माण किया उस पोथी में प्रवेश हो गये। ब्रह्मणा व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, तप करते हुए इसी प्रकार बारह वर्ष के तप करने के पश्चात मुनिवरों! उन्होंने एक पोथी का निर्माण किया जिस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। जब शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का उन्होंने निर्माण किया तो उन्होंने तीन शब्दों को ले करके पोथी का प्रारम्भ करते हैं। वह कहते हैं कि वेदमन्त्रों में देखो, एक आख्यिका ले करके उन्होंने कहा ब्रह्मणं ब्रहे चरिष्यामि गन्धनम् देवा असुतम् तपो व्राणस्सुति देवन्तमाः तो बेटा! उन्होंने कहा तीन शब्दों को ले करके वेद के, देखो, प्रारम्भ करते हैं, और वह कहते हैं, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने पोथी का निर्माण किया। उन्होनें प्रश्न किया कि ब्रह्मणा कौन है? तो मानो एक प्रश्न ये दूसरा यह क्या ब्रह्मचारी कौन है? तीसरा प्रश्न किया कि ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? तो बेटा! यह तीन प्रश्नों को ले करके ऋषि ने पोथी का प्रारम्भ किया औषर वह पोथी का प्रारम्भ करने के पश्चात उन्होंने देखो, उसकी व्याख्या की है और व्याख्याकार कहता है कि ब्रह्म देखो, ब्राह्मण कौन है, सबसे प्रथम यह प्रश्न आया तो वह कहता है कि ब्रह्मणा देवत्वाम् ब्रह्मे मानो देखो, ब्राह्मण वह है तो ब्रह्म को जानता है, ब्रह्म को अपने में ओर अपने में ब्रह्म को जो स्वीकार करता हे उसका नाम ब्राह्मण है पुनः प्रश्न करता है कि ब्राह्मण कौन है? वह देखो, पुनः उत्तर देता है कि ब्राह्मण वह जो प्राणी मात्र में मानो देखो, मानो देखो, ब्रह्म का दर्शन करता है, तो मेरे प्यारे! अपना और अपने देव को जो दृष्टिपात करने वाला है। वह ब्राह्मण है। मुनिवरों! देखो, जब पुनः यह तृतीय प्रश्न किया कि ब्राह्मण कौन है? वह कहता है कि ब्रह्मज्ञान वेद में प्राप्त होता है, और वेद के जो मर्म को जानता है। वेदरूपी प्रकाश को जो अन्तःकरण का प्रकाश बनाता है। उसका नाम ब्राह्मण कहा जाता है। तो बेटा! यह तीन प्रकार के वाक् उन्होंने उच्चारण करने के पश्चात पोथी का निर्माण प्रारम्भ करने लगे, जब लेखनियां बद्ध करने लगे। जब दूसरा प्रसंग आया क्या ब्रह्मचारी कौन है? वेद का मन्त्र कहता है, ब्रह्मचारी कौन है? तो वह कहता है कि जो ब्रह्म का जानने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, वह सूतो ब्रह्मणा सूत्र को ब्रह्म कहते हैं। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी वह है। जो ब्रह्म और चरी को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को, चरी कहते हैं, प्रकृति को जब दोनों को जानने वाला ही तो ब्रह्मचारी है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म और चरी को जानना वह ब्रह्म नाम परमपिता परमात्मा, चरी नाम प्रकृति का है। जो मेरे प्यारे ब्रह्म सूत्र में पिरोऐ होने से देखो, सृष्टि की रचना बाह्य दृष्टिपात आती है। वह दोनों चरी बन करके ही ब्रह्म और चरी बन करके ही यह संसार दृष्टिपात आता है। मेरे पुत्रों! पुनः कहता है कि ब्रह्मचारी कौन है? जब द्वितीय प्रश्न करता है कि ब्रह्मचारी कौन है? वह कहता है, जो वेदां भूतम् ब्रहेः वर्णसुते देवाः जो ब्रह्म देखो, वेद का जानने वाला है और वेदज्ञ बन जाता है। वह

ब्रह्मचारी कहलाता है। मानो देखो, ब्रह्मम्भहे देवाः वह देखो, भ्रम जिसका विनाश को प्राप्त हो गया है। जिसको किसी प्रकार का परमात्मा के राष्ट्र में भ्रम नही रहा है। प्रत्येक इन्द्रिय के स्वरूप को जो जान गया है। उसका नाम ब्रह्मचारी है। जब तृतीय प्रश्न करता है कि ब्रह्मचारी कौन है? मेरे प्यारे! देखो, उसका उत्तर देता हुआ लेखनीबद्ध करता हुआ ऋषि कहता है। क्या जो प्रत्येक श्वास के साथ में मानो प्रत्येक श्वास का मनका बना करके और देखो, ब्रह्म में ब्रह्म को सूत्र बना करके पिरो देता है। बेटा! वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने तीन उत्तर एक ब्रह्मचारी के सम्बन्ध में मानो उन्होंने विवेचना की और यह कहा कि प्रत्येक श्वास जब आता है, उसको ब्रह्म में सूत्रित कर दों मानो उसको सूत्र बना करके देखो, जैसे माला है और माला में धागा है और धागा और माला देखो, मनकों का दोनों का समन्वय हो करके माला कहलाती है। जैसे यह सृष्टि है मानो देखो, ब्रह्म और प्रकृति का दोनों का सम्मिलन हो करके संसार की रचना हो जाती है। वह परमाणु अपने-अपने स्वरूप में मानो गतिवान हो जाते हैं। चरेवेति ब्रह्मणा चरा सुताः मानो प्रत्येक परमाणु अपने में चरने लगते हैं। तो उसे चरेवेति कहा जाता है। तो विचार आता रहता है। मेरे पुत्रों! वेद का ऋषि कहता है क्या वह ब्रह्मणाम्ब्रहे इसी प्रकार सूत्रों और देखो, सूत्रों मनको को, दोनों को अपने में एक ही एकता में दृष्टिपात करेंगें। तो हमारा जीव व्यापकवाद में परिणत हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि ब्रह्म की चरी को कौन चरता है? वह कहता है ब्रह्म की चरी को जो ब्राह्मण है, और ब्रह्मचारी है। मानो वही ब्रह्म की चरी को चरने वाला है। ब्रह्म की चरी क्या है? मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म और ब्रह्म में जो पिरोई हुई जो चरी है, प्रकृति है। उसको मानो उसके ज्ञान और विज्ञान में जो रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे देखो, एक-एक परमाणु को जानने वाला और परमाणु से कैसे मिलान होता है। उन परमाणुओं का किसने मिलान हो करके क्या बनता है? तो बेटा! देखो, इस प्रकार के विज्ञान में जब वह रत्त हो जाता है। तो ब्रह्म की चरी को चरने लगता है और चर करके ही मुनिवरों! देखो, मन और प्राण को दोनों की एकाग्र करता हुआ मुनिवरों! देखो, वह अपने मोक्ष के मार्ग को प्राप्त करने लगता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नही करूंगा, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। और परिचय यह है कि उन्होंने बेटा! देखो, इस प्रकार देखो, अपने में विचार-विनिमय करके एक पोथी का निर्माण किया उस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। तो सत का पथिक है। वही ब्राह्मण है। मानो देखो, उसी के ऊपर उन्होंने लेखनियां बद्ध की और तीन शब्दों को ले करके उन्होंने बेटा! देखो, उसकी विवेचना की है, वेदमन्त्र को ले करके, एक-एक वेदमन्त्र में सर्वत्र ब्राह्मण्ड का ज्ञान और विज्ञान मानो देखो, विद्यमान रहता है। उसको जानने वाला इस संसार सागर से पार हो जाता है। और वह अपने को मानो ब्रह्मवेत्ता बन करके आत्मवेत्ता बन करके बेटा! देखो, ब्रह्म को प्राप्त होता हुआ मेरे प्यारे! देखो, उसमें वो समाहित हो जाता है।

आत्मा परमात्मा

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, आज मैं केवल तुम्हें एक ऋषि की वार्त्ता और उनका जो विचार है, यह कितना महान है। वह कहते हैं कि देखो, प्राणम्मे पाहि, श्रोत्रम्मे पाहि मानो देखो, इनके द्वारा वह पाना चाहते हैं ब्रह्म को। मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों से या इन्द्रियों से इस प्रभु को नही जाना जाता है। उस प्रभु का जब जाना जाता है। जब इन्द्रियों के ज्ञान विज्ञान से ऊर्ध्वा में गमन करोगे, तो मानो देखो, ब्रह्म में ब्रह्म का समन्वय हो जाएगा। इस आत्मा को ब्रह्म कहते हैं। परमात्मा को परब्रह्म है। और परब्रह्म

और आत्मा को का जब दोनों का समन्वय होता है। तो बेटा! एकोकी गति हो जाती है। एकोकी चरण बन जाता है। एकोकी में रमण करता हुआ मुनिवरों! देखो, प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है कि परमात्मा के राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, परमात्मा का राष्ट्र बड़ा पवित्र है। परमात्मा के राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, रात्रि नही होती, जब रात्रि नही होती तो आलस्य और प्रमाद भी नही होता और जब आलस्य प्रमाद नही होता तो मेरे प्यारे! देखो, वहाँ अज्ञान नही होता, जहाँ अज्ञान नही होता वहाँ मृत्यु भी नही हुआ करती। वह मृत्युंजय बन जाता है। तो मृत्युंजय बनना हैं। हमें वेद का वाक् कहता है बेटा! परमात्मा के राष्ट्र में सदैव प्रकाश ही प्रकाश रहता है। वहाँ अन्धकार नही रहता, आलस्य प्रमाद नही होता और जहाँ आलस्य प्रमाद नही होता बेटा! वहाँ अन्धकार नही होता, अन्धकार से उपराम होने के लिए प्रत्येक मानव परम्परागतों से अन्वेषण करता रहा है। चिन्तन में अपने को लाता रहा है।

यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि परमपिता परमात्मा का यह ब्रह्माण्ड अनन्तमयी माना गया है। इसके ऊपर प्रत्येक मानव को अपने में चिन्तनीय बनना चाहिए। और चिन्तन मानो देखो, चिन्तन में अपने को ले जाएं। प्रभु की महिमा उसका जो साम्राज्य है, उसका जो मानो कृत है। उसको अपने में विचार-विनिमय करते हुए इस संसार से पार होने का प्रयास करे। यह है बेटा! आज का वाक् क्या अनन्तमयी है, देवतवमृ मानो देखो, वह महिमावादी है। उसकी महिमा का गान गाना बखान करना अथवा उसके वेदज्ञ ज्ञान को चिन्तन में लाना ही यह आज का हमारा वाक् है। कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल हम प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन दिनांक-२२-०१-१९९२ ग्राम भदौली मुज्ञफर नगर

७ संसार एक प्रकार की यज्ञशाला २३-०१-१९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रां का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो अनन्तमयी है और यज्ञोमयी स्वरूप है। माने याग उस परमपिता परमात्मा का आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह प्रायः उसी में वास करता रहता है। जितने भी मानवीय, आत्मीय कर्म है वह सर्वत्र मानो एक प्रकार के यज्ञोमयी माने गएं हैं।

याग वसु है।

मानव के अन्तर्हृदय में नाना प्रकार की प्रेरणाओं का उद्बोधन होता रहा है और होता रहेगा। तो इसीलिए उस वाक्यं ब्रहे वर्णाः हम उसको अपने में स्वीकार करते चले जाएं और उनमें जो अच्छाईयां है। पवित्रताएं हैं। उन सर्वत्र का नाम याग है। इसीलिए याग को हमारे यहाँ वसु कहा जाता है। क्योंकि वसु इसीलिए कहा जाता है। वह बसाने वाला है। जितने भी मानव में सुक्रियाकलाप होते रहते हैं, उनका नाम याग है। उन्हीं के कारण मानव बसता है। यह वसा वर्णा मानो इसीलिए उसका नाम वसु है। तो इसीलिए मानव को यागाम् देखो, याग को वसु जान करके उसे प्रायः अपने में धारण कर लेना चाहिए। तो याग का नाम वसु कहा जाता है। वह बसाने वाला है। तो मुनिवरों! देखो, यागाम् भवितम् परमात्मा का यह जो संसार है। यह एक प्रकार की यज्ञशाला है। मानव उसी में वह वास करता है, और उसी में रत्त रहता है। जितना भी यह जगत है। चाहे वह किसी प्रकार का वह जगत हो, चाहे जड़वत हो चाहे वह चैतन्यवत् हो परन्तु यह सर्वत्र एक परमपिता परमात्मा का वह वस्तु यह वाक् माना गया है। अथवा उसी में यह निहित रहता है। तो मुनिवरों! देखो, यागाम् भवितम् वह उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और वह उसी में मानो रत्त रहने वाला है, तो हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का गुणगवादन करते रहे और गुणाध्यानम बने जिससे गुणों को अपने में धारयामि बनाते हुए, धारण करते हुए सागर से पार होने का प्रयास करें।

परमपिता परमात्मा का याग

मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रेरणा का स्रोत माने गएं हैं क्योंकि प्रत्येक वेद मानव वेद रूपी ज्ञान से ही प्रेरणा को प्राप्त होता रहता है तो विचार-विनिमय यह कि जब परमपिता परमात्मा ने इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया तो बेटा! देखो, वे परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा है, आत्मा यज्ञमान हे, और यह जो पंच महाभूत है इनमें से कोई होता है, कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु है और कोई पुरोहित बन करके बेटा! आत्मा को पवित्र बनाने में लगा रहता है परमात्मा से अपने में प्राण कम्पियों को प्राप्त करता रहा है। तो विचार-विनिमय यह मुनिवरों! यह परमात्मा का यज्ञोमयी स्वरूप और यह जो यज्ञशाला है संसार की इसमें नाना प्रकार की सुगन्ध हो रही है। नाना प्रकार का भव्य क्रियाकलाप हो रहा है। जिस क्रियाकलाप के द्वारा ही मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह परमात्मा का एक याग हो रहा है। इसी प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपने विचारों में व्यक्त करते हुए कहा है कि क्या देखो, ब्रह्मणे यह ब्रह्माण्डं पिण्छानं भूत प्रह्वा क्या जो पिण्ड में अथवा ब्रह्माण्ड में जो ब्रह्माण्ड में गतियां हो रही हैं। वही पिण्ड में हो रही हैं। इसीलिए हमारे यहाँ यह सर्वत्र एक यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं तुम्हें वही ले जाना चाहता हूँ, जहाँ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपनी

एक पोथी का निर्माण किया बारह वर्ष तप करने के पश्चात क्योंकि जो तपस्या करने के पश्चात लेखनियां बद्ध करता है। वह लेखनियां हृदय ग्राही मानी गई हैं। और वह हृदय से लेखनियां बद्ध करता रहता है। वह अकाटय होती है। उनको कोई मानव दुष्प्रभाव उनका किसी काल में भी हृस नही हो सकता। वह अपने में पूर्ण होती हैं। क्योंकि हृदय ग्राही है। हृदय से उसका समन्वय रहता है। तो मेरे प्यारे! जब उन्होंने ब्राह्मण इत्यादि की विवेचनाएं और ब्रह्मचारियों की विवेचना प्रगट की तो उन्होंने एक आख्यिका मानो उद्गीत गाते हुए कहा है। क्या देखो, सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके एक देवासुर संग्राम हो रहा है, और वह देवासुर संग्राम बड़ा विचित्र है। कहीं देवता मानो देखो, विजयी हो जाते हैं। और कहीं दैत्य विजय हो जाते हैं।

वृषभ का जन्म

तो मेरे प्यारे! देखो, जब इनका संघर्ष चलता रहा तो ऐसा कहा जाता है, क्या एक समय देवताओं ने दैत्यों को विजय कर लिया। जब दैत्यराज विजयी हो गएं सर्वत्र ओर देवता मुनिवरों! देखो, विजेता को प्राप्त हो गएं। तो दैत्य अपने में शान्त हो गएं तो कहते हैं कि देवताओं की सभा हुई और सभा में एक आनन्दित मानो विचार-विनिमय होने लगा तो कहते हैं कि देवताओं की सभा में एक वृषभ का जन्म हुआ और उस वृषभ का जब जन्म हुआ तो उसके मुखारबिन्दु से एक ध्वनि उत्पन्न होती थी और जो उस ध्वनि को श्रवण करता वही देवता बन जाता। जब यह संसार सर्वत्र देवताओं का बनने लगा तो मुनिवरों! देवताओं का बनते-बनते वर्णा ब्रहे तो दैत्यों को मानो यह प्रिय नही लगा। दैत्यों ने एक सभा की और दैत्यों ने कहा भई! हमारा क्या बनेगा यदि देवताओं की इस प्रकार बलवती हो गई तो हमारा क्या अन्तिम चरण होगा।

असुरों द्वारा वृषभ को छलना

तो मेरे प्यारे! देखो, उस काल में उन्होने अपने सभापति विरोचन को निमन्त्रण दिया और सभापति विरोचन जी का आगमन हुआ और विरोचन जी से सभी दैत्यों ने एक स्वर में अपने वाक् प्रगट किए कि महाराज! हम देवताओं से परास्त हो गएं हैं, और देवताओं की सभा में एक वृषभ का जन्म हुआ है। उसे वृख भी कहते हैं। परन्तु योग ध्वनि उसके मखारबिन्दु से ध्वनि उत्पन्न होती है, और जो भी ध्वनि को श्रवण करता है। वही देवता बन जाता है। तो हे प्रभु! हमारा क्या बनेगा? तो उस समय महाराजा विरोचन ने कहा क्या भई! तुम दैत्य हो और मेरे द्वारा कोई ऐसा मार्ग नही हैं। मेरी इच्छा यह है कि वृषभ को छला जाएं और उसको छल करके मेरे द्वारा लाओ और मन्थन किया जाऐगा। मेरे प्यारे! देखो, वह दैत्य प्रसन्न हुए, उनमें से शुम्भ, निशुम्भ, रक्त बीज ने अपना कर्म बनाया। क्या आज मध्य रात्रि में हम वृषभ को छलेंगें। तो बेटा! यह वाणी, यह जो तरंगें थी वह मानो वृषभ के द्वार पर पंहुच गई और वृषभ ने मानो इस धरोहर को, देवताओं की धरोहर को मेरे प्यारे! देखो, इन्होंने अमृत रेणुका को प्रदान कर दिया वह ध्वनि तो रेणुका में चली गई। अमृतं देखो, जब दैत्यों ने मध्य रात्रि में मानो देखो, वृषभ को छल लिया, छल लेने के पश्चात उसे महाराजा विरोचन के द्वारा लाया गया और विरोचन ने जब उसका मन्थन किया तो उसमें वह ध्वनि नही थी। वह देवत्वा मानो ध्वनि उससे चली गई महाराजा विरोचन ने कहा भई! दैत्यराजों इसमें तो वह ध्वनि नही हैं। उन्होंने कहा महाराज! वह ध्वनि कहा गईं? तो क्या वह ध्वनि तो देखो, रेणुका में प्रवेश कर गई है।

रेणुका को छलना

मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे व्रताः उन्होंने यह विचार बनाया कि आज हम मध्यरात्रि में मानो रेणुका को छलेंगें। मुनिवरों! रेणुका को भी यह तरंगें मानो देखो, उनके द्वारा स्पर्श हुई और उन्होंने यह मानो की देवताओं

की धरोहर को दैत्य मानो दूषित कर देंगें, तो रेणुका ने बेटा! देखो, उस धरोहर को यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दिया। तो यज्ञ के दस पात्रों मं बेटा! देखो, वह समाहित हो गई। मेरे प्यारे! ब्रह्मणा प्रहा कृति देवतवाम् अमृतम जब मध्य रात्रि का काल हुआ, तो दैत्यों ने अपना-अपना कर्म बना करके और रेणुका को उन्होंने छला और रेणुका को छला तो रेणुका ने वह ध्वनि तो पूर्व जी यज्ञ के दस पात्रों में प्रवेश कर गई थी और बेटा! जब ध्वनि को अमृतम वह रेणुका को लाया गया तो महाराजा विरोचन ने मन्थन किया तो वह ध्वनि विरोचन जी यह कहते हैं हे दैत्यों! इसमें तो वह ध्वनि नहीं हैं। उन्होंने कहा महाराज! कहाँ गई? क्या अब तुम इस ध्वनि को निकास नही सकोगे। वह ध्वनि तो रेणुका ने मानो देखो, यज्ञ के दस पात्रों में समाहित कर दी है। और यज्ञ के किसी न किसी पात्र में मानो देखो, वह ध्वनि अवश्य रहेगी। इसीलिए तुम सर्वत्र ध्वनि को अपने में समेट नही सकोगे।

वृषभ रेणुका क्या है?

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब उन्होंने यह कहा तो अवन्नम बहे वह शान्त हो गएं तो मेरे प्यारे! विचार आता है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराजा ने शतपथ ब्राह्मण में यह वर्णन किया और उन्होंने कहा कि देखो, रेणुका क्या है? वृषभ क्या है? और दैत्य और देवता क्या है? बेटा! वहाँ जब हम साधना में प्रवेश होते हैं। तो हमारे इस हृदय रूपी जो यज्ञशाला है मानो देखो, जो शरीर रूपी यज्ञशाला है। इसमें प्रायः देवासुर संग्राम हो रहा है। कहीं देव प्रवृत्ति है। तो कहीं असुर प्रवृत्ति है। तो दोनों प्रकार का मानो देखो दोनों में संघर्ष होता रहता है। दैत्यों और देवताओं में जो इस प्रकार का भयंकर संग्राम हुआ। तो एक समय देवताओं ने दैत्यों को विजय कर दिया। मेरे प्यारे! जब दैत्य विजयी हो गएं तो देवताओं की सभा में एक आनन्दवत् मानो देखो, विजय के पश्चात एक आनन्द घोषणा होती है, और वह घोषणा मुनिवरों! देखो, घोषणा एक द्यौतक उन्होंने वृषभ को बनाया। तो हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में बेटा! वृषभ नाम मन को कहा जाता है। यह मन के द्वारा मुनिवरों! देखो, देवताओं ने यह धर्म ध्वनि को मानो देखो, मन को समर्पित कर दिया और यह कहा कि तुम ध्वनि को और जो धर्म की वार्त्ता श्रवण करता है। वही देवता बनने लगा क्योंकि धर्मज्ञ ब्रह्मा धर्मेग्यस्वतः प्रह्वा यह धर्म ही मानव को ऊर्ध्वा में ले जाता है। विचार आता है कि धर्म क्या है? जिसे मानो देखो, मन पवित्र जब हो जाता है। तो मन से प्रेरणा अथवा एक ध्वनि उत्पन्न होती है और उस ध्वनि का नाम ही मुनिवरों! देखो, धर्म कहा जाता है। जो देवताओं के मुखारबिन्दु से निकली हुई ध्वनि है। मुनिवरों! जब होती है। जिसका समन्वय हृदय से रहता है और वह ध्वनि जब होती है। तो उसका समन्वय उत्पन्न मन से होता हुआ और जो मन के उदगारों को श्रवण करता है, पवित्रता को वह पवित्र होता चला जाता है। इसीलिए महापुरूष मेरे प्यारे! देखा विद्यालयों में अपने आश्रमों में ब्रह्मचारी की दीक्षा देते हैं। उसका नाम दीक्षा कहा जाता है। जब आचार्य और ब्रह्मचारी का दोनों का हृदय पवित्र हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, वहाँ दीक्षा का प्रावधान है। दीक्षा प्रदान की जाती है, और वह ब्रह्मचारी दीक्षीत हो जाता है। तो विचार आता है बेटा! देवताओं की सभा में मानो देखो, इस प्रकार जब मनम् ब्रहे वृषभ का जन्म हुआ, तो दैत्यों ने मानो शुम्भ, निशुम्भ, रक्तबीज बेटा! देखो, वह मानम् ब्रह्वा शुम्भ कहते हैं। अमृतम् और शुम्भ कहते हैं, वर्णाः और मुनिवरों! देखो, विरोचन कहते हैं। सभापति अभिमान को। मेरे प्यारे! देखो, जब शुम्भ निशुम्भ, रक्तबीज, रक्तबीज कहते हैं तृष्णा को बेटा! एक तृष्णा मानो बलवती होती नही, द्वितीय तृष्णा का जन्म हो जाता है, द्वितीय चिन्तन प्रारम्भ हो जाता है। इसी प्रकार शुम्भ, निशुम्भ और रक्तबीज इन तीनों दैत्यों ने इस मन को छला क्योंकि मन प्रकृति का तन्तु होने से यह कहीं चेतना में जाता है। तो कहीं

प्रकृति के क्षेत्र में आ जाता है। यह जहाँ पवित्र हैं, वहाँ दूषित भी बहुत ही प्रायः अपने सूक्ष्म समय में हो जाता है।

तो मानो देखो, जब इस वृषभ को उन्होंने छल लिया तो इसको जो ज्ञान हो गया था वह देवताओं की धरोहर मेरे प्यारे! देखो, वह रेणुका में प्रवेश कर गई। जब रेणुका क्या है? रेणुका कहते हैं बुद्धि को। हमारे वैदिक साहित्य में बुद्धि के नाना प्रकार माने गएं हैं। अथवा नाना पर्यायवाची शब्दों में इसका वर्णन किया जाता है। जैसे रेणुका कहते हैं बुद्धि को, रेणुका के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। रेणुका नाम माता का भी है, रेणुका रात्रि को भी कहते हैं। और रेणुका का नाम बुद्धि का है बेटा! देखो, बुद्धि इसीलिए कहते हैं, बुद्धि, अमृतम् देखो, रेणु वृत कहा जाता है। इसमें तो धर्म ध्वनि रहती है, इसीलिए इसको रेणुका कहा जाता है। रात्रि भी इसी में समाहित हो जाती है। मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी का नाम भी रेणुका है। क्योंकि यह रज सहित नाना प्रकार के खाद्य खनिजों की उत्पति करने वाली है। तो रेणुकाम् ब्रह्मे रेणुका नाम बुद्धि का है, और बुद्धि के कई प्रकार माने गएं हैं। हमारे यहाँ देखो, यह ऋतम्भरा है, यही प्रज्ञा है, और यही मेधावी कहलाती है। नाना प्रकार से मानो देखो, इसका वर्णन किया जाता है। जब मुनिवरों! देखो, बुद्धि दृष्टिपात करती है। और प्रज्ञा मानो देखो, उसका अनुभव करती है, उसको क्रिया में लाने को प्रयास करती है। जब वह क्रिया में आ जाती है। तो मानो ऋतम्भरा का जन्म होता है, ऋतम्भरा कहते हैं, जान करके मौन हो जाना और प्रज्ञा उसे कहते हैं, जहाँ देखो, आन्तरिक चित्त में देखो, बेटा! सर्वत्रता को जान करके ही परमपिता परमात्मा का दर्शन करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, बुद्धि, मेधा और ऋतम्भरा और प्रज्ञावी में प्रवेश हो करके मुनिवरों! देखो, सर्वत्र को जान करके अपने में ही मानो देखो, अपनेपन का भान करने लगता है।

तो विचार आता रहता है रेणुका नाम बेटा! बुद्धि का है और रेणुका नाम माता को कहते हैं। माता को उस काल में रेणुका कहते हैं। जब माता मानो देखो, तमोगुण की आभा में रत्त होती उस समय उसको रेणुका कहते हैं, और मुनिवरों! देखो, रात्रि इसीलिए कि वह प्रकाश को अपने में धारण कर लेती है। अन्धकार छा जाता है। तो उसका नाम रेणुका है। मानो देखो, जो परमाणुओं का संघर्ष होता रहता है, और संघर्ष हो करके उन परमाणुओं की ध्वनि को जो मेरे प्यारे! अपने में धारण कर ले उसका नाम रेणुका बुद्धि कहते हैं।

दस पात्र

तो विचार आता है बेटा! देखो, बुद्धगायम् भूतम् ब्रह्मा वाचसुतम् ब्रह्मेः तो रेणुका में जब वह ध्वनि चली गई, तो दैत्यों ने बेटा! उसका छलने का कर्म बनाया और छल करके जब उसे छला गया मेरे प्यारे! देखो, छलने के पश्चात अमृतम् देखो, वह यज्ञ के दस पात्रों में ध्वनि चली गई। वह देवताओं की धरोहर जिसको हमारे यहाँ धर्म कहते हैं वह धर्म कहाँ गया मानो यज्ञ के दस पात्रों में सृष्टि के पिता ने जब बेटा! देखो, इस मानव शरीर का सृजन किया तो यह मानो देखो, आध्यात्मिक और भौतिकवाद से दोनों से ही इसका समन्वय रहता है, और समन्वय रहते हुए अमृतम् ब्रह्मा वाचस्सुताः तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतम् देवताम् भू हाः तो वह यज्ञ के दस पात्र क्या हैं? देखो, बेटा! याज्ञिक याग कर रहा है। यहाँ आध्यात्मिकवाद का वर्णन है। बेटा! देखो, यहाँ दस पात्र है, और दस मानों देखो, इन्द्रियां कहलाई जाती है। पांच कर्मेन्द्रियां और पांच ज्ञानेन्द्रियां कहलाई जाती है। मानो देखो, यह यज्ञ के दस पात्र कहलाते हैं। यह जो हमारा मानव का शरीर है। यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, और इस यज्ञशाला में दस पात्र हैं। जो पात्र बन करके बेटा! इसे हूत कर रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो, नेत्रों का नेत्र दृष्टिपात कर रहे हैं। अग्नि को साथ ले करके वह स्वाहा कह रहे हैं-अपानाय स्वाहा कह रहे हैं,

व्यानाय स्वाहा कह करके मेरे प्यारे! देखो, उसमें धर्म समाहित रहता है। नेत्रों का धर्म है दृष्टिपात करना मेरे प्यारे! देखो, कुदृष्टिपात करना नही हैं। देखो, सुदृष्टिपात करने का नाम धर्म है। वही धर्मज्ञ कहलाता है। मुनिवरों! देखो, श्रोत्रों से वह सु शब्दों को ग्रहण करता है, सु शब्दों को लाना प्रारम्भ करता है, और मानो देखो, उन शब्दों की ध्वनि कहाँ तक चली जाती है। वह कहीं मानो देखो, दिशाओं में से शब्द लाता है, वही ध्वनि मेरे प्यारे! अन्तरिक्ष में रात्रि के काल में देखो, वह परमाणुओं का संघर्ष होता उसमें से धीमी-धीमी ध्वनि आ रही है। तो उसको वह अपने में श्रवण करता है, और वही ध्वनि जो मेरे पुत्रों! देखो, अमृतम् ब्रह्मा अन्तःकरण में जो ध्वनियां का जिसे हमारे यहाँ अन्नाद कहते हैं। वह जो मन देखो, मस्तिष्क में, वह जो मस्तिष्क की प्रतिभा है, और मस्तिष्क में जो अनहाद स्वर ध्वनि हो रही है। उसको योगेश्वर अपने में धारण करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह शब्दों का श्रवण करना और दार्शनिकता से, मानवीयता से उसको अपने में जब लाता है। तो वह ध्वनि कहीं जाती है। और वह श्रोत्रों का धर्म है। सु शब्द ग्रहण करना अशुद्ध शब्द उसका ग्रहण करने का वह धर्म नही कहा जाता है, धर्म कहते है। सु को। बेटा! देखो, सुदृष्टिपात करना सुवर्णम् ब्रह्मा सुवर्णीया में परिणत होना ही हमारा एक कर्तव्य माना जाता है। मेरे प्यारे! देखो, घ्राण से सुगन्ध को लेना वह उसका धर्म है। देखो, असुगन्ध को नही लेना इसी प्रकार वाणी से सत्य उच्चारण करना सत्य रसो को ग्रहण करना वह उसका धर्म है। त्वचा से बेटा! प्रीति युक्त अपने क्रिया कलापों को करना यह उसका धर्म है। तो बेटा! देखो, धर्म कहाँ हैं? धर्म मानव की सर्वत्र इन्द्रियों में निहित हो रहा है। पांच कर्मेन्द्रियां हैं। सु कर्म करना बेटा! यह भुजाओं का कर्तव्य है, और इसी प्रकार देखो, सुअमृतम देखो, सु मार्ग को ग्रहण करना यह पगों का कर्तव्य है। इसी प्रकार मुख का कर्तव्य है कि शुभ पदार्थों का पान करता रहे। अपने में विचितत्रा को धारा करता रहे। मेरे प्यारे! देखो, ध्रुवा और उपस्थ इन दोनों के देवताओं को जानना और देवतापने से अपने जीवन को व्यतीत करना यह सर्वत्र मानो देखो, इन्द्रियां का क्रियाकलाप है, और इन्द्रियों के क्रियाकलाप का नाम ही धर्म है। धर्म बेटा! कहाँ रहता है? मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। अरे, वह ध्वनि कहाँ गई बेटा! वह ध्वनि तो यज्ञ के दस पात्रों में चली गई है और यागाम् भूतम् ब्रह्मेः वही तो याग कहलाता है। जहाँ बेटा! अपने शरीर रूपी मानो यज्ञशाला को जो पवित्र बनाने वाला है। वही तो यज्ञों में प्रवेश करता है। वह याज्ञिक कहलाता है। तो हमें विचारना है कि हम याज्ञिक बने और अपने मानवीय कर्तव्यों को विचारते हुए सागर से पार होने का प्रयास करें। तो महाराजा विरोचन ने कहा हे दैत्यराजों! तुम मानो देखो, धर्म, इन्द्रियों से नही निकाल पाओगे। धर्म, यदि धर्म, इन्द्रियों से चला जाएगा। तो इसीलिए धर्म को विचारना और धर्म, यदि धर्म, इन्द्रियों से चला जाएगा तो इसीलिए धर्म को विचारना और धर्म की रक्षा करना यह प्रत्येक मानव का कर्तव्य कहा जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, देवासुर संग्राम का वर्णन करते हुए आचार्यों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए वेद मन्त्रों का उद्घोष करते हुए कहा है, देवाम् भवतम् भर्गं ब्रह्मा ब्रह्वा यह देवताओं का जो स्थान है। यह भव्य हृदय है। इस हृदय को पवित्र बनाना, हृदय ग्राही बनाना ही हमारा कर्तव्य है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं आज विशेश चर्चा तुम्हें प्रगट नही करूंगा। विचार-विनिमय क्या यह देवासुर संग्राम मेरे प्यारे! देखो, हो रहा है। दैत्य कौन है? देखो, काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि मानो देखो, यह दैत्य कहलाते हैं। इनका भी देखो, दैत्यपन यह सीमा में रहते हैं। तो देवताओं की सभा में आ जा सकते हैं। परन्तु जब यह अति करते जाते हैं। तो देवतव इससे समाप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक वस्तु सीमा में देवता है, प्रत्येक वस्तु सीमा में मुनिवरों! देखो, दैत्य रूप धारण कर लेता हैं। तो आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नही हमारे आचार्यों ने जो भी लेखनियां बद्ध की हैं। उन

लेखनियों में दोनों प्रकार माने गएं हैं। उन्होंने आध्यात्मिकवाद को भौतिकवाद से समन्वय किया है, और भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर दिया है। उसे आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों को अपने में लाने का हमें प्रयास करना चाहिए। अपनेपन में ही वह चिन्तन ओर मनन करना चाहिए।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का उद्गीत

तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या जब महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण कर दिया निर्माण करके बेटा! तपस्या का काल उनका पूर्ण हो गया तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, अपने विद्यालय में आ पधारे और विद्यालय में ब्रह्मचारियों ने जब आचार्य का दर्शन किया तो बेटा! उनका हृदय पवित्र हो गया, हृदय गद्-गद् हो गया आरे वह उनके चरणों की वन्दना करने लगे। उन्होंने कहा प्रभु! हमारे लिए तपस्या में जा करके क्या वस्तु हमें आप प्रदान करेंगें। तो उन्होंने पोथी का मानो उन्होंने प्रगट अवृत्ति उन्हें प्रदान की और वह कहा ब्रह्मचारियों यह पोथी इसका अध्ययन करो ओर इसको तुम आचरण करो। इसमें कहा है कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए और यागाम् भूतम् ब्रह्मा परन्तु याग देखो, अपने में शान्त हो करके अपनी आत्मा में हूत करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार आध्यात्मिक और भौतिकवाद, दोनों का उन्होंने ब्रह्माण्ड से ले करके और मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के रसातल तक उन्होंने सर्वत्र शतपथ ब्राह्मण में अपनी वार्त्ताएं प्रगट की। एक वेदमन्त्र उन्होंने उच्चारण किया और उच्चारण करके उन्होंने उसी की व्याख्या की है। उन्होंने कहा मन व्रतम् देवत्या व्रते तपं हृदस्तुम् ब्रह्मा तपम् देवो ब्रह्मा देवम्दं ब्रहे च भवसुति तपाः ऐसा उद्गीत गाते हुए उन्होंने गाते हुए उन्होंने तप की मीमांसा करते अपना विचार दिया। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् यशश्चयाः देवं भद्रा वायु गतं मन्त्राजाहम्। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। उनके विचारों में मानो कितनी मानवीयता और देखो, उसमें कर्तव्य पारायणता रहती है। इसी प्रकार हमारा जो यह वाणी, हमारा यह वाणी बन करके अवृतम यह मृत मण्डल में जहाँ एक याग का आयोजन हुआ। मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है, और मैं यह कहा करता हूँ, यह जो काल चल रहा है। यह वाममार्ग का काल है। जहाँ राजा भी, प्रजा भी दोनों ही वाममार्ग की प्रतिभा में निहित हो रहे हैं। जहाँ स्वार्थपरता में सुरा और सुन्दरी और मानो द्रव्य की लोलुपतता में मानव अपने जीवन को नष्ट करने जा रहा है। तो यह वाममार्ग कहा जाता है। मैंने इससे पूर्व काल में कहा है क्या द्रव्य का सदुपयोग करने का नाम ही धर्म है। और द्रव्य का सदुपयोग करना ही मानव का कर्तव्य है। मैंने यह वाक् अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रगट कराया। आज मैं राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में कोई विचार व्यक्त करना नही चाहता हूँ। केवल यह क्या मैं एक ही वाक् कहा करता हूँ कि राजा, राष्ट्र का जो निर्वाचन, वह बुद्धिमान ओर विवेकी और ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा ब्रह्मवेत्ता का निर्वाचन होना चाहिए। हमारे यहाँ पुरातन काल में जब वशिष्ठ जैसों को उपाधियां प्रदान की गई। तो वशिष्ठ को उस समय चुनौती प्रदान की। जब वह पूर्ण रूपेण ब्रह्मचारी पूर्ण रूपेण मानो देखो, वह अपने में एक ब्रह्मवेत्ता बन गया और ब्रह्मवेत्ता बन करके उसको ब्रह्मर्षि के नामों से उद्घोष किया जाता और वशिष्ठ मुनि महाराज मानो देखो, जिसे ब्रह्म उपाधि देते उसे उपाधि प्रदान होती थी।

ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियां

तो विचार आता है मैं यह कहा करता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से कि यह विचार, यह प्रणालियां मानो उस

काल में समाप्त हो गई जब यहाँ रूढ़िवाद बलवती हो गया देखो, अपने में रूढ़िवाद बन गया, ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियां बलवती हो गई और वह रूढ़ियाँ मानो देखो, ईश्वर के नामों पर हो करके ईश्वर को भिन्न-भिन्न रूपों में और मानव समाज को धर्म से वंचित कर दिया। मानो समाज को वंचित किसने किया इन नाना प्रकार की रूढ़ियों ने और राष्ट्र जिसका जिस रूढ़ि का राजा बन गया उसने धर्म को ही नष्ट करना चाहा। मैं परम्परा की वार्त्ता क्या देखो, महाभारत काल के पश्चात की वार्त्ता प्रगट करता रहता हूँ और केवल यह कि यहाँ नाना देखो, मोहम्मद के मानने वालों ने देखो, धर्म से मानव को वंचित किया। ईशु के मानने वालों ने धर्म से मानव को वंचित कर दिया है। कर्तव्य के ऊपर उन्होंने कोई बल नही दिया मानो देखो, उसमें नाना प्रकार की अशुद्धियां होने से मानव देखो, उन रूढ़ियों को स्वीकार करता है। संसार रूढ़िवादी बन गया और वह रूढ़ि राष्ट्र में चली गई और राष्ट्र में एक मानव मानव के रक्त का पिपासी बन गया। मैं यहाँ इस सम्बन्ध में इसीलिए पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे यह प्रगट कराया क्या रावण का उदाहरण देते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे यह प्रगट कराया क्या रावण के राज्य में भी नाना प्रकार की रूढ़ियां बन गई थी ईश्वर के नाम पर। मानो देखो, यह राक्षस यह भी मानो देखो, एक धर्म रूढ़ि में परिणत हो गया और देखो, यह राक्षस यह भी मानो देखो, एक धर्म रूढ़ि में परिणत हो गया। और देखो, शैव मत था जो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे जिसको मेघनाथ स्वीकार करता था एक ऋणीता मानो सम्प्रदाय चला जो पातालपुरी में अहिरावण जिसको स्वीकार करते थे। तो वह जब देखो, कर्तव्य पारायण महापुरूष का जन्म हुआ तो यह सब रूढ़ियां उन्होंने नष्ट कर दी और उन्होंने देखो, अपनी संस्कृति का प्रसार करते हुए वेदज्ञ बनाते हुए संसार को वेदज्ञ बनाते हुए संसार को, अपनी अयोध्या को ऊर्ध्वा में ले गये।

तो विचार आज मैं इसीलिए पूज्यपाद गुरुदेव ने इन विचारों को पुनः से उद्गीत गाने चला गया हूँ, क्या इसीलिए राजा यदि हो और राजा देखो, बुद्धिमान हो तो इन रूढ़ियों का समाप्त कर देना चाहिए, और रूढ़ियां कैसे समाप्त होगी? जब रूढ़ि समाप्त होगी देखो, जब राजा ब्रह्मवेत्ता होगा उसका निर्वाचन पवित्र होगा जैसे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी प्रगट करा रहे थे। मानो देखो, निर्वाचन जब भी होता है। परन्तु देखो, मेरे हृदय में यह प्रायः वेदना रहती है। मेरी प्यारी माताएं राष्ट्र ये देखो, अपना अवशेष करती रही हैं, और वह कितनी विवेकी क्योंकि माताओं का कर्तव्य रहा है, और देखो, आचार्य उनका निर्वाचन करता रहा है। तो विचार-विनिमय क्या मैं विशेषता में तो नही केवल देखो, आज यह देखो, कि मैं अपने वाममार्ग काल में देखो, द्रव्य का सदुपयोग होना यह मैं सौभाग्य स्वीकार करता हूँ। यह देखो, जो याग जैसे क्रियाकलापों को पुनः से अपने अन्तर्हृदयों में अपनाने का प्रयास करते हैं। और वह द्रव्य का सुदपयोग करते हैं, देवपूजा में परिणत करते हैं। वह द्रव्य का सदुपयोग है। तो मेरा यह क्या हे यज्ञमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे और तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। इस अखण्डता के ऊपर मैं सदैव अपने विचार व्यक्तर करता रहता हूँ।

तो विचार-विनिमय क्या हमारी प्रणाली पवित्रता को धारण करती हुई, और पूज्यपाद गुरुदेव! ने अभी-अभी धर्म को कहा है। आधुनिक काल का राष्ट्र कहता है कि हम धर्म निरपेक्ष है। अरे, भोले राजा! तू धर्म को जानता नहीं यदि जानता हुआ होता तो तू धर्म से विमुख नही होता। तो मानो देखो, यदि तू अपने धर्म को ही नही जानता कि धर्म क्या है? तो मानो तू और क्या जान सकता है। क्योंकि धर्म को देखो, कहीं शिवालयों में स्वीकार कर लिया है। कहीं देखो, वह मोहम्मद के मानने वाले जिनको वह देखो, ईश्वर गृह कहते हैं, कहीं ईशु के मानने वाले ईशु में धर्म, ईशु में ईश्वर को दृष्टिपात करते हैं, वहीं धर्म हैं, तो इस प्रकार के जो राजा है। वह

धर्म को न जान करके अपने को धर्म निरपेक्ष कहते हैं। धर्म को नही जानते क्योंकि शिक्षा प्रणाली अशुद्ध हो गई है। आचार्य जब धर्म को यह कहते हैं, अविराम भूतम् ब्रह्मे हे ब्रह्मचारी! तू अपनी इन्द्रियों के विषयों को मुझे प्रदान कर जब वह इन्द्रियां ही देखो, किसी को प्रदान नही की गई, तो वह धर्म को क्या जान सकेगा। धर्म वह जानता है जो इन्द्रियों के विषयों को जानता है। धर्म वह जानता है जो इन्द्रियों के कर्तव्यों को जानता है। धर्म वह जानता है जो मानो ब्रह्मवेत्ता होता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अभी-अभी प्रगट कराया धर्म मानो देखो, किसी शिवालय में नही होता, धर्म किसी गृह में नही होता। धर्म देखो,! अप्रतम् जिसे देखो, अन्ध वृत्ति वह देखो, मोहम्मद के मानने वालों के गृह में नही होता ईश्वर, ईश्वर मानो देखो, ईशु नही होता। देखो धर्म और देखो, अमृतम देखो, अमृम् तो वह होता है, जो इन्द्रियों में कर्तव्य पारायणता में समाहित होता है, वह धर्म है। वह मोहम्मद के मानने वाला हो, चाहे वह ईशु के मानने वाला हो, चाहे वह देखो, किसी भी सम्प्रदायों में रत्त रहने वाला हों, वह धर्म देखो, प्रत्येक इन्द्रियों में समाहित रहता है। अरे, भोले प्राणियों धर्म को विचारो। अरे, राजन् तू देखो, उन इन्द्रियों का प्रसार कर और इन्द्रियों के धर्म का बखान बर देखो, तेरे यहाँ से रूढ़ि चली जाएगी। जब तक रूढ़ि नही जाएगी। जब तक तू स्वतः ब्रह्मवेत्ता नही होगा, वेदज्ञ ज्ञान रूपी प्रकाश तेरे अन्तर्हृदय में नही होगा। जब तक मानो तू रूढ़ियों को नष्ट नही करेगा। और रूढ़ियां नष्ट नही होगी देखो, एक दूसरा प्राणी रक्त का पिपासी बना रहेगा और जब द्वेष की अग्नि प्रचण्ड रहेगी। वह अग्नि एक समय मानव का, राष्ट्र का दाह कर देगी। एक समय आयेगा कि राष्ट्रवाद समाप्त हो जाएगा। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह वाक् प्रगट करने चला हूँ। क्या धर्म अपनी स्थली पर धर्म रहता है। वह धर्म देखो, इन्द्रियों का एक विषय है, वह ज्ञान का विषय है, वह विवेक का विषय है। उसे विवेक युक्त हो करके मानव को चिन्तन में लाना चाहिए। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। विचार-विनिमय क्या मंगलम् ब्रहे मैं इसीलिए आज्ञा पा रहा हूँ। मुझे सुविचार विशेष नही देना है। केवल पुनः से हे यज्ञमान! तू अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग करता रहे, और आनन्दम् ब्रह्मे मंगलमय तेरा जीवन हो इसके साथ मैं अपने विचारों को व्यक्त कर रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार दिये। उनके विचारों में बड़ी मार्मिकता और बड़ी विचित्रता है। तो सूक्ष्म से शब्दों में वह अपने ऐसे गम्भीर अपने ऐसी वार्त्ता प्रगट कर जो हैं। जिनमें राष्ट्र एक सूक्ष्म से आवेशों में निहित रहता है। तो इसके साथ आज का यह वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या यह संसार परमात्मा का जगत है, और यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, देखो, मानव शरीर भी यज्ञशाला है। और यज्ञ को हमें विचारना है। और हम देखो, ऐसे वसुओं का अपने मे वसु बन करके अपने में ही अपने को धारण करना चाहिए। यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन होगा।

८ याग वसु है 25 01 1992

जीते रहो देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे यो यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमायी है और उसका ज्ञान व विज्ञान की अनन्तमयी माना गया है और वह यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस पर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहे है क्योंकि वह अन्तमयी है विज्ञान मयी है और सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना वैज्ञानिक हुए है परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमा बद्ध कर सके क्योंकि वह सीमा से रहित है और वह सीमा में आने वाले नहीं है आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है कि वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप से वर्णन किए जाते है हे मां वसुन्धरा तू हमारा कल्याण करने वाली है वसुन्धरा उसे कहा जात है जिसके गर्भ स्थल में हम सब वशीभूत रहते है तो हमारे यहाँ वैदिक साहितय में उस वसुन्धरा के नामों से पर्यायवाची शब्दों की विवेचनाएं होती रही है वेदमन्त्र कहता है वसुन्धरा ब्रह्मा वानों वर्जी ब्रह्म देवा क्योंकि हमारे यहाँ वसु का वर्णन आता रहा है और वसु मानो उसे कहा जाता है जिसमें हम सब वशीभूत रहते है धर्म ब्रह्मा धर्म मानव तू ऊर्ध्वा में कर्म का क्योंकि वह वसु है उसी के कारण तू संसार में बसता रहता है हमारे यहाँ यज्ञों का नाम धेहि वसु के नाम से वर्णन किया जाता है क्योंकि जितने भी संसार के सुक्रियाक्लाप है सुकर्म है उन सर्वत्र का नाम याग माना गया है और यदि याग नहीं होगा तो तू वस नहीं सकेगा इसलिए उसका नाम वसु कहा जाता है वेदमन्त्र कहता है वसु ब्रह्मणे वसु प्रह्वा हे मानव तू वसुन्धरा तू मानो वसु की पूजा कर मेरे प्यार आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना इस सम्बन्ध में नहीं दे सकूंगा आज का विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वीकार करते रहते है और हमारे आचार्यो ने जब भी अनुसन्धान किया उन्होंने आध्यात्मिक और भौतिकता को दोनों को एक रूप में लाने का प्रयास किया है क्योंकि हमारे यहाँ जब आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों एक दूसरे के मनके बन जाते है तो मुनिवरों! देखो, यह संसार एक माला के रूप में दृष्टिपात आती रहती है जैसे लोक लोकान्तर मानो एक माला के सदृश्य है और एक दूसरे में मानो देखा उनकी प्रतिष्ठा हो रही है वह प्रतिष्ठित हो रहे है तो उन लोगों का नाम मानो देखो, वसु कहा जाता है उसमें मानो देखो, प्राणीमात्र मानो अपने में बसता रहता है तो वह अग्नम ब्रह्मा तो मानो देखो, वह एक माला है और माला में जो सूत्र बना हुआ वह परब्रह्मा परमात्मा है जो मानो देखो, एक-एक पदार्थ संसार में यागिक बना हुआ है एक परमाणु दुसरे परमाणु का सहयोगी बन रहा है प्राणी प्राणी का सहयोगी है लोक लोकान्तरों का मानो एक लोक दूसरे को प्रभावित कर रहा है तो एक प्रकार की यह माला है जैसे हमारे यहाँ शब्दों का जग उद्गीत गाया जाता है तो वह मंगलम ब्रीही वर्णा मानों देखो, उसको माला के रूप में वर्णित किया गया है आचार्यो ने कहा है कि एक माला पाठ होता है जब भी वेद का गायन गाने वाला वेद का उद्गीत गाता है तो एक माला पाठ होता है और माला पाठ का अभिप्राय है कि एक दूसरे शब्दा में शब्द की प्रतिष्ठा होती चली जाती है और वह शब्दों का मानो देखा माला बन करके और उसमें जो सूत्र है उस सूत्र में जब माला मनके पिरोये जाते है तो माला बन जाती है इसी प्रकार एक-एक माला के गर्भ स्थल में मानो हम जैसे शिशु अमृतम मानो एक दूसरे में पिरोये जाते है तो शरीर रूपी माला बन जाती है

और माला में बेश्रा भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके है परन्तु देखो, एक अन्तिम सूत्र में पिराये जाते है इसलिए हमें आत्मा को जानना बहुत अभिवार्य है आओ मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं आओ तुम्हें मैं नैतिकता के सम्बन्ध में कुछ वाताएं प्रगट कराने के लिए आया हूँ जो हमारा वेदमन्त्र कहता है मुझे कहीं से प्रेरणा क्योंकि मानव तो प्रेरणा का स्रोत्र बना हुआ है प्रेरणा को पाता रहता है प्रेरित होता रहता है अपने क्रियाकलापों में सदैव वह तत्त्वर रहता है तो मुनिवरों! इसी प्रकार हम सब प्रेरणा के स्रोत्र है और प्रेरणा को प्रापत करते हुए प्रेरित हो करके अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहते है तो मुनिवरों देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र इसे कुछ प्रेरणा दे रहा है आओ आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ जिन वाक्यों की विवेचना मैंने कई कालों में तुम्हें प्रगट की है आज भी मुझे वेदमन्त्र स्मरण आ रहा है बेटा! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में प्रातःकालीन मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी एकत्रित होते थे और एकत्रित हो करके याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातःकालीन मानो न्यौदा में से वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए वह याग करते है और याग में जब मानो ब्रह्मचारी और आचार्य सब विद्यमान हो करके नाना प्रकार के यागों का चयन करते रहे है उन्होंने बेटा! एक अग्निष्टोम याग का वर्णन किया है एक वाजपेयी याग का वर्णन किया है अश्वमेध गौ मेघ नाना जैसे कन्या यागों का वर्णन आता रहता है और देखो, अश्वमेधों का वर्णन भी प्रायः वैदिक साहित्य में उसकी विवेचना होती रही है आज में यागों की विवेचना क्योंकि याग क्या नाम ही विष्णु है और आज मैं तुम्हें विष्णु रूप का भी वर्णन नहीं कराऊंगा केवल यह क्या याग को आचार्यो ने भिन्न प्रकार से माना है मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार की अग्नियों में वह याग होता रहता जैसे गहिपथम नाम की अग्नि में वैश्वासर नाम की अग्नि है आवहनीय नाम की अग्नि है और जेसे गृहष्थ्य नाम की अग्नि में तपा हुआ मानव अपने को स्वस्ति कहलाता है तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! यह भिन्न-भिन्न यागों के क्रियाकलाप है अथवा भिन्न-भिनन प्रकार के उनके कर्मकाण्ड है मैं आज तुम्हें विशेषता में न ले जाता हुआ याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय की चर्चा कर रहा था वह प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों को उपदेश दे रहे थे हे ब्रह्मचारियों तुम अपने में यागिक बनो और तुम गार्हपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करो गार्हपथ्य उसे कहते है जिसमें ब्रह्मचारी अपने को तपायमग्न करता रहता है जिससे ब्रह्मचारी मृत्यु से पार हो जाता है उस याग का नाम ही गार्हपत्य नाम की अग्नि कहा जाता है तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज जब न्यौदा में वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए मानो उद्गीत गा करके अपने को प्रसन्न कर रहे थे और ब्रह्मचारियों को शिक्षित बना रहे थे तो एक ब्रह्मचारियों को शिक्षित बना रहे थे तो एक ब्रह्मचारी यज्ञदत्त नाम का उनके समीप उपस्थित हुआ और यज्ञदत ब्रह्मचारी ने नतमस्तक ही करके बोले है प्रभु आप यागो की बड़ी विवेचना करते रहते हो याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि संसार के आचार्यो ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ब्रह्म के पुत्र अथर्वा से ले करके यागो के ऊपर अन्वेषण होता रहा है और दोनों प्रकार का मानो ज्ञान और विज्ञान और दोनों प्रकार का देखो, यह बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के जगत में मानो यागों का बड़ा व्यवधान होता रहा है विचार-विनिमय क्या देखो, भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक और भौतिक दोनों को मानो एक सूत्र में लाने का सदैव प्रयास किया है तो आओ मेरे प्यारे! ऋषि याज्ञवल्क्य अमृतम ब्रह्मा ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु यह हमने आपका वाक स्वीकार कर लिया है परन्तु हम यह जानना चाहते है प्रभु हम याग कैसे करें हमें याग का कर्मकाण्ड नहीं आता अब तक तो उस समय महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले क्या यज्ञशाला हो और यज्ञशाला का नहीं समन्वय मानो देखो, वह पृथ्वी से होता है और यह प1ृथ्वाम भूतप प्रह्ना मानो यज्ञशाला विधि विधान जैसे परमात्मा ने ब्रह्माण्ड की रचना की है और ब्रह्माण्ड देखो, और जैसे दिशाओं

का विधान है ध्रुवा और ऊर्ध्वा और मानो देखो, अमृतम प्राची दिक इत्यादियों का जो दिशाओं का व्यवधान होता है उसके आधार पर तुम्हारी यज्ञशाला खम्बों वाली होनी चाहिए अष्ट खम्भों वाली होनी चाहिए जो मानव के शरीर का निर्माण किया मेरे देव ने और शरीर रूपी जो यज्ञशाला है इसमें इसको संचालन करने वाली आत्मा है ऐसे ही ब्रह्माण्डश्र को संचालन करने वाला वह परमात्मा स्वयं ब्रह्म बन करके बेटा! इसको संचालन कर रहा है इसी प्रकार की मैं याज्ञिक बनू और यज्ञशाला में खम्बे होने सजातीय होने चाहिए प्रकृति के तत्त्वों से सजातीय हो जाए मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह कहा अम्ब्रह और उसमें उद्गीत देखो, नाना प्रकार का साकल्य हो और साकल्य में तीन चार प्रकार का साकल्य होता है मानो जैसे मधु भिष्ठ पुष्ठ और रोग नाशक यह चार प्रकार के पदार्थ होते है तुमे अग्नि में आहुति देना प्रारम्भ करो और पूर्व कहो प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो मानो देखो, प्राण तो करोड़ो परमाणु देखो, आन्तरिक जगत से जा करके बाह्य जगत में प्रवेश करता है और बाह्य जगत से ला करके आन्तरिक जगत में मानो युक्तियों में प्रवेश कराता रहता है इसी प्रकार ज्ञान निरीक्षण देखो, दृष्टिपात करता है और मुनिवरों! देखो, ब्राह्मणे अपानम ब्रह्मा देखो, अर्ध्वा में ध्रुवा में गतिवान बनाना यह सर्वत्र उदान का क्रियाक्लाप माना गया है समान मेरे प्यारे! जो सामान्यता को दृष्टिपात करने वाला है और इसी प्रकार उदानम ब्रह्मा व्रतम जो चित्त का मण्डल है इसमें नाना जन्मों के संस्कार विद्यमान होते है वह उदान मानो देखो, चित्त के मण्डल में प्रवेश हो जाता है जहाँ मन बुद्धि, चित्त और अहंकार को साम्यावस्था में अपने को धारण करता रहता है आज में बेआ इसको गम्भीर क्षेत्रों में नहीं ले जा रहा हूँ केवल यह ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज हे ब्रह्मचारियों तुम इस प्रकार का साकल्य ले करके हूत करो और आध्यात्मिक और भौतिक दोनों का समन्वय करते चले जाओ मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु यह वाक् जब अपनी माता की लोरियों का पान करता था तो माता मुझे इन वाक्यों का वर्णन कराती रही है और जब आचार्य कुल में शिक्षा अध्ययन करने लगे आचार्य ने भी हमें यह वर्णन कराया हम यह जानना चाहते है प्रभु मानो यह सुविधा हमें न प्राप्त हो न तो हमारे द्वारा साकल्य हो और न मानो यज्ञशाला हो हे प्रभु हम याग कैसे करे तो उन्होंने कहा यदि यह वस्तु न हो तो तुम मानो देखो, अग्नि अग्नि को प्रदीप्त करके मानो तुम कहो अपानय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो क्योंकि यह जो अग्नि है यहीं देवताओं का मुख्य माना गया है मुखानम ब्रह्मा देवतम ब्रह्मे मानो देवताओं को जो तृप्त करने वाला है वह अग्नि देव है इसीलिए अग्नि की तुम प्रार्थना करो और अग्नि तेजोमयी कहलाती है यही अग्नि है जो मानो देखा सूत्र का कार्य करती रहती है तो अग्नि के ऊपर तुम प्रायः विचार विनिमय करते हुए अग्नि के मुखारबिन्दु में तुम समिधा को कहो प्राण, आगान, उदान, समान, व्यान मानो इस प्रकार तुम हुत करने के लिए तत्पर हो जाओ यह अग्न्याधान कहलाता है अग्नि में समिधाओं के द्वारा तुम अग्नि प्रदीप्त करो यह मानो देखो, अग्नि अन्तः करण की अग्नि और यह बाह्य अग्नियों का दोनों का जब समन्वय हो जाता है तो हमारा देवत्व जागरूक हो जाता है हम देवताओं के स्वरूप में वर्णन करने लगते है मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया उन्होंने कहा प्रभु यह वाक भी हमने श्रवण किया माताओं के मुखारबिन्दु से आचार्य के बाल्यकाल में जब गुरुदेव याग करते थे तब मानो देखो, उन्होंने हमें यह वर्णन कराया था हे प्रभु कहीं ऐसा हो क्या यह अग्नि भी न हो हम याग कैसे करें उन्होंने कहा यदि अग्नि न हो तो मानो देखो, तुम जल को अंजलि में लो और कहो प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा समानाय स्वाहा उदानाय स्वाहा कह करके तुम हूत करना प्रारम्भ करो मानो देखो, वेदमन्त्र है और वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए

ओर जल को अंजलि मे ले करके स्वाहा उच्चारण करो क्योंकि स्वाहा उच्चारण करने से वायुमण्डल पवित्र बनता है और महानता आती है अपने आनन्दित जगत में यह अन्तःकरण ब्रह्मा यह भी पवित्रतता को प्राप्त हो जाता है तो हे देखो, हे ब्रह्मचारियों तुम मानो देखो, जल को अंजलि में ले करके क्योंकि जल यह पिण्ड का मूल बना हुआ हे यदि जल नहीं होगा तो इस संसार का मानो देखो, तरल पदार्थ भी उत्पन्न नहीं होगा और तरलता नहीं होगी तो पिण्ड का निर्माण नहीं होगा मानो देखो, जैसे अग्नि तेजोमयी है और जल मानो तरलत्व कहलाता है इसमें अपने में विचार-विनिमय प्रारम्भ करो मानो देखो, इसी प्रकार अमृतम ब्रह्मा यह जल को अंजलि में ले करके तुम हुत करो और हूत करके कहो क्योंकि जब माता के गर्भस्थल में हम जब विद्यमान होते है तो वहाँ जल ही तो होता है माता से यदि प्रश्न किया जाता है हे माता जब हम जैसे शिशु तेरे गर्भ में मानो परिणीत होते है तो मानो तेरे गर्भ में ओढ़न क्या है आसन क्या है तो उस समय माता को तो प्रतीत नहीं परन्तु ब्रह्मवेत्ता देखो, वेद का ऋषि कहता है क्या देखो, यह जल ही ओढ़न है और जल ही बिछौना है और जल ही पांशे बने हुए है मेरे प्यारे! जो शिशु माता के गर्भ में जल में विद्यमान रहता है जल नाम ब्रह्मा ऋतम देखो, ब्रह्माण कृते मानो वही तो आपो बन करके बेटा!, हमारी रक्षा कर रहा है पालना कर रहा है हमें मानो देखो, महानता में परिणीत कर रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, परमाणम ब्रह्मा विश्ववास्तम ब्रह्मे तो इसीलिए जल को अंजलि में ले करके तुम याग करो परन्तु यज्ञदत ब्रह्मचारी से न रहा गया यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु हम यह जानना चाहते है प्रभु मानो कहीं ऐसी स्थली पर चले जाएं जो हमें जल भी प्राप्त न हो तो हम कैसे याग करें उन्होंने कहा तुम पृथ्वी की रज को अंजलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्याणाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और देखो, दानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो जिससे तुम प्राण हो तो गुरुतवत्य है प्राण ही तो आहार कर जाता है प्राण ही मेरे प्यारे! भक्षणं ब्रह्मा यह ही संसार को निगल जाता है मेरे प्यारे! प्राण ही देखो, जो यह संसाय प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है प्राण ही मेरे प्यारे! अमृत्व का मूल कहा जाता है तो विचार आता है जब हम पृवि की रज को ले करके क्योंकि पृवि पिण्ड का मूल बना हुआ है माता के गर्भस्थल में बेहारजस मानो देखो, रेचस्तव भी रजतव भी है मुनिवरों! देखो, यदि उसमें सर्वत्रता विद्यमान है औश्र वह गुरुत्व पदार्थ विद्यमान है गुरुत्व, तरलत्व, तेजोमयी यह तीनों प्रकार के परमाणुओं से बेटा! पिण्डों का निर्माण होता है जैसे माता के गर्भस्थल में पिण्ड बनता है और वह पिण्ड बन गया है परन्तु उस पिण्ड का निर्माण करने वाला जो चैतन्य देव है मेरी भोली माता को ज्ञान नहीं होता है कौन निर्माण कर रहा है कौन निर्माण वेत्ता है मेरे पुत्रों! देखो, माता के गर्भ में जब पिण्ड का निर्माण होता है तो निर्माण ब्रह्मा देखो, वह अपने में रचनाकार जो प्रभु है महान है बेटा! वही तो बुद्धियों का निर्माण करता है मानव के मन मस्तिष्क में बेटा! हृदय होता है वह हृदय की प्रतिमा का भी जन्म उसी के कारण होता है और बहत्तर करोड़ बहत्तर लाख दस हजार दौ सो दौ नाड़ियों का निर्माण हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, वह माता के गर्भस्थल में पिण्ड बनता है मानो रज के कारण वह अमृतम देखो, पृथ्वी की रज को ले करके तुम कहो प्राणाय स्वाहा प्राण जब गति करता है तो रज के परमाणुओं को ले करके करता है और जितने भी मानों देखो, यह संसार की रचना है यह अखण्ड बने में मानम ब्रहे यह भी तीनों के कारण है जैसे मुनिवरों देखो, यह पृवि का पिण्ड बना हुआ है और एक पिण्ड नहीं है बेटा! अनन्य पिण्ड बना हुआ है और एक पिण्ड नहीं है बेटा! अनन्य पिण्ड माने गये है इस प्रकार के मानो देखो, नाना पृथ्वीयों के पिण्ड बन करके एक सूर्य पिण्ड में प्रवेश कर रहे है और सूर्य मानो एक पिण्ड है परन्तु अग्नि प्रधान है इसी प्रकार देखो, वह पिण्ड बन करके वही वृहस्पति भी पिण्ड कहलाता है और ध्रुव भी पिण्ड के रूप में विद्यमान है

यह सर्वत्र एक पिण्ड रूप बना हुआ है जो सर्वत्र एक जगत है नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की एक माला बनी हुई है बेटा! और वही माला मानो देखो, किसी सूत्र में पिरोई हुई है उस सूत्र को हमें चिन्तन में लाना है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवों यह ब्रह्माण्ड एक पिण्ड के रूप में दृष्टिपात आ रहा है नाना प्रकार के पिण्ड है एक लोक दूसरे में हर दूसरे लोक को प्रवाहित कर रहा है सौर मण्डल एक सौर मण्डल एक सौर मण्डल को प्रभावित कर रहा है एक आकाश गंगा इसी आकाश गंगा को जन्म दे रही है और देखो, नाना आकाश गंगाओं के पिण्डों का अवृत बन करके अबन्तिका और देवत्व की आभा गुणगान गा रही है तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! याज्ञवल्क्य मुनि कहते है हे ब्रह्मचारी मानो देखो, इस प्रकार हम रज को ले करके पृथ्वी से हमारे पिण्डों के निर्माण होते है मानव का पिण्ड क्या प्रत्येक प्राणीमात्र क्या पिण्ड है चार प्रकार की सृष्टिया कहलाती है जैसे हमारे यज्ञ स्थावट है अण्डज है और जंगम स्वेदज यह चार प्रकार की सृष्टियों में जो पिण्डाकार जगत दृष्टिपात आता है वह सर्वत्र मानो देखो, इन ती प्रकार के परमाणुओं के कारण है देखो, जैसे तेजोमयी तरलत्व और गुरुत्व देखो, यह तीन अपने में परमाणु मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड में पिण्डों का निर्माण कर रहे है तो विचार आता है मुनिवरों! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नहीं कर रहा हूँकेवल यह एक परिचय दे रहा हूँ जो ऋषि अपने ब्रह्मचारियों को परिचय दिया करते थे देते रहते है बेटा! वह क्या ऋतम ब्रह्मा ब्रह्मचारी इसे कहते है यज्ञदता जिसको तुम रज को ले करके कहो प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा इसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड निहित रहता है मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना प्रगट की तो उस समय यज्ञदत ब्रह्मचारी नत मस्तिष्क हो करके बोले हे प्रभु हम यह जानना चाहते है मानो जब अग्नि और जल और पृथ्वी भी न हो तो हम याग कैसे करें भगवान तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा क्या तुम अपनी अÚजली को लो और अÚजलि को इस तरह प्राणात करते हुए मानो देखो, कहो प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा, व्यजाय स्वाहा कह करके मानो वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया जाए कहो आनम ब्रह्मा अग्नम दिव्यम ब्रह्म ऋतम देवा अग्नम देवाम ब्रह्मा वसुतम ब्रीही ऋता मानो देखो, इस प्रकार वेद मन्त्रों का उद्गीत हो और स्वाहा कह करके मानो देखो, अपनी अंजलि में प्रवेश करते रहो तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाने से वायु मण्डल भी तुम्हारा पवित्र होगा और तुम्हारे मनो का अनुष्ठान पवित्र बनेगा जैसे मुझे स्मरण आता रहता है कागभुषण्ड जी की वार्त्ताएं कागभुषण्ड जी बेटा! जब अनुष्ठान करते थे तो महर्षि लोमश मुनि की अध्यक्षतता में मानो देखो, बारह-बारह वर्ष के अनुष्ठान करते रहे है अनुष्ठान का अभिप्रायः यह है क्या वह मुनिवरों! देखो, कहीं वायु का सेवन करते हैं कहीं मानो जल का सेवन करके अने जीवन का निर्वाह कर जिससे मन पवित्र हो जाए और मन और प्राण का दोनों का समन्वय दोनों मानो एक ही सूत्र में बन करके बेआ उसे धारण करें तो आओ मेरे प्यारे! मैं तो तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया विचार विनिमय क्या हमें विचारना है कि हम सूत्र के सूत्रित बने जिस सूत्र को धारण करके हमारा जीवन पवित्र और महानता में परिणीत हो करके हम वसु बन करके इस सागर से पार होने का प्रयास करें तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञदत ब्रह्मचारी इन विवेचनाओं को पान करके अपने में शान्त हो गये और उन्होंने कहा सान्तवना मन मस्तिष्क को एकाग्र करके जब वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया जाता है और यह संसार रूपी यज्ञशाला के रूप में हम इसे अपने में दृष्टिपात करते हैं तो याग अपने में वसु कहलाता है और वसु बन करके ही हमारा जीवन मुनिवरों! देखो, पवित्रता को प्राप्त हो जाता है आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ केवल यह कि हमारा जीवन हमारी मानवता मानो देखो, याग से समन्वय रहती है और हमारे याग दो प्रकार के माने गये है एक मानो आन्तरिक है और बाह्य जगत है दोनों प्रकार के यागों का बेटा! उन्होंने व्यवधान

किया है इसीलिए आत्मान भूतम ब्रह्मे देवा आत्मा का जो लोक है वह पञ्च महाभूत है और बाह्य जगत भी पंच महाभूतों से निर्धारित हो रहा है और प्यारे देखो, जब आन्तरिक आत्मा इस शरीर में विद्यमान है यह शरीर पंच महाभूतों से निर्माणीत है और बाह्य जगत् भी पंच महाभूतों से निर्माणीत हो रहा है तो मानो उस बाह्य जगत वाले को ब्रह्मा देखो, अपने में वर्णन करता हुआ देखो, उसका पालन कर रहा है संचार कर रहा है और इस मानव शरीर को आत्मा संचालित कर रहा है तो दोनों एक दूसरे के पूरक बन करके और वह उस वास से देव बन करके इसकी उपासना करते रहते है तो विचार-विनिमय क्या आध्यात्मिक और भौतिकवाद को दोनों को एक सूत्र में लाने का ऋषियों ने प्रयास किया है इसीलिए याग भी अपने में एक सूत्र में लाने का मानो लाने का प्रयास किया और आध्यात्मिक याग जो है जिसमें योगी अपने में दृष्टिपात करता है मेरे प्यारे! देखो, योगी जब पंच महाभूतों को आत्मा का ही लोक स्वीकार करता है तो आत्मा का लोक और भौतिक पन ब्रहे भौतिक मानो देखो, पदार्थो का दोनों का समन्वय करता हुआ और वह उसी में रत्त हो करके बेटा! सागर से पार होने का प्रयास करता है तो आओ मेरे प्यारे! वेद का मन्त्र कहता है सम्भूति लोकाम वाचन ब्रह्मे लोकम ब्रह्रे वर्णा स्वस्ति मेरे पुत्रों! देखो, वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा है और उस मानो परमपिता परमात्मा उस वसुन्धरा के गर्भ में हम सब विद्यमान है हम इस प्रकार अपने जीवन को उद्धृत करते हुए और जीवन को महान बनाते हुए इस सागर से महान होने का प्रयास करें आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कहता है हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए और याग के ऊपर ऋषियों ने जो अपना मन्तव्य दिया है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य दिया क्या याग में मानो देखो, अग्नम ब्रह्रे पदार्थो के द्वारा संसार के पदार्थो के द्वारा याग करो वह न हो की अग्नि और अग्नि भी न हो जल है और जल न हो तो मानो आपो है आपो न हो तो जल अमृतम गुरुत्व परमाणु है यह विज्ञान में बेटा! तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है मानो तेजोमयी तरलत्व और गुरुत्व इन तीनों परमाणुओं को एक दूसरे में समावेश करता हुआ वह नाना यज्ञों का निर्माण करता है और ऊर्ज्वा के साथ में सूर्य की ऊर्ज्वा के साथ में यन्त्र गमन करते रहे है तो आज बेटा! मैं तुम्हें वैज्ञानिक क्षेत्र में नहीं ले जा रहा हूँ केवल तह क्या याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब यह निर्णय दिया तो ब्रह्मचारी यज्ञदत मानो अपने में मौन हो गये और मौन हो करके ऋषि के चरणों में ओतप्रोत हो गया उसने कहा प्रभु आपको धन्य है आपको भगवन देखो, आप मनम् ब्रह्मे बड़े सौभाग्यशाली है जो आप जैसे महापुरुषों का हमें सम्पर्क प्राप्त हुआ है हे प्रभु आपको धन्य है यह उद्गीत गा करके बेटा! अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए तो मेरे पुत्रों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा क्या यह याग वसु है और इसमें प्रत्येक प्राणी वशीभूत रहता है इसी में वसता रहता है यदि ऊर्ध्वा में कर्म पवित्र कर्म उनका नाम याग है और मुनिवरों! देखो, याग देखो, पवित्र कर्म है जो मानव वसेगा इसीलिए इसका नाम वसु है और वसु की हमें पूजा करनी है यह है मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या नित्यप्रति बेटा! देखो, गृह हो चाहे विद्यालय हो चाहे शब्द हो परन्तु देखो, अपने में एकत्रित हो करके नैतिकतता को विचारधारा अवश्य में एकत्रित हो करके नैतिकता की विचारधारा अवश्य मानव के समीप होनी चाहिए जिससे बेटा! मानव अपने में ज्ञानी बन करके बुद्धिमता को धारण करता हुआ इस सागर से पार हो जाए यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की अराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें यह बेटा! आज का वाक अब शेष चर्चाए कल प्रगट करेंगे अब

वैदिक मन्त्रों का उद्गीत होगा।

९ अलंकार और इतिहास 26 01 1992

जीते रहो! देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भांति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहां परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद-वाणी में उस परमपिता-परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता-परमात्मा अनन्तमयी है और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। प्रत्येक मानव उस परमपिता-परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करता रहा है। परन्तु वह इतना अनन्तमयी है, क्या मानव जब अन्वेषण करता करता दूरी चला जाता है तो उनके उच्चारण में वह मौन हो जाता है और वह एक वाक् कहता है यज्ञनम बृही वाचनयम प्राह्म अनन्तम प्रीणी व्रस्ता वेद का वाक् कहता है कि वह अनन्तमयी है और वह मानो देखो वह दृष्टि में आने वाला नहीं। तो इसीलिए उस परमपिता-परमात्मा का जो ज्ञान है अथवा उसका जो अनन्तमयी विज्ञान है वह इतना महान और पवित्रतम कहलाता है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से बेटा! अपने में अनुष्ठान करता रहा है और उसके जानने के लिए वह जानता-जानता भी मौन हो जाता है। तो इसीलिए हम उस परमपिता-परमात्मा को अनन्तमयी स्वीकार करते हुए अनन्तमयी अपने में विचार विनिमय करते हुए हम मौन हो जाते है। हम मन स उस परमात्मा का जानना चाहते है प्राणम ब्रह्मं द्वितीय मन्त्र को कहता है क्या हम मनों में पाना तो चाहते है परन्तु पाया नहीं जाता। वह कहता है चक्षुर्मे-पाहि वह चक्षुओं से भी हम उसे नहीं जान सकते, वेद-मन्त्र कहता है श्रोत्रम्में पाहि मानो हम श्रोत्रों से भी उसको नहीं जान पाते, वह कह रहा है घ्राणं में तर्पेयामि हम घ्राण-इन्द्रियों से भी उसे जानना चाहते है परन्तु उसे नहीं जाना जाता। बेटा! देखो वह कहता है अश्वतम वाणं ब्रह्में वाणी से उसको जानना चाहते है तो नहीं जाना जाता। मेरे प्यारे! देखो उसे कैसे जाना जाता है? जब वेद-मन्त्र यह कहता है क्या उसको किसी इन्द्री से नहीं जाना जाता। तो वेद-मन्त्र कहता है सन्नम ब्रह्में ऋतम वाचनमन ब्रह्मां देवों असुस्तम क्या उसको जो मानव पाना चाहता है वह अपने को शान्त करने से प्राप्त होता है। जब मेरे प्यारे! देखो जब इन्द्रियों का विषय जान करके, चक्षुओं का विषय जानने के पश्चात् वहीं चक्षु दिशाएं बन जाती है, वाणी को जाना जाता है तो वाणी शब्दायमान अन्तरिक्ष का रूप बन जाता है। मेरे प्यारे! घ्राणम्में-पाहि यह घ्राण से जो पाना चाहते है उसे पाने के पश्चात वही घ्राणी मानो पृथ्वी का रूप अपने में धारण कर लेती है। मेरे पुत्रों! देखो जो चक्षु से जाना जाता है वह चक्षु जानने के पश्चात् अग्नि का रूप बन गये है। मेरे पुत्रों! देखो जो त्वचा से जानना चाहता है वह वायु बन गया। पंच-महाभूतों की क्रिया पंच-महाभूत के रूप में प्रायः जब परिणीत हो जाती है तो हम कैसे जाने वह तो व्यापक रूप बन गया है, अपने-अपने तथ्यों में वह मानो परिणीत हो गया उसी में रत्त हो गया है। तो हम परमात्मा को मानो कैसे जाने? तो बेटा वेद-मन्त्र कहता है आत्माम में तर्पम ब्रह्में आत्माम देवा क्या आत्मा को जानना चाहिए जो हमारे अन्तर्हृदयों में विद्यमान है और बेटा! उस समय उस बाल्य का अपन तन स आलिंगन कर लेती है और वह उसकी क्षुधा को लोरियों के द्वारा पान करा देती है उसके उदर की पूर्ति हो जाती है, वह तृप्त हो गया है। तो इसी प्रकार मानव भी अपने में तृप्त होता रहता है। यदि वह आत्मा को जान लेता है कि हमारे शरीर में कोई चेतना है और हम उस चेतना से कटिबद्ध है।

अलंकार व साहित्य में भिन्नता है

जैसे मुनिवरो! देखो हमारे यहां वैदिक-साहित्य में दो प्रकार की प्रतिभा मानी जाती है। एक अलंकारिक

है एक साहित्यिक चर्चाएं होती है। बेटा! देखो साहित्यिक वह चर्चा होती है जैसे राजा हुआ परन्तु राजा का, राजा के जो क्रियाकलाप हैं राजा की जो मानो मन्त्री गणों के जो क्रियाकलाप है वह सर्वत्र मानो साहित्यिक इतिहास के रूप में परिणीत हो जाता है और एक अलंकार होता है। अलंकार उसे कहते है जिस अलंकार में मानो प्रकृति की पुट लगी रहती है और प्रकृति की पुट लगने से मानो देखो एक अलंकार बन गया है और अलंकार को जब हम साहित्य में, इतिहास में परिणीत कर देते है तो न तो, साहित्य भी दूषित है और देखो वह अलंकार भी दूषित हो जाता है। दोनों के दूषित होने पर मानो देखो साहित्य की प्रतिभा समाप्त और अलंकार की मानो देखो अपने में उसकी प्रतिभा भी नष्ट हो जाती है। जैसे मुनिवरो! देखो हमारे यहां साहित्य में न ले करके उसी वाक् को हम अपने में मानो अलंकार में लेते है। जैसे मुझे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे एक वाक वर्णन कराया था कि अगस्त-मुनि की चर्चा मुझे स्मरण कराई कि देखो जैसे हमारे यहां कहा जाता है कि उसी समय जब वह खारी बना करके और वह क्यों बनाया? क्या टटीरी के दोनों पुत्र समुद्र ने अपनी तरंगों में तरंगित कर लिए थे तो उस समय मानो देखो वह बड़ी व्याकुल हो रही थी और व्याकुल होने से देखो उन्होंने समुद्र का पान कर लिया और उनके दोनों पुत्रो की रक्षा हो गई। तो यह मानो एक अलंकार है यह इतिहास, ये साहित्य नहीं हो सकता। तो विचार आता है बेटा! देखो अमृतम ब्रह्मां सर्वश समुद्र को पान करना, चाहे वह मानो जगत-रूपी-समुद्र हो, चाहे वह मानो जलाशय का समुद्र हो दोनों का पान करना मानो देखो अलंकार में सिद्ध होगा यह इतिहास में सिद्ध नहीं हो सकेगा। तो इसीलिए देखो साहित्य और इतिहास मानो देखो अपने में अलंकारों में मानो देखो दोनो एक दूसरे के सत्यत्व को धारण करते रहे है परन्तु जब दोनों का समन्वय कर लिया जायेगा तो दोनों को समन्वय करते हुए दोनों की प्रतिभा भी नष्ट हो जाएगी। क्योंकि अलंकार को यदि हम इतिहास में परिणीत कर देते है तो इतिहास भी नष्ट हो जाता है इतिहास में एक अपवाद बन जाता है और यदि इतिहास को हम अलंकार में परिणीत करते है तो अलंकार भी एक अपवाद में परिणीत हो जाता है। हमारे यहां वैदिक-साहित्य में यह आता रहा है, विचारको के मध्य में यह आता रहा है, जब अलंकार को उन्होंने वेद-मन्त्रों से गठित किया और वेद-मन्त्र में एक मन्त्र आता है अमृतम अगस्ताम भूतम क्रति देवा अन्वेब्रह्माहा रक्षाम भूतम ब्रह्मह्ये अमृति देवत्वाम मनाः वाचम मनोगातम मनि वृणा सुति देवा बेटा! यह जब वेद-मन्त्र स्मरण आता है और वेदमन्त्र यह कहता है क्या अगस्ताम भूते मानो देखो मानो उस समय आत्मा का नाम टटीरी बन जाएगा आर जब टटीरी वाहा अन्य तत्वन्य ब्रह्महे मानो देखो इसमें धातु और अपने स्वरूप को जानना होगा। तो मुनिवरो! देखो उस समय आत्मा के दो पुत्र है और वह कुछ जिससे मानो देखो आत्मा का जगत बनता है वह दोनों पुत्र है इसको मन और बुद्धि कहते हैं। मन, बुद्धि जब इस संसार रूपी जगत में मानो जब वह भ्रमित हो जाते है मेरे प्यारे! देखो मन भी भ्रमित है और बुद्धि भी भ्रमित हो रही है तो मानो देखो उसको संसार रूपी समुद्र में दोनों भ्रमित हो गये। दोनों की मानो रक्षा कैसे हो, तो मुनिवरो! देखो रक्षा का प्रसंग आता है तो उस समय कौन रक्षा करें, तो मुनिवरो! उस समय विवेक जागरूक होता है। जब मुनिवरो! देखो विवेक जागरूक हो जाता है। तो उस समय टटीरी मानो देखो विवेक रूपी अमृताम मानो देखो समुद्र को शान्त करना चाहता है। उस समय आत्माम भूतम ब्रह्में मेरे प्यारे! देखो विवेक रूपी जो अगस्तम ब्रह्महे अगस्त उत्पन्न होता है और अगस्त मुनिवरो! देखो विवेक से ही इस संसार को खारी बना दिया जाता है। मेरे प्यारे! उपस्थ-इन्द्री के द्वारा त्यागने का जो विचार आता है बेटा! देखो वह विवेक से आता है। वह जितने काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि जो यह इन तरंगों का जो समुद्रों से तरंगे उत्पन्न हो रही है, प्रकृति से इनको जब वह

अपने में धारण कर लेता है तो धारण करने से मुनिवरो! देखो विवेक उत्पन्न करके अमृतम देखो यह संसार न होने के तुल्य बन गया। कैसे बन जाता है जैसे हमारी इन्द्रियां मानो देखो इन्द्रियों के ऊपर जब संयम पाना चाहते है तो वही रूप बन गई जिससे वह इन्द्रियों का जन्म हुआ था जैसे नेत्रों का जन्म अग्नि से हुआ है, श्रोत्रों का जन्म दिशाओं कोई गोलक नही रहा है, केवल गोलक में ही बन रह गये है। परन्तु इनका जो स्वरूप है कोई स्वतः अग्नि बन गया, कोई दिशा बन गया, कोई आपो बन गया कोई अन्तरिक्ष बन गया अमृतम मेरे प्यारे! अपने रूप में प्रवेश कर गया। तो जब यह अपने इनको जान करके इसी प्रकार काम को जानने का प्रयास किया गया तो काम मुनिवरो! देखो जगत में परिणीत हो गया उसका रूप मानो देखो कामाबृही कमकक्षीया बन गया। तो मेरे प्यारे! यदि हम मोह को जानना चाहे तो मोह मुनिवरो! देखो आत्मा से जब विवेक से मोह हो जाता है तो मोह भी एक विवेक बन गया। इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो लोभ का हम अनुष्ठान करते है तो वह अहंकार के रूप में परिणीत हो गया है और वही अहंकार से मुनिवरो! देखो संसार के पिण्ड बनते है और पिण्ड को विकृत करने के पश्चात् बेटा! देखो वहीं अणु और परमाणु के रूप में परिणीत हो गया। मेरे प्यारे! देखो यदि हम रसना के जब आपो में प्रवेश करते है वही आपो मुनिवरो! देखो प्राण रक्षक बन गया है और सीमा में वही प्राणों का रक्षक है और वहीं मुनिवरो! देखो वही वासना बन करके हमारे जीवन का विनाश होने लगता है। तो बेटा! देखो अपने-अपने स्वरूप में जब प्रत्येक स्वरूप अपने स्वरूप में प्रवेश हो गया है। तो मेरे प्यारे! देखो अपना कहां ब्रह्मंगे ब्रह्माहा ऋतम तो बेटा! देखो यह विवेक से मुनिवरो! देखो अगस्त बन करके और विवेक रूपी उत्पन्न हो करके अगस्त मेरे प्यारे! संसार को निगलता चला गया और संसार में जो आत्मा और मन भ्रमित आत्मा और देखो बुद्धि दोनों पुत्र भ्रमित हो गये थे उनका भ्रम शान्त हो गया। तो मेरे प्यारे! देखो अपने स्वरूप में प्रवेश हो करके मेरे पुत्रो! देखो केवल बेटा! तो जगत से तुम पार हो जाओगे। इस जगत में अपने स्वरूप को जानने से अपनी इन्द्रियों के स्वरूप को जान करके मानव सागर से पार होने का प्रयास करता है। मेरे प्यारे! देखो मृत्युंजय बन जाता है। जब मृत्यु को जान लिया जाता है क्या यह मृत्यु क्या है तो बेटा! देखो वह मृत्युंजय बन जाता है। मृत्यु को जब तक जानते नहीं है तब तक मानो हम उसी में भ्रमित रहते है। मुनिवरो! देखो मृत्यु क्या है? विचारने से प्रतीत होता है क्या मृत्यु अपने में कोई भी वस्तु नहीं है। मृत्यु केवल अज्ञान और न जानने का नाम मृत्यु है, और जब जान लिया जाता है तो बेटा! देखो मृत्यु का, मृत्यु का स्वरूप ही मानो बना रहता है, न जान करके बना रहता है और जानने से मानो देखो वही मृत्यु यमराज बन गया और वही यमराज मेरे प्यारे! प्राण के रूप में प्रवेश कर गया और वहीं प्राण मुनिवरो! देखो आयु के देने वाला है। बेटा! जब मैं इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करता हूं तो प्रायः देखो यह संसार एक अलंकार के रूप में दृष्टिपात आने लगता है। मैं यह कहा करता हूं कि संसार में अलंकार को भिन्नता दी जाये और देखो इतिहास और साहित्य को भिन्नता दी जाये। यदि दोनों भिन्न-भिन्न रहेंगे तो मूमर्वा स्वरूप को जान सकेंगे और यदि दोनों को नहीं दे सकेंगे हम तो मुनिवरो! देखो अप्रतम वह दोनों भ्रमित हो जायेंगे। जैसे मेरे प्यारे! देखो मुझे महानन्द जी ने एक समय मुझे वर्णन कराया कि अहिल्या के सम्बन्ध में एक चर्चा आई और अहिल्या का जो शब्द है वह अलंकारिक माना गया है। हमारे यहां वैदिक-साहित्य में जब अहिल्या के ऊपर विचार-विनिमय होता है तो अहिल्या नाम हम देवत्व में जाना चाहत है। तो यहा इन्द्र भी माना एक अलंकारिक भाषा में इन्द्राम तम ब्रह्महे देखो इन्द्र भी भगो वाला कहा जाता है। तो विचार आता है मेरे प्यारे! देखो गौ अमृतवही असुताम जब अहिल्या को मुनिवरो! देखो इन्द्र ने छला, इन्द्र ने अहिल्या को छल लिया और चन्द्रमा मानो द्वारपाल बन

गया। मेरे प्यारे! गौतम उसका स्वामी है, गौतम रात्रि का स्वामी है क्योंकि हमारे यहां जो भी अंधकार का स्वामी है उसका नाम या तो ज्ञान हो सकता है या भौतिक रूप में मानो देखो चन्द्रमा हो सकता है। तो दोनों क्योंकि रात्रि को रात्रि के अंधकार को, शृंगार को कौन भोगता है भोगतव्य करने वाला बेटा चन्द्रमा है और वह चन्द्रमा हमारे यहां चन्द्रमा को गौतम के रूप में वर्णित किया गया है जो गौ का स्वामी है। गौ नाम रात्रि का है और जो रात्रि को मुनिवरो! अपने में धारण करने वाला है वही मानो देखो चन्द्रमा के रूप में परिणीत किया गया है। विचार आता है बेटा! इन्द्र ने जब अहिल्या को छला अब किस समय तक मानो देखो गौतम उस भोगतव्य को प्राप्त करता रहता उसी समय मानो देखो जब रात्रि का अन्तिम चरण आया तो देखो चन्द्रमा अमृतम बन गया और मुनिवरो! देखो वह इन्द्र बन करके वह रात्रि को उन्होंने ने अपने में धारण कर लिया। जब रात्रि को धारण, रात्रि का भोग कर लिया उसको छल लिया मेरे पुत्रो! देखो वह सहस्रो भगो वाला इन्द्र बन गया बेटा! सहस्र भग नाम हमारे यहां भगो के कई प्रकार के पर्यायवाची माने गये है। भग मानो देखो चन्द्रमा की क्रान्तियों को भी भग कहा जाता है जो गति करती है जो मानो देखो गतिवानम ब्रह्मां जो शक्ति के अनुसार जा करके सीमित हो जाती है। इसी प्रकार सूर्य को हमारे यहां इन्द्र कहा गया है इसकी कान्तियों को और देखो ज्यातियों का नाम भग कहा जाता है। इसीलिए मुनिवरो! देखो वह शक्तिशाली है तो इन्द्र को, इन्द्र सहस्र भगो वाला बन करके मेरे पुत्र! देखो यह प्रकाशमान बना दिया रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लिया उन भगो में परिणीत करते हुए मानो उसे अपनाने का प्रयास किया। तो मेरे प्यारे! देखो अहिल्या नाम हमारे यहां देखो रात्रि का आता है। जहां प्रकरण आता है यहां अहिल्या नाम मेरे प्यारे देखो! वह पृथ्वी को भी कहा गया है। हमारे यहां देखो जब पृथ्वी को अहिल्या कहा जाता है तो वज्र के तुल्य जो अहिल्या का वास होता हो उसी अहिल्या में मंगलम ब्रह्मे वर्णासुताम। तो मेरे प्यारे! देखो वह अहिल्या जब वज्र की थी तो वज्र की होने से मुनिवरो! देखो वह पत्थरम ब्रह्महा ऋतम देवाम भुखाम भूतम ब्रह्में मेरे प्यारे! देखो अहिल्या अमृतम पत्थर के तुल्य पड़ी हुई है मानो अहिल्या का उद्धार करने वाला मेरे प्यारे! कौन है? कृषक है। उस भूमि को अपने में मानो देखो उसमें अपना पुरुषार्थ करता हुआ गऊ के बछड़ों की बलि देता हुआ मुनिवरो! देखो पृथ्वी को सुयोग्य बनाता है और सुयोग्य बनाकर उसमें अन्न की स्थापना करता है, नाना प्रकार के खाद्यानों का उत्पन्न करने वाला है, तो उस समय बेटा! देखो इन्द्र नाम कृषक का है अहिल्या नाम पृथ्वी का है और चन्द्रमा मुनिवरो! देखो उसमें अमृत देता है और आपो मुनिवरो! देखो वह सूर्य की किरण जब टेढ़ी होती है तो मेघ-मण्डलों का जन्म होता है उससे वृष्टि होती है। वह इन्द्र बेटा! देखो नाना प्रकार की अपनी तीखी किरणों के द्वारा वृष्टि कर देता है और वृष्टि करता हुआ मुनिवरो! देखो वह कृषक अपने में प्रसन्न हो जाता है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! मैं बहुत नाना प्रकार की कन्तिया उत्पन्न हा जाती है। मेरे पुत्रो! देखो मुझे एक समय मेरे प्यारे! महानन्द जी ने वर्णन कराया क्या राम जब वन को जा रहे थे विश्वामित्र के साथ मानो देखो उन्होंने अहिल्या के पद दिया और वह वज्र मानो देखो स्वतः अहिल्या बन गया, ऐसा मुझे वर्णन कराया। परन्तु देखो ऐसा प्रायः नहीं है। वह ऐसा है कि देखो निषाद के राज में यह अहिल्या जैसी मानो देखो पृथ्वी पड़ी हुई थी वज्र के तुल्य। उन्होंने निषाद-राज से कहा हे निषाद! तुम्हारे राष्ट्र में यह अहिल्या इसी प्रकार है, परन्तु इसका उद्धार करो। तो उन्होंने देखो कृषकों के द्वारा उस भूमि को शुद्ध बनाया और शुद्ध बना करके मुनिवरो! देखो वह स्वत मानो देखो उसमें अन्न उत्पन्न होने लगा। वह सुयोग्यता में उसका सदुपयोग होने लगा।

तो मुनिवरो! देखो उस पृथ्वी का नाम अहिल्या बन गया। राम ने केवल इतना क्योंकि राम इस पृथ्वी के

विज्ञान को जानते थे क्या इसमें कितनी दूरी पर कौन सा खनिज है, कौन सा खाद्यान्न है इस प्रकार के परमाणुओं को बेटा! वह सूंघने के द्वारा, रज की सुगन्धि के द्वारा ही मानो उसकी जानकारी कराते रहते थे। तो मुझे स्मरण आता रहता है उनका जीवन मानो देखो इस प्रकार का जीवन था जिस जीवन की हम तुलना करने लगते है विज्ञान में जीवन रहता था और विज्ञान में मानो देखो परिणीत होते हुए उन्होंने बेटा! देखो विज्ञान के माध्यम से एक यन्त्र का निर्माण किया था जिस यन्त्र का नाम ''अहिल्या कृतिभा यन्त्र'' कहलाता था। जो बेटा! देखो पृथ्वी के दस-दस योजन के मुनिवरो! देखो खाद्य-पदार्थो और खनिज को जान लिया जाता था वह प्रायः उन्हें दृष्टिपात आती थी। तो मुनिवरो! देखो इस प्रकार देखो उनका विज्ञान अपने में बड़ा मार्मिक रहता। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, यदि हम अहिल्या को इस प्रकार का अलंकार न जान करके यदि उसको साहित्य में लिया जाता है तो साहित्य बेटा! उससे दूषित हो जाता है और इतिहास में त्रुटियां आ जाती हैं तो इसीलिए साहित्य और इतिहास मानो दोनों भिन्न रहने चाहिए।

परमाणुओं का संघर्ष

तो विचार-विनिमय क्या मेरे प्यारे! देखो मुझे बहुत सा विचार स्मरण आता रहता है। हमारे ऋषि-मुनियों की जो विचार धारा एक महानता में रही है वह बड़ी महावृत्तियों में रत्त होती रही है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! देखो परमात्मा का जो ज्ञान है अथवा विज्ञान है वह बड़ा अनन्तमयी माना गया है उसकी अनन्तता मानो देखो प्रत्येक वेद-मन्त्र हमें दर्शाता रहता है और विचार अपने में दर्शायमान करता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो जब एक-एक शब्द पर हम विचार-विनिमय करते है तो बेटा! यदि हम इन्द्रियों के शब्दों को ग्रहण करने लगते है। केवल श्रोत्र इन्द्रियों में जाते है तो श्रोत्र इन्द्रिया बेटा! देखो एक मानव की शब्द शब्दावलियों को वह अपने में ध्वनिवान होता रहता है। यदि वही ध्वनि और सूक्ष्मता में जाते है तो रात्रि छाई हुई है अहिल्या में अंधकार है परन्तु देखो जब वह उन ध्वनि को देखो श्रवण करता रहता है जो ध्वनि हो रही है वहां परमाणु अपने में संघर्ष कर रहे है। बेटा! जो शब्द है, जो प्रत्येक मानव के शब्द अन्तरिक्ष में रमण करते है, वायु मण्डल में प्रवेश करते है, बेटा! उनका संघर्ष होता है उन ध्वनियों को श्रवण करते रहते है।

अन्नाद

परन्तु और गम्भीरता में जाओगे तो मेरे प्यारे! देखो वह अब्रह्मताम जो मुनिवरो! देखो परमाणुओं का संघर्ष हो रहा है जिससे संसार अनुभव करता ह ता बटा! मस्तिष्क में एक स्वर ध्वनि हाती रहती है उसका स्वर संगम होता रहता है मानो देखो बाह्य-जगत के परमाणुओं का संघर्ष-आन्तरिक-जगत में जब प्रवेश होता है तो योगी-जन उसको अन्हाद कहते है। बेटा! वह अन्हाद जो स्वर संगम है वह अपने में बड़ा पवित्रत्व में रमण करता रहा है। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो साधक अपनी साधना में परिणीत होता हुआ और उसको अन्हाद के रूप में बेटा! प्रायः वह दृष्टिपात करता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो साधनावादी जो प्राणी होते है वह भी मानो देखो अपने शब्दों को अन्तरिक्ष में ले जाते है, कहीं द्यौ में ले जाते है कहीं मानो देखो संघर्षवर्तो में ले जाते है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! देखो आत्मा को पाना चाहते है परन्तु जब वह अन्हाद देखो ध्वनिया समाप्त हो जाती है तो बेटा! देखो! कही-कही आत्मा और परमात्मा की वार्ता प्रगट होती है, तो बेटा! देखो वह उन वार्ताओं को अपने में ही नहीं मानो देखो अनुभव का विषय बन जाता है। वह न तो ध्वनि बन करके रहता है न संघर्ष बन करके रहता है और न मेरे-पुत्रों देखो यह पंच-महाभूतों का नृत बन करके रहता है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! आज मैं तुम्हें गम्भीरता में नहीं ले जा रहा हूं केवल यह कि देखो जो अन्हाद है उसको

साधक-जन अपने में ग्रहण करते है और वह नद-नदियों के तट पर मानो देखो उससे भी उपराम हो जाते है। तो विचार-वेत्ता कहते है क्या मुनिवरो! देखो हम अपनी साधना में परिणीत हो जाये। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब बेटा कागभुषण्ड जी अपने में अनुष्ठान करते थे और कागभुषण्ड-जी बेटा! देखो यागाम भूतम ब्रह्में महर्षि-लोमश के कथानानसार उनकी आज्ञा पा करके उन्होंने बारह वर्ष का अनुष्ठान पवित्र बना, सघर्ष परमाणुओ का शुद्ध देवत्व बन गया और देवत्व बन करके बेटा! जब साधना करता है तो देवता बन जाता है। तो मेरे प्यारे! विचार आता रहता है हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रत्येक वस्तु को बड़ी गम्भीरता से चिन्तन में लाये है और उसको बाह्य और आन्तरिक दोनों जगत को उन्होंने विचारने का उन्होंने प्रयास किया है अथवा दोनों को विचारने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह जगत जितना यह साधना का क्षेत्र कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो मानव का जीवन भी एक जीवनम ब्रह्मह्मा वर्णसुतम यह देवत्व कहा जाता है इसमें देवता वास करते है। जैसे जालवी-ऋषि से एक समय महर्षि-प्रव्हाण ने कहा था कि प्रभु! आत्मा का लोक क्या है तो आत्माम भूतम प्रहवा पंचम-भूत तप प्रहे ऋषि कहता है, जालवी ने कहा कि पंच-महाभूत यहां आत्मा का लोक है आत्मा देखो इसमें वास करता है। यह पंच-महाभूतों का लोक है उसी से पांच-ज्ञानेन्द्रियां है, उसी से पांच-कर्मेन्द्रिया है, उसी से दस-प्राण है, उसी से मन-बुद्धि का अवद्येत होता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो यह सर्व जगत है जिस जगत को जानने से हमारे मानव जीवन में प्रकाश आता है और विचार आता है और ज्ञान की पूंजी मानो देखो एक ज्ञान रूप बन करके हम विवेक में परिणीत हो जाते है तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो विचारम ब्रह्मां वाचुस्तम देवा तो मेरे प्यारे! देखो हमें अलंकार को अलंकार रूप में विवेक युक्त हो करके दृष्टिपात करने चाहिए और परमात्मा का अनन्तमयी यह जो जगत है इसके ऊपर विचार-विनिमय करना, अन्वेषण करना और अपने में मृत्युंजय बनना मृत्यु से पार होने का, बेटा देखो हम प्रत्येक इन्द्रियों के ज्ञान आत्मा के लिए आत्मा का जो उत्सुकता है वह अनुशासन चाहती है और जीवन में एक महानता की प्रतिभा का जन्म होता है। तो बेटा! हम परमपिता-परमात्मा की अराधना करते हुए देव की महिमा का गुणागान गाते हुए और मुनिवरो! देखो उसकी प्रतिभा को जानकर के इस संसार-सागर से पार होने का प्रयास करना चाहिए। यह है, बेटा! आज का वाक्य अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि परमपिता-परमात्मा की आरामाना करते हुए, देव की महिमा का गुणागान गाते हुए इस संसार-सागर से पार हो जाए। यही बेटा! देखो आज का हमारा मन्तव्य है। आज के विचारो का अभिप्रायः क्या अलंकार और इतिहास दोनों को भिन्न-भिन्न रूप से विचारा जाएगा तो मानो वह ज्ञान की पूंजी बन करके मानव को अन्तरात्मा तक पहुंचाएगा। यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। ओ३म् देवा आभ्याम् मनु गायन्त्वा रथम् दिव्या वायाऽहाम्। ओ३म् तनुमन्थाः गाया रथम मां रथं ब्रह्मह्मा गाताऽहाम। ओ३म् यशश्चाम् ब्रह्मह्म भविता रेवम् भागा वायु रतम्। अच्छा भगवन्! दिनांक 26-01-1992 स्थानःमाछरा, मेरठ।

१० याग वसु है 29 01 1992

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है। उसके गुणों का हम सदैव गान गाते रहते हैं। क्योंकि वह वेदज्ञ है, प्रकाशक है, विष्णु है, पालक है और उसी की पालना से मानो गतिवान यह जगत हो रहा है, वह गतिवान भी है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र उस महान देव की महिमा का गुणगान गा रहा है। तो इसीलिए उस परमपिता परमात्मा को हमारे यहाँ पालक कहा जाता है। क्योंकि वह पालना के मूल में विद्यमान रहता है, और वही मानों शासक है शासक कर्त्ता उसे कहा जाता है। प्रत्येक मानव इसीलिए अनुशासन में परिणत होना चाहता है, और यह चाहता है कि मैं भी अनुशासित बनूं। मैं उदघृत हो जाऊं ओर वह नियन्त्रण में अपने जीवन को ले जाना चाहता है।

मनीषी

तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र यह प्रेरणा दे रहा है और प्रेरणा यह है कि हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसका यशोगान गाते रहे। क्योंकि यह संसार के एक-एक कण-कण में विद्यमान है, और यह ज्योतियों का ज्योति है, यागों का याग है। और प्रकाश भी प्रकाशक है। मानो यह नियमन कर रहा है। जैसे मानव का शरीर मानो मानव शरीर है। और मानव है, यदि मानव का शरीर है, और मानव है। तो यह बड़ा एक विचार वाक् है। तो मानव का शरीर और मानव मानव शरीर में जो विद्यमान होने वाला किसी स्थली पर रहता है। तो वह गमन करता है। इसीलिए उसे मानव कहा जाता है। शरीर एक यन्त्र माना गया है जिस यन्त्र में जैसे मानव का गृह है, और गृह स्वामी और गृह स्वामिनी, दोनों उस गृह में मानो देखो, अपने नाना विचार-विनिमय करते रहते हैं। अपने गृह को ऊँचा बनाने के लिए विचारते रहते हैं। जैसे विद्यालय है, और विद्यार्थी है। मानो विद्यालय उसे कहा जाता है। जहाँ विद्यार्थी आचार्य विद्यमान हो करके अपने मानव जीवन के लिए शरीर के संचालन करने के लिए और मानव को लाने के लाने के लिए, शरीर के संचालन करने के लिए और मानवता को लाने के लिए बेटा! देखो नाना प्रकार की विद्याओं का अध्ययन करते हैं। तो गृह और गृह स्वामी मानो दो वस्तुएं इसी प्रकार मानव और मानव का शरीर। तो शरीर मुनिवरों! देखो, वह गृह है और मानो मनन करने वाला एक मनीषी कहलाता है। तो उसको मनीषी कहते हैं, जो आत्मा के संरक्षण में रत्त रहता है। तो हमें देखो, उस मनीषी को विचारना है, और अपने इस मानव शरीर आत्मा का जो यह गृह है। इसी गृह में विद्यमान हो करके शरीर बेटा! विचार-विनिमय किया जाता है, और एकत्रित हो करके जैसे इसी में सबका, समूह का निर्माण होता है। मानो देखो, यह कौन-कौन-सी स्थलियों से इसका निर्माण हुआ है। मेरे प्यारे! देखो, यों तो और प्रकृति के सूक्ष्म और स्थूल द्रव्य माने जाते हैं। परन्तु सूक्ष्मता में उसमें मेरे प्यारे! देखो, दस प्राण हैं, और दस इन्द्रियां हैं। मानो देखो, जिसमें मन चतुष कहलाते हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार तो मानो यह चौबीस अवयवों वाला यह शरीर है। जब इस भवन का निर्माण होता है। तो इसमें परमपिता परमात्मा ने चौबीस खम्बों का ये गृह का निर्माण किया। शरीर रूपी मानो जो मन का गृह है। इसका निर्माण किया। इसमें मन, बुद्धि चित, अहंकार यह आन्तरिक जगत है, इसके अन्दर जगत है और मुनिवरों! देखो, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, बाह्य जगत माना गया है। दस प्राण है जो मानो देखो, प्रेरित हो करके, और इनको जानने वाला ही

मनीषी कहलाता है। तो बेटा! देखो, इस गृह का जो स्वामी है। वह मनीषी है और मनीषी उसे कहते हैं, जो मनन करता है। और जो मननशील है उसी का नाम मनीषी कहा जाता है।

तो विचार आता है कि बेटा! देखो, हमें मनीषी बनना है, मानो देखो, गृह और गृह स्वामी दोनों के ऊपर मुनिवरों! देखो, जब हम विचार-विनिमय करते हैं। तो मानो देखो, एक मनन करने वाला मनीषी और एक मानो शरीर जिस गृह में विद्यमान हो करके वह मनीषी बनना चाहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष इस सम्बन्ध में चर्चा नही करना चाहता हूँ। वेदमन्त्र इसको मनीषी कहता है। मनय अव्रता देखो, मनश्च प्रवाहा वेद का वाक् कहता है हे मानव! तू मनीषी बन। हे मानव! तू मानो देखो, शरीर रूपी गृह में विद्यमान हो करके तू अपने में मनीषी बन, मनीषी बन करके तू सागर से पार होने का प्रयास कर। मान औन अपमान रूपी सागर से पार होने का प्रयास कर मान और अपमान रूपी सागर में जो तरंगें उत्पन्न हो रही हैं। मानो देखो, कोई अपमानित कर रहा है, कोई मान कर रहा है। मानो देखो, ऐसा कोई मनीषी ऐसी स्थली को मंगलम् ब्रह्मा दोनों एक सामान्य जान करके तू मनीषी बन सकता है।

विष्णु की व्याख्या

तो मेरे प्यारे! देखो, मैं कई समय से तुम्हें विष्णु की याचना कर रहा हूँ। और विष्णु के ऊपर अपना विचार-विनिमय दे रहा था बेटा! देखो, मैंने यौगिक क्षेत्रों में ले जाते हुए, तुम्हें मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र तक मैं ले गया क्या वह विष्णु कहलाता है। तो बेटा! देखो, मनीषी बन करके विष्णु बन करके मेरे प्यारे! देखो, एक पैड़ी, द्वितीय पैड़ी तक वह जाना चाहता है। और वह मुनिवरों! देखो, उसे मूलाधार से ले करके ओर मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मरन्ध्र तक मानो अपनी सबकी पैड़ी बनाता है। एक दूसरी पैड़ी को जानता है। तृतीय को अपना देखो, अबृही गृह असुतम बन जाता है। तो विचार आता है कि बेटा! देखो, एक दूसरे को मानव पैड़ीवान बना करके और हम विष्णु बन जाते हैं।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ जैसे विष्णु नाम राजा का है। विष्णु नाम आत्मा का है। इसी प्रकार यज्ञोमयी विष्णु वेद का वाक् कहता है यज्ञम् ब्रह्मा विष्णु बृहीकृता यज्ञोमयी विष्णु कहलाता है। वेद का वाक् कहता है कि यज्ञोमयी विष्णु, विष्णु याग को याग का नाम बेटा! वसु भी माना गया है। वसु कहते हैं बसने वाले को जो हमें बसाने वाला है। उसका नाम वसु है। तो याग का नाम वसु भी कहा जाता है। और याग का नाम बेटा! देखो, यज्ञोमयी विष्णु है। हे विष्णु! तू यागिक बन करके हमारा कल्याण करने वाला है, पालन करने वाला है। क्योंकि विष्णु ही तो पालन करता है। वह याग के माध्यम से हमारा पालन करता है। मेरे प्यारे! देखो, याग की विवेचना करते हुए आदि ऋषि-मुनियों ने अपना बड़ा मन्तव्य दिया है। अपने-अपने विचार दिऐ हैं। उनके विचारों में बड़ी गम्भीरता और बड़ी ओजसता रही है। तो विचार आता है बेटा! देखो, वह यज्ञोमयी विष्णु, मुनिवरों! देखो, जब हमारे यहाँ याग का नाम विष्णु माना गया है। विष्णु उसे कहते हैं, जो पालक है, तो यह याग मेरे प्यारे! पालना करने वाला है जब ऋषि-मुनि अपनी साधना में परिणत होते रहे हैं। अपनी साधना में जाने का प्रयास किया तो उन्होंने बेटा! यज्ञोमयी विष्णु की आराधना की और विष्णु की आराधना करके उन्होंने बेटा! याग को अपना साक्षी बनाया और उन्होंने कहा यज्ञोमयी विष्णु हमारी साधना जब पूर्ण होगी देखो, जब हम विष्णु बनेंगें, हमारा विष्णु हमारे समीप रहेगा।

याग का नाम विष्णु

तो बेटा! देखो, याग का नाम विष्णु क्योंकि उससे वायुमण्डल पवित्र होता है। किसी गृह में गृह स्वामिनी

और गृह स्वामी अपने में यह विचार-विनिमय करते हैं कि गृह का वायुमण्डल हमारे रूदन से हमारे मानो अशुद्ध क्रियाकलापों से यह अशुद्ध हो गया है, इसका वायुमण्डल पवित्र नही रहा है। वैज्ञानिक जन भी यही कहते है। कि विज्ञान की तरंगों में जो मानो देखो, दूषित वायु वृत बन गया है, उससे वायुमण्डल, वातावरण दूषित हो गया है, उसको प्रदूषण करते हैं। तो बेटा! देखो, प्रदूषण को नष्ट करने के लिए वैज्ञानिक जनों ने भी पूर्वकाल में यह कहा है कि यज्ञम् ब्रह्मा विष्णु तो मानो देखो, विष्णु से यह वायुमण्डल पवित्र होता है। और वह याग है, मानो जिससे वायुमण्डल पवित्र होता है। एक मानव बेटा! साधक बनता है, और साधना के लिए जब वह वायुमण्डल में अपने विष्णु की आराधना करता है, और वह कहता है हे विष्णु! तू मेरी पालना कर मैं तेरी शरण में आया हूँ।

महर्षि कागभुषुण्ड

तो मुनिवरों! देखो, जैसे मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी और महर्षि लोमश अपनी स्थलियों पर विद्यमान थे तो लोमश मुनि ने कहा कि कैसे अपने में मनन कर रहे हो ऋषिवर! तो कागभुषुण्ड जी बोले प्रभु! मैं चिन्तन में हूँ, और मैं चाहता हूँ कि मैं साधना करूं परन्तु देखो, मेरे शरीर का वायुमण्डल और बाह्य वायुमण्डल दोनो ही प्रदूषित बन गएं हैं। दोनो अशुद्ध हो गएं हैं। प्रभु! अब मैं कैसे इनमें बस सकता हूँ। क्योंकि यज्ञ का अमृते मैं वसु को वसना भी चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा याग का नाम वसु है। महर्षि लोमश जी ने कहा कि याग का नाम वसु है। और तुम मानो देखो, याग में बस जाओं और बस करके देखो, उसमें साधना करो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! मैं कैसे बसु उसमें। उन्होंने कहा कि तुम मानो देखो, वह याग का प्रारम्भ करो और याग का जब प्रारम्भ करोगे तो उसकी विचित्र शुद्ध तरंगें हैं। उन तरंगों से मानो देखो, वायुमण्डल भरण हो जाएगा। वैज्ञानिकजन जब अपनी स्थलियों पर मानो देखो, साधना देखो, वैज्ञानिक अपने वैज्ञानिक अणुओं का प्रयोग करते हैं, तो वह भी मानो देखो, शुद्ध परमाणुओं का, तरंगों का जब वह देखो, उसका निरिक्षण करते हैं। तो वह जल और अग्नि के माध्यम से करते हैं, मानो अग्नि के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्वरूप को जान करके बेटा! उमसें छाया का दर्शन करते हैं और दर्शन करके ही मानो देखो, उसे अपने में ही वसु बना करके उसे अपने में धारण करते हैं। तो तुम भी इसी प्रकार अपने में धारयामि बन जाओ। मेरे प्यारे! जब महर्षि लोमश मुनि जी ने यह वाक् कहा तो उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। तो उन्होंने मुनिवरों! याग का प्रारम्भ किया। अपनी देवी से कहता है देवी हम दोनों का अनुष्ठान करना है। यज्ञमान अपनी देवी से कहता है। देवी हम दोनों को अनुष्ठान करना है। इसी प्रकार देखो, साधक अपने में अनुष्ठान में लग जाता है, और अनुष्ठानित होता हुआ मानो देखो, वह अपने में संकल्प करता है, और अपने में मानो की मनीषी बन करके वो तरंगों को वह स्वाहा के साथ में वायुमण्डल में प्रसारित कर देता है और वह वायुमण्डल में मानो देखो, अग्नि उनको ले करके मानो तरंगित कर देती है। वहाँ का जो वायुमण्डल है, परमाणुवाद है उसका शोधन कर देती है। अशुद्ध तरंगों को वह अशुद्ध मानो देखो, परमाणुओं को नष्ट करना और उनका शुद्धिकरण करना इसी का नाम मेरे प्यारे! वसु है। जब ही तो हम बसेंगें जब हमारे जीवन में से देखो, विजातीय शब्दों का, विजातीय क्रियाकलापों का हम से क्षय हो जाएगा अथवा वह नष्ट हो जाए। और उनका शुद्धिकरण हो जाएगा। तो हम बस जाएंगें। जैसे एक मानव देखो, व्याकरण में जाता है, और व्याकरण उसी को कहते हैं। जो विजातीय मानो देखो, विजातीय शब्द को समाप्त करके सजातीय को जहाँ सजा देती है। उसी का नाम सजातीय कहलाता है, और वही मानो देखो, व्याकरण शुद्धिकरण में वही उसका शुद्धिकरण कहा जाता है। तो

इसी प्रकार मेरे प्यारे! देखो, मानव जब अपने में देखो, विजातीय पदार्थों को नष्ट कर देता है, विजातीय शब्दों के समीप नहीं रहता तो देखो, उसका स्वतः शुद्धिकरण हो जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी इस प्रकार अपने में याग में परिणत हो गये। नित्यप्रति बेटा! याग करते और वह जब याग करते तो अपने मन में यह विचारते कि मैं इस याग का अधिपति हूँ, अथवा मैं इस याग का यज्ञमान हूँ। और यज्ञमान उसे कहते हैं। जो मानो देखो, उसका अधिपति होता है, और अधिपति मेरे प्यारे! देखो, उसका आहार, व्यवहार उसकी वाणी मानो देखो, शुद्धिकरण में देखो, एक महानता में परिणत हो जाएं। तो वह कागभुषुण्ड जी उसी प्रकार प्रातःकालीन मेरे प्यारे! वह याग प्रारम्भ करते और गायात्राणी छन्दों में रमण करते और रमण करके मुनिवरों! देखो, उनका आहार भी उसी प्रकार का होता जब वह आहार करते तो मुनिवरों! देखो, अमृतम् मनो को क्योंकि मन को मनीषी बनाना है। तो मन बनाने के लिए देखो, आहार पवित्रता की आवश्यकता रहती है। तो बेटा! देखो, मुझे उनका जीवन जब स्मरण आता है। तो वह गायत्री वेदमन्त्रों का स्वर चल रहा है। गान चल रहा है और वेदमन्त्रों में मन प्राण, मन मस्तिष्क उसमें लगे हुए हैं। और वह अपने आहार को भी उसे मानो देखो, निष्ठा से देखो, उसका शुद्धिकरण करता है, और उस अन्न को बना करके जब उसका पान करता है। तो मन की तरंगें पवित्र होती चली जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह यागम् ब्रह्वे तो मुझे उनका जीवन स्मरण आता रहता है। तो उन्हें इसी विचारों में जब उन्हें एक आधा अनुष्ठान हो गया छः-छः वर्ष हो गएं। बारह वर्ष उन्होंने अनुष्ठान किया जब छह वर्ष का देखो, उनका अनुष्ठान हुआ उन्हें वह मानो देखो, सिद्ध हो गया और वह सिद्ध क्या मुनिवरों! देखो, वायुमण्डल में जो अग्नि की धाराओं पर मानो स्वाहा के साथ में देखो, मन मस्तिष्क जो एकाग्र रहता है। उसकी जो तरंगें थी जब वह मुनिवरों! देखो, जाने लगी तो वह उसमें ध्यानावस्थित होने लगा एक स्थलियों में आहार से मन पवित्र है। एक स्थलियों में मानो देखो, वायुमण्डल में अग्नि की धाराएं तरंगों को ले करके जो मन मस्तिष्क से उत्पन्न स्वाहा के साथ में होती है। वह जब गमन करती है। तो मुनिवरों! देखो, मुझे ऐसा स्मरण आता रहता है कि उनका जीवन मुझे स्मरण है बेटा! देखो, वह अपने में श्रुति अव्रतम् देखो, उसका वसु बन गया। वह याग उस काल में वसु कहलाता है। क्योंकि उसमें वह ऋषि में बस गया है, और वह मानो देखो, अशुद्ध का शुद्धिकरण हो गया है। बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार का शुद्धिकरण हो गया है। तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या अमृतम् ब्रह्मा देखो, देखो, एक समय महर्षि श्वेतकेतु मुनि महाराज वह विद्यालय में अध्ययन कराते थे। अध्ययन कराते हुए मुनिवरों! देखो, उनके यहाँ देखो, किसी कारणवश अशुद्ध तमोगुण देखो, रजोगुण छाया रजोगुण छा करके उन्होंने देखो, ब्रह्मचारियों को दण्डित किया। जब ब्रह्मचारियों को दण्ड देने लगे दण्ड देते हुए मानो देखो, वह रजोगुण छाया रहा और वह तमोगुण की मात्रा भी उसमें बलवती हो गई। मेरे प्यारे! देखो, अब्रहे जब सांयकाल हुआ उन्होंने कहा मेरा देखो, अन्तरात्मा मंगलम् बृही देखो, रजोगुण में छा गया अब मैं क्या करूं बेटा! कहीं उन्हें यह प्रतीत हो गया था क्या भंयकर वनों में देखो, महर्षि कागभुषुण्ड जी अपना अनुष्ठान कर रहे है। वही लोमश जी का दर्शन होगा मैं मानो दर्शनार्थ उनके क्रियाकलापों में मेरा अन्तरात्मा पवित्र होगा। मैं मानो दर्शनार्थ उनके क्रियाकलापों से मरा अन्तरात्मा पवित्र होगा इन विचारों से मेरे प्यारे! देखो, वह वहाँ से गमन करते हैं, और गमन करते हुए जब भयंकर वन में पंहुचे तो प्रातःकालीन का समय हुआ वहाँ कागभुषुण्ड जी अपने याग में परिणत थे और वह याग में लगे हुए थे तो बेटा! देखो, ऋषि भी आज्ञा पा करके आहुति हूत करने लगा तो मनो में तमोगुण छाया हुआ था तमोगुण क्या छाया हुआ था? क्योंकि विभिन्नाम भूति महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में वे विद्या अध्ययन कराते

थे। ब्रह्मचारियों को तो मानो देखो, कहीं महाराजा अश्वपति ने देखो, वह राष्ट्र का जो कर था उस का का जो द्रव्य था वह शिक्षा में मानो उन्होंने शिक्षा के कार्यों में अवगत किया और अवगत करने से मेरे प्यारे! देखो, वह जो उन्होंने अन्न का ग्रहण किया उस अन्न से मुनिवरों! देखो, विद्यालय के छात्र भी और वह मानो आचार्य जन भी उनका मन मस्तिष्क देखो, भ्रमित हो गया, चंचलता आ गई चंचलता जब आई तो मुनिवरों! देखो, ब्रह्मणे वातप्रवाः लोकाम् ऐसे मुझे प्रतीत है क्या जब मुनिवरों! देखो, जब उसमें हूत करने लगे और वह तरंगों को दृष्टिपात करने लगे तो कागभुषुण्ड जी तो बेटा! उनकी अशुद्ध तरंगें, उनका तमोगुणी तरंगें मुनिवरों! देखो, वायुमण्डल में और रजोगुण तरंगें भरण करने लगी। मेरे प्यारे! देखो, कागभुषुण्ड जी ने अपने याग को शान्त कर दिया और शान्त करके उन्होंने कहा ऋषिवर! यह तुम क्या कर रहे हो? तुमने मेरे याग को मानो देखो, जो मैंने छह माह तक मैंने देखो, उसका शुद्धिकरण किया अनुष्ठान के माध्यम से, आहार और व्यवहारों से और इसमें बस गया था मेरा वसु तुमने मेरे से दूरी कर दिया है। मेरा वसु मेरे समीप नही रहा है। मैं क्या करूं ब्रह्मणे वातप्रवाः लोकाम मेरे प्यारे! देखो, आचार्य ने कहा प्रभु! आप का वसु आप से दूरी हो गया है, इसका कारण क्योंकि मेरे हृदय में तमोगुण है। उन्होंने बेटा! याग सब शान्त कर दिया। शान्त करने का परिणाम मंगले। उन्होंने कहा प्रभु! देखो, मैं गायात्राणी छन्दों का पुनः से पठन-पाठन किया और पठन-पाठन करने से मेरे प्यारे! देखो, पुनः वह प्रवृत्ति उनकी आई।

वृत्तिका मुनि का महाराजा अश्वपति के द्वार जाना

जाने के पश्चात देखो, वह वृत्तिका मुनि बेटा! वहाँ से गमन करते हुए लोमश जी के द्वार पर पंहुचे और लोमश मुनि से कहा हे प्रभु! तमोगुणी प्रवृत्ति मेरी क्यों बन गई है? उन्होंने कहा ऋषि का हृदय तो बड़ा पवित्र होता है। उन्होंने कहा तुम राजा से प्रश्न करो। मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से भ्रमण करते हुए महाराजा अश्वपति के द्वार पर पंहुचे और अश्वपति के यहाँ उन्होंने, राजा अश्वपति ने उनका स्वागत किया और स्वागत किया तो उन्होंने कहा कहो ऋषिवर! तुम्हारा आगमन। उन्होंने कहा प्रभु! मेरी ओर मेरे देखो, शिक्षालय में जितने ब्रह्मचारी हैं। उनका वाक्यम् ब्रहे देखो, उनके क्रियाकलाप सब तमोगुणी बन गई है। मैं भी तमोगुणी बन गया हूँ। रजोगुण बन गया हूँ। मैं मानो देखो, शासम बृही है। हे प्रभु! इसके मूल में क्या है? क्योंकि यह विद्यालय तेरे राष्ट्र में है। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा अश्वपति ने देखो, अपने राष्ट्र कर्मवेत्ताओं को निमन्त्रण किया ओर सभा की और सभा करके उन्होंने कहा कि क्या कारण है कि विद्यालय में तमोगुण आ गया इसका मूल कारण क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें वह सब अपने में मौन हो गये। जो कर्मवेत्ता मानो विशेषज्ञ थे उन्होंने कहा कि हे प्रभु! देखो, जो आपके राष्ट्र में कर लगा हुआ था मानो देखो, वह कर का जो द्रव्य है, वह सर्वत्र देखो, तमो वृद्ध तमो जो द्रव्य होता है। जो देखो, वह अपने अन्न से जो द्रव्य एकत्रित किया जाता है। वह द्रव्य कृषकों का मानो देखो विद्यालयों में वह द्रव्य होना चाहिए। जो द्रव्य मानो देखो, कृषक का द्रव्य होता है। जो देखो, कृषकों का जो द्रव्य है, जो देखो, वह अपने अन्न से जो द्रव्य एकत्रित किया जाता है। वह द्रव्य कृषकों का मानो देखो, विद्यालयों से क्रियाकलापों में शिक्षा में लगना चाहिए। और जो द्रव्य मानो देखो, जैसे व्यवसाय का द्रव्य होता है। जो मिथ्या उच्चारण करके लिया जाता है। वह द्रव्य गृही देखो, पृथ्वी पर रसातल चलने वाले देखो, मार्गों में लगना चाहिए। इस प्रकार महाराजा अश्वपति का एक नियम बना हुआ था, मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। उन्होंने कहा देखो, ऋषिवर! का आगमन हुआ है, ऋषि यह कहते हैं कि मेरे बाल्य जो ब्रह्मचारी है। उनका अशुद्ध क्या देखो, तमोगुण छा गया है। मेरे अन्तर्हृदय में भी और मानो महर्षि कागभुषुण्ड जी के आश्रम

में पंहुचा। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वृतान्त राजा अश्वति ने सुना और देखो, ऋषि को ले करके बेटा! कागभुषुण्ड जी के आश्रम में पंहुचे वही लोमश मुनि महाराज व्रतम् ब्रह्मे उन्होंने कहा, लोमश जी बोले क्या तुमने ऋषि का अनुष्ठान तुम्हारे द्रव्य ने और तुम्हारे आचार्यों ने देखो, इसको अशुद्ध कर दिया है। इसका वसु इससे छिन लिया है। वसु इन्होंने अपने में नष्ट करना चाहा है। तो इसका क्या बनेगा राजन्! महाराजा अश्वपति ने कहा प्रभु! मुझे आप क्षमा कीजिए। हे प्रभु! मैं तो स्वयं कला कौशल करता हूँ, और मैं अपने देखो, वसु को स्वतः उत्पन्न करता रहता हूँ। मैं उसी में बसता रहता हूँ देखो, राजा अपना स्वयं कला कौशल स्वयं कृषि का उदगम करके उस अन्न को पान करता है। उस अन्न से ही देखो, हमारे जीवन की प्रतिभा का जन्म होता है, और वहीं प्रतिभा हमारे जीवन का एक मूलक बन करके हमारे जीवन का महान बानते है। और राष्ट्र में देखो, उसी प्रकार का हमारे में अवृत नही हो पाता। मेरे प्यारे! तो देखो, उन्होंने कहा प्रभु! यह विद्यालयों में द्रव्य अच्छा होना चाहिए शुद्ध ही होना चाहिए। उन्होंने कहा बहुत प्रिय तो राजा ने वह वाक् स्वीकार किया।

याग वसु है

तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार-विनिमय करने का हमारा अभिप्रायः क्या है महाराजा अश्वपति ने राष्ट्र के विद्यालयों में देखो, महर्षि वृत्तिका ऋषि अपने में अध्ययन करते थे, ब्रह्मचारियों को अध्ययन कराते थे तो मेरे प्यारे! देखो, यह याग हमारे यहाँ वसु वह याग है। विद्यालय भी याग माना गया है। क्योंकि देखो, वहाँ जीवन की जो अनुक्रमणिका है। उसका निर्माण किया जाता है। बाल्य काल से ले करके वृद्धकाल तक उसके जीवन की भूमिका का निर्माण विद्यालयों में होता है। शिक्षा के माध्यम से आचार्य के आचार व्यवहारों से मानो देखो, वह भी याग है। इसी प्रकार देखो, जहाँ देव पूजा करते हैं। तो देवता हमारे इस मानव शरीर में क्रियाकलाप करते रहते हैं। वह तो मानो देखो, देव पूजा का अभिप्रायः यह भी अनुष्ठान है, इसको यज्ञमान अपने आन्तरिक हृदय से इसको वसु बनाता है। इसमें बसता है, और अशुद्धियों से यह वसु को मुनिवरों! देखो, मानो अपने में सींच लेता है। उसे अपने में बसा कृतियों से रत्त कर लेता है। तो मेरे प्यारे देखो, इसीलिए याग का नाम वसु है, और यज्ञोमयी विष्णु है। क्योंकि देखो, इसमें बसोगे तो यही हमारा पालन करने वाला है। तो पालना का अभिप्रायः यह हमारे यहाँ पालना के कई प्रकार होते हैं। एक पालना उसे कहा जाता है। जो माता अपने गर्भ में पालना करती है, एक मानो देखो, विष्णु बन करके शिक्षा को देखो, उसे पारायण बना देती है, और वही मेरे प्यारे! देखो, पालना का मूल है। जो बाह्य जगत में आन्तरिक जगत में दोनों का समन्वय करके उसकी पालना की जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, यह पालना का मूल है। तो पालन करने वाला विष्णु है। इसीलिए यज्ञोमयी विष्णु बेटा! यदि मानव सुक्रियाकलाप नही करेगा वो बसेगा कहाँ? अरे दूरिता में तो बसा नही जाता देखो, एक स्थली पर मानो क्रोध की मात्रा उत्पन्न हो रही है। तो जो विशुद्ध प्राणी है। वो वहाँ से चल देते हैं। तो वह तो वसु नही कहलाता और वहाँ मुनिवरों! देखो, दर्शनों की विचारधारा मानवीय की विचारधारा हो रही है। वहाँ मानव देखो, अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो जाता है। वह कहता है मैं यहाँ वसु मैं यहाँ बसूंगा। वह बेटा! देखो, उसको अपना वसु बना लेता है। तो जितने भी सुक्रियाकलाप है, सुकर्म है, तो मुनिवरों! देखो, उन्हीं में तो प्राणी बसता है, और उसी का नाम याग है। वही विष्णु है मेरे पुत्रों! देखो, वह कहता है यज्ञोमयी विष्णु हे विश्वनाम ब्रह्मे देवानाम ब्रह्मा! मेरे प्यारे! देखो, यज्ञोमयी विष्णु माना गया है। तो विचार आता है। बेटा! आज मैं विशेष चर्चा नही देता हुआ केवल यह क्या हम देखो, अपने में वसु बनना चाहते हैं। बसना चाहते हैं। तो बसेंगे कहाँ? जहाँ मुनिवरों! देखो, प्रिय वार्त्ता होगी आत्मिक चर्चा होगी, परमात्मा के ध्यानाम ब्रह्मे और मुनिवरों! देखो,

विचारों में याग होते रहेंगें। तो यह याग का नाम विष्णु माना गया है।

तो आज बेटा! देखो, मैं विशेष चर्चा न उच्चारण करता हुआ केवल यह क्या यज्ञोमयी विष्णु वह विष्णु हमारा कल्याण करने वाला हैं। तो बेटा! देखो, ऋषिजन याग के माध्यम से हम विष्णु को विचार-विनिमय में लाते हुए अपने में धारयामि बनाते रहे। बेटा! देखो, अग्नाम भूतम ब्रह्मे अग्नि ब्रहे यह सर्वत्र मानो देखो, अग्नि में अग्नि कए सूत्र है। देवताओं का मुख है, और देवताओं के देवानाम् मुखाः बेटा! देवताओं का जो मुख है। वह अग्नि है अग्नि के मुखारबिन्दु में जिस वस्तु को तुम मानो देखो, उसमें परिणत कर दोगे वही सूत्र बन करके सब देवताओं को प्राप्त हो जाएगा। और वह देवता मुनिवरों! देखो, उस मानव के शरीर में विद्यमान हैं। जहाँ मुनिवरों! देखो, मन मस्तिष्क स्थिर होते हैं और वही आत्म बसता है, उन पंच महाभूतों के लोक में बसता है। इसीलिए मुनिवरों! देखो, याग का वसु कहा गया है। तो विचार आता रहता है बेटा! यह वसु ब्रह्मणा व्रता मानो देखो, पंच महाभूतों में निहित रहने वाला यह अनुपम जगत है। और यह तेजोमयी कहलाता है। जैसे महारे यहाँ बेटा! देखो, याग का नाम विष्णु है। इसी प्रकार देखो, वह ब्रह्मणे असुतम मुनिवरों! देखो, सूर्य का नाम भी विष्णु है। हमारे यहाँ विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है। जब मैं वैदिक साहित्य के ऊपर विचार-विनिमय करते हैं। उमसें भौतिकवाद आध्यात्मिकवाद दोनों का मिश्रण है, और विज्ञानवाद मानो देखो, उसकी पुठ लग जाती है। तो विचार आता रहता है बेटा! देखो, सूर्य का नाम विष्णु है। यहाँ यज्ञोमयी विष्णु, क्या विष्णु की याचना हो रही है। वह बसाने वाला, वैज्ञानिकों से जब यह प्रश्न किया जाता है। हे वैज्ञानिकों! यह याग क्या है? तो पूर्व काल में मुझे स्मरण है। उन्होंने यह कहा क्या यज्ञोमयी विष्णु है। यह पालना के मूल में है और देखो, जब भी दूषित वायुमण्डल हो जाता है। तो राष्ट्र को विशाल से विशाल याग करने चाहिए और अश्वमेध याग होने चाहिए। मानो देखो, जब विष्णु जब कोई भी याग हो याग का नाम विष्णु रूप दिया जाता है। तो इसीलिए राजा का कर्तव्य है कि अपने राष्ट्र में दूषित वायु मण्डल को नष्ट करे। मेरे प्यारे! देखो, क्योंकि यह वसु है। और जब दूषित वायुमण्डल नही रहेगा तो वहाँ मानव बसता है, साधक अपनी साधना करता है। मन मस्तिष्क को एकाग्र करके बेटा! उसका मन पवित्र बनता है। जब मन मस्तिष्क दोनों पवित्र होंगें तो बेटा! यह विचार भी प्रिय करता है ओर जब उसका विचार प्रिय हो जाता है। तो मन मस्तिष्क बेटा! अपने में महानता को ले करके इस सागर से पार होने का प्रयास करता है।

तो आओ मेरे प्यारे! आज का हमारा यह वाक् क्या कह रहा है। मैं कोई व्याख्याता नही हूँ। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ ओर यह परिचय यह है कि यज्ञोमयी विष्णु इसको हमें अपने में धरयामि बनाना चाहिए। मैंने बेटा! महाराजा अश्वपति के राष्ट्र की चर्चाएं की हैं ओर यह चर्चाएं इतनी गम्भीरता में मानो देखो, राजा की जो वितरण प्रणाली है वह कितनी भव्य और पवित्र होनी चाहिए जिससे बेटा! देखो, जो द्रव्य जिस प्रकार का हो वह द्रव्य इसी क्रियाकलापों में मानो देखो, राष्ट्र का लगना चाहिए यदि मानो देखो, वह द्रव्य यदि अमृते द्रव्य तमोगुण से देखो, जिसका संचय किया जाता है उसको सतोगुण में लाओगे तो देखो, सतोगुण को भी यह मुनिवरों! परिवर्तित कर देगा ओर उसको तमोगुण में ला करके त्याग देगा। इसी प्रकार देखो, द्रव्य उसी प्रकार का जैस द्रव्य हो उसको उसकी क्रियाकलापों में, राष्ट्र में मानो देखो, न तो प्रदूषण आता है और न राजा के राष्ट्र में मानो द्रव्य ही हीनता होती है। द्रव्य अपने में मानो द्रव्यपति बन करके राजा अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का वाक् हमारा क्या कह रहा है। मैं कागभुषुण्ड जी की चर्चा कर रहा हूँ। ऋषि देखो, अपने में कितना भव्यता में परिणत है। क्योंकि कागभुषुण्ड जी की माता बाल्यकाल में देखो,

इस प्रकार अपने ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मचारी को शिक्षा देती रहती वही ब्रह्मवेत्ता और साधक बन करके अपने जीवन को ऊँचा बनाते हैं। संसार को ऊँचा बनाने में मानो उनके जीवन से सुगन्धि आती है ओर सुगन्ध जो भी मुनिवरों देखो, सुगन्ध लेता है वह सुगन्धित हो जाता है।

तो यह बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि यज्ञोमयी विष्णु इस याग की हमें पूजा करनी है और याग एक पुरूष है, एक वसु है, जिसमें हम सब वशीभूत रहते हैं। तो इसीलिए बेटा! याग का अपने में बड़ा महत्व और ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर अनुसन्धान किया है। कल मुझे समय मिलेगा तो बेटा! इससे आगे की चर्चाएं कल प्रगट करूंगा कि हमारे यहाँ देखो, विष्णु सूर्य को कहते हैं, हमारे यहाँ विष्णु के बहुत से पर्यायवाची शब्द है परन्तु जहाँ पालना का प्रसंग आऐगा वही विष्णु की विवेचना होगी और जहाँ पालना की प्रतिभा होगी। वही मेरे प्यारे! देखो, विष्णु शब्द का प्रतिपादन किया जाता है। यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय बेटा! तुम जान गएं होंगें वाक् बड़ा सूक्ष्म है वाक् बड़ा साधकीय वाक् था परन्तु देखो, इसके ऊपर विचार-विनिमय होना चाहिए।

११ याग ३१ ०१ १९९२

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोयमी स्वरूप है और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, ओर वह उसी में वास कर रहा है इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसके गुणों का हमें अपने में ध्यानावस्थित हो जाना चाहिए। तो वेद का मन्त्र यह कहता है, ध्यानाम् पवित्र सुतम् पवमाना क्या वे परमपिता परमात्मा ध्यानागुणों के ही अपने में उसके गुणों को धारण करते हुए इस संसार सागर से पार होने का हमें सदैव प्रयास करना चाहिए। तो हमारा वेदमन्त्र मानो उस परमपिता परमात्मा के यज्ञोमयी स्वरूप का वर्णन कर रहा है। हमने पूर्व काल में तुम्हें उस महान विष्णु की विवेचना की जो यज्ञोमयी विष्णु कहा जाता है। क्योंकि याग को हमारे यहाँ वसु कहा गया है याग करने वाला संसार में बसता है और वह वसु में अपने को धारण करा लेता है।

याग की महता

तो मेरे पुत्रों! देखो, यज्ञोमयी विष्णु हे विष्णु! तू याग है, जितना भी संसार का सुक्रियाकलाप है। मानो वह सर्वत्र एक याग में ही परिणत होता रहा है। तो इसीलिए याग का नाम विष्णु है, अथवा वसु है, उसी में बसते हैं। इसीलिए परमपिता परमात्मा का नाम वसु है। क्योंकि यह सर्वत्र जगत उसी में वशीभूत हो रहा है और वह यज्ञोमयी अपने में कहा जाता है। क्योंकि याग उसका आयतन है, याग उसका गृह है, उसका सदन है, और वह उसी में वास करने वाला है। तो परमपिता परमात्मा मानो कहाँ वास करता है-वह संसार रूपी जो जगत है, एक प्रकार की यज्ञशाला है। और यज्ञशाला वह स्वतः ब्रह्मा है, आत्मा यज्ञमान है, पंच महाभूतों में मानो कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु है, और कोई पुरोहित बन करके बेटा! देखो, होता बन करके याग हो रहा है। यह भव्य याग अपने में मानो देखो, अपने में प्रतिष्ठित रहता है, और अपने में ही धारयामि बना लेता है।

तो विचार-विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वाकार करते हैं, क्योंकि वह इस संसार का अधिपति है, और इस यज्ञशाला में संसार रूपी यज्ञशाला में हम सब विद्यमान हैं और नाना प्रकार के यागों का अवधान कर रहे हैं। अथवा उसको अपने में धारण करते हुए इस संसार सागर से पार होना चाहते हैं।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, याग अपने में बड़ा विशुद्ध क्रियाकलाप माना गया है। मैंने इससे पूर्वकाल में तुम्हें महात्मा महर्षि कागभुषुण्ड जी की चर्चाएं प्रगट की क्या याग अपने में कितना विचित्र है, और जब मैं शिकामकेतु उद्दालक मुनि के द्वार पर चला जाता हूँ। उनकी चर्चाएं होने लगती हैं। उनका जो क्रियाकलाप रहा है। वह बड़ा विचित्रतम रहा है। मेरे प्यारे! उन्होंने याग के ऊपर कितना अन्वेषण किया कितना अनुसन्धान किया है, और याग दो प्रकार का माना गया है। एक आध्यात्मिक है और द्वितीय भौतिक विज्ञान है। परन्तु देखो, आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय करने का नाम पवित्र यागों में परिणत रहा। तो विचारवेत्ता कहते हैं कि हम दोनो प्रकार के यागों का अपने में व्यवधान करते रहे अपने में धारण करते रहे, जिससे हमारा मानवीय जीवन पवित्रता को धारण करता हुआ इस संसार रूपी यज्ञशाला को हम जान सकें और परमात्मा जो

उसका आयतन है अथवा उसी में हम सब वशीभूत हो रहे हैं। उसके ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः हम अपने में अन्वेषण करते रहे। मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार हमारा वेद का मन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

आओ बेटा! मैंने तुम्हें कई कालों में यह चर्चाएं प्रगट की हैं कि हमारे यहाँ नैतिक जीवन में भी याग का अपना बड़ा महत्व माना गया है, मैं बेटा! कई कालों में बारम्बार महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालयों में ले जाता रहा हूँ। अथवा वहाँ ब्रह्मचारियों का और आचार्यों का जो प्रसंग है, वह कितना विचित्र होता रहा है। प्रायः उसकी चर्चाएं हमारे मानवीय जीवन के लिए बड़ी सुयोग्य है, उपयोगी मानी गई है। आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहा है प्रातःकालीन मानो देखो, आचार्य जन और गुरुजन विद्यमान हो करके और ब्रह्मचारी बेटा! देखो, एक पंक्तियों में विद्यमान थे तो मुनिवरों! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने न्यौदा में से वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया और वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके उन्होंने कहा कि यज्ञम भविताम वर्णनं सम्भव ब्रह्वे कृतं लोकाम् याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि हे ब्रह्मचारियों! यह न्यौदा में मन्त्र है। परन्तु यह कह रहा है कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। ब्रह्मचारी अपने में याज्ञिक बने, गृहाश्रम में याज्ञिक बने और देखो, अपने में वारहवृत्ति और आचार्यजन मानो देखो, सब याग में परिणत हो जाएं। यदि हम याग से शून्य हो जाएंगें तो याग मानो देखो, हमें शून्यवत् को प्राप्त करा देगा। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब यह विचार-विनिमय हो रहा था ऋषि अपने उदगार दे रहे थे और वो उच्चारण कर रहे थे क्या वेदमन्त्र कहता है सम्भवं ब्रह्मणा वाचसुते मानो देखो, ब्राह्मण जब ही बनता है, जबकि वह ब्रह्मवेत्ता बन करके और अपनी अन्तरात्मा में ब्रह्म का दर्शन करता है। वो भव्य यागों में परिणत हो जाता है।

याग कैसे करें

मेरे प्यारे! इतने में जब वो याग की चर्चा कर रहे थे, तो एक ब्रह्मचारी यज्ञदत नाम के उपस्थित हुए और यज्ञदत ने कहा प्रभु! आप को धन्यवाद है। आप याग के ऊपर अपना भव्य विचार देते रहते हैं। हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा याग में यज्ञशाला हो और यज्ञशाला विधिवत होनी चाहिए उसका निर्माण भी शिल्पकारों के द्वारा विधिवत हो और मानो देखो, वह नाना प्रकार के पदार्थों से उसका लेपन करना चाहिए ओर लेपन करके उसमें चार प्रकार का साकल्य होना चाहिए। मानो सबसे प्रथम मधु हो और मिष्ठ होना चाहिए। रोगनाशक और मुनिवरों! देखो, वह आयुवर्धक होना चाहिए। चार प्रकार का साकल्य जब तुम हुत प्रारम्भ करोगे तो तुम्हारा याग मानो देखो, सफलता के मार्ग पर चला जाऐगा। सबसे ऊर्ध्वा में यह कि तुम्हारा मन, कर्म और वचन मानो देखो, उसमें निहित रहना चाहिए। मन मस्तिष्क उसी में निहित रह करके जब तुम प्रारम्भ करोगे तो तुम्हारी आत्मा का उत्थान होगा और आत्मा मानो देखो, वर्चोसि बन करके आत्माम् भूतम ब्रह्मणा व्रेता आत्मा वह आत्मा बेटा! देखो, अपने में महानता का दर्शन करता रहेगा।

तो विचार-विनिमय क्या तो वेद का ऋषि कहता है, तुम आत्मवेत्ता बनने के लिए मानो देखो, याग करो। तो उन्होंने कहा कि इसमें साकल्य और अग्नि मानो देखो, अग्नि प्रदीप्त होनी चाहिए और वह स्वाहा होना चाहिए। क्योंकि वह मन, कर्म, वचन से बिंधा हुआ जो स्वाहा होता है, वह ऐसे होता है, जैसे धागे में नाना प्रकार के मनके होते हैं। वो एक प्रकार की माला बन जाती है। उसे हम सुमरणि कहते हैं, और वेद कृतिया कहते हैं। तो बेटा! जैसे हमारा मानो जो जीवन है यह भी एक मनको की माला है, और इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके

मानो देखो, एक सूत्र में पिरो हुए है। जैसे बेटा! देखो, प्राण अपान में पिरोया हुआ है, अपान, व्यान में उदान में पिरोया व्यान में पिरोया हुआ है और व्यान, समान में और समान मुनिवरों! देखो, उदान में पिरोया हुआ है। और यही उदान मानो देखो, नाग में पिरोया हुआ है, और नाग देवदत्त में और देवदत्त धनंजय में और धनंजय, कुरू में और कुरू देखो, कृकल में पिरोया हुआ है और घ्राण देखो, रसना में पिरोया हुआ है। मेरे प्यारे! देखो, जैसे ज्ञानेन्दियां, ज्ञानेन्द्रियों मं बेटा! देखो, नेत्र श्रोत्रों में पिरोऐ हुए है और श्रोत्र, घ्राण में पिरोया हुआ है और घ्राण देखो, रसना में पिरोया हुआ है, और रसना मुनिवरों! देखो, त्वचा में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार हस्त मुनिवरों! देखो, अमृतम देखो, हस्तम् ब्रह्मे वाणी में देखो, मुखारबिन्द में पिरोई हुई है। और मुखारबिन्द मुनिवरों! देखो, वह पदों में पिरोया हुआ है, और पद मुनिवरों! देखो, पत्र और ध्रुवा में पिरोया हुआ है। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! देखो, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार एक दूसरे में मानो देखो, सूत्र बन करके एक माला बन रही है और यह हमारा जो मानवीय शरीर है। एक माला के सदृश्य है, और इस माला को जब अपने में धारण करते हैं, तो हमारा जीवन एक महान बनने के लिए तत्पर हो जाता है। तो विचारवेत्ता याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं हे ब्रह्मचारियों! तुम याज्ञिक बनो। परन्तु देखो, इस माला के सूत्रों और मनकों को विचार करके अपने जीवन को तुम महानता में और ब्रह्माण्ड के ऊपर तुम विचार-विनिमय करते चले जाओ। मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार उन्होंने वर्णन किया कि मधुपन होना चाहिए और रोग नाशकता होनी चाहिए। परन्तु देखो, इसी प्रकार सुगन्धि और सुगन्धि के पश्चात पुष्टि कारकता में जब मानव परिणत हो जाता है। तो अपने आन्तरिक जगत को महान बनाता है। जो मन, बुद्धि, चित और अहंकार से समन्वय रहने वाले परन्तु वह सूत्र कहलाते हैं, मन के कहलाते हैं, और वह मानो देखो, एक सूत्र में पिरो हुए उसको ब्रह्म सूत्र कहा जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने यह कहा कि आध्यात्मिक और भौतिकवाद को दोनों को साथ-साथ ले करके तुम गमन करोगे तो मानो देखो, तुम्हारा जीवन पवित्रता के मार्ग पर तत्पर हो जाएगा।

यज्ञशाला भी न हो, साकल्य भी न हो

मेरे पुत्रों! देखो, अब ऋषि ने इस प्रकार कहा तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से ब्रह्मचारी यज्ञदत ने कहा हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि मानो देखो, अब्रहे कहीं मानो देखो, कहीं यज्ञशाला भी न हो, साकल्य भी न हो मानो देखो, वह हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा यदि यह पदार्थ न हो तो तुम्हें याग करना है। तो तुम्हें मानो देखो, समिधाओं को ले करके अग्नि प्रदीप्त करो और अग्नि में कहो प्राणाया स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा और उदानाय स्वाहा कह करके हूत प्रारम्भ करो क्योंकि यह प्राण ही तो भक्षण करने वाला हैं। प्राण ही मेरे प्यारे! देखो, उत्पति के मूल में विद्यमान होता है इन पंच प्राणों के ऊपर तो मानो देखो, पंच तत्त्वों की कल्पना करते अपने में सात्विकता को धारण करते हुए अग्नि देवा मुखाम ब्रह्मा देवत्वाम् वेद की आख्यिका कहती है कि अग्नि देवताओं का मुख है और देवताओं के मुख में जो भी तुम प्रदान करोगे वह सार्वभौमिकता को प्राप्त हो जाता है। वह सर्वत्रता में अब तुम्हारी भावना को ले करके और वह अग्नि की तरंगों पर तरंगित हो करके द्यौ में प्रवेश कर जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार कहा, उन्होंने कहा तुम अग्नि का अपने में ध्यानावस्थित हो जाओ यहीं अग्नि है जो द्यौ में प्रवेश कर जाती है मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार कहा, उन्होंने कहा तुम अग्नि का अपने में ध्यानावस्थित हो जाओ यहीं अग्नि है जो द्यौ में तुम्हें प्रवेश करा देती है यहीं अग्नि है जो मानो देखो, शून्य बिन्दु महतत्व में प्रवेश करा देती है।

अग्नि भी न हो तो याग कैसे करें?

मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज वे जब इस प्रकार अपना वाक् प्रारम्भ किया तो ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह वाक् तो मुझे पूर्व जब विद्यालयों में अध्ययन करते थे आचार्यों ने हमें पूर्व भी वर्णन किया है। माता भी इस प्रकार का उपदेश हमें देती रही है। हम यह जानना चाहते हैं कि जब कहीं भगवन्! अग्नि भी न हो और हम याग करना चाहते हैं तो कैसे करें? उन्होंने कहा तुम मानो देखो, कहीं अग्नि नही है समिधा भी नही हैं तो तुम जल को अंजलि में लो और जल को अंजलि में ले करके कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, और उदानाय स्वाहा, कह करके तुम हूत प्रारम्भ करो। क्योंकि यह जल ही अपने में अमृत कहलाता है। तुम्हें यह प्रतीत होगा जब हम जैसे शिशु माता के गर्भस्थल में विद्यमान होते हैं तो मानो उस समय देखो, जल ही हमारा आसन होता है, जल ही हमारा ओढ़न होता है और जल ही मुनविरों देखो, पांशे बने रहते है। मानो देखो, जल की पवित्र आभा में हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं और देवताजन मानो देखो, रक्षा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं बेटा! देखो, चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है और मुनिवरों! देखो, भव्यम् ब्रह्मा अग्नि अग्नि हमें उष्ण बनाती रहती है और यह समुद्रों में से जलों का अवराहत देखो, चन्द्रमा हमें अमृत के रूप में देते रहते हैं। तो यह मानो देखो, भव्य आभा में परिणत हो करके बेटा! देखो, जल में भी ओत-प्रोत रहने वाला वो शिशु है और निर्माण करने वाला वो ब्रह्म है जो संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण करता है। मेरे प्यारे! देखो, इसमें कहीं बुद्धि है, कहीं मनस्तव है कहीं मस्तिष्क है और उसमें भी बेटा! देखो, एक लघु मस्तिष्क में हृदय होता है एक हृदय मानो शरीर के मध्य में होता है और मुनिवरों! देखो, बुद्धि के नाना प्रकार माने गएं हैं जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाती है । नाना प्रकार के प्रकारों में बेटा! देखो, वह परमात्मा निर्माण करने वाला है वह निर्माण वेत्ता कहलाता है। तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा के सन्मुख हो करके बेटा! वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए प्राणम् ब्रह्मा प्राण ब्रहे प्राणदिव्यां अग्नम ब्रह्मा प्राण यह उद्गीत गाते हुए बेटा! देखो, प्राण के द्वारा हूत करना चाहिए और मुनिवरों! देखो, वह जल को अंजलि में ले करके मन्त्रों का उच्चारण करो।

जल भी न हो तो याग कैसे करें?

परन्तु यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! यह हमें जब हम माता की लोरियों का पान करते थे तो माता हमारे श्रोत्रों में इस प्रकार की शिक्षा देती रही है हम यह जानना चाहते हैं भगवन्! जब मानो देखो, यह अमृतम कहीं जल भी प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा कहीं तुम्हे जल भी प्राप्त न हो तो पृथ्वी की रज को ले करके तुम कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, कह करके हूत प्रारम्भ करो। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा यह जो सांसर तुम्हें पिण्ड रूप में दृष्टिपात आ रहा है यह गुरूतव पदार्थ में आता है। यह पृथ्वी की रज से ही आता है मेरे प्यारे! देखो, माता के गर्भस्थल में जल भी है, अग्नि भी है, परन्तु यदि गुरूतव नही हैं तो बाल्य का पिण्ड नही बनेगा उसका निर्माण नही हो सकेगा। तो यह देखो, नाना प्रकार के जो पिण्डों का जो निर्माण होता है नेत्रों के गोलकने का पिण्ड रूप बन करके यह पिण्डाकार यह मानव शरीर बन जाता है मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड में जो नाना प्रकार के लोक-लोकान्तर हैं कहीं मानो देखो, नाना पृथ्वियां का पिण्ड बन रहा है, कहीं मानो सूर्यों का पिण्ड बन रहा है, कहीं चन्द्रमा का पिण्ड बन रहा है, कहीं बृहस्पति का पिण्ड बन रहा है, कहीं आरुणि मण्डलों का पिण्ड बन रहा है मेरे पुत्रों! यह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरो का यह ब्रह्माण्ड अपने में पिरोए हुए है। बेटा! देखो, उनको सौर मण्डल कहते हैं सौर मण्डलों का जो पिण्डों की जो माला है उन मालाओं की मानो देखो, वह एक

आकाश गंगाएं की बेटा! देखो, अविन्तकाएं बनती हैं, निहारिकाएं बनती हैं। यह प्रभु का अनन्तमयी ब्रह्माण्ड केवल गुरूतव के कारण मुनिवरों! देखो, केवल पिण्ड का निर्माण होता है। हे ब्रह्मचारी! तुम मानो देखो, अपने में याज्ञिक बनो और देखो, यह पृथ्वी की रज को ले करके मानो कहो कि प्राणाय स्वाहाः अपाना स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, और उदानाय स्वाह कह करके परन्तु वेदमन्त्र का उदीगत होना चाहिए कहो प्रथम ब्रह्मा प्रथम देवो ब्रह्मणा वाचनम् ब्रह्वे देवात्वाम् स्वाहा वृत्ति देवत्वाः अभ्यम् ब्रह्मा कृतं देववर्णसुति यज्ञतम् वही वर्णा वाचसुतम ब्रह्मा। ऐसा उद्गीत गाते हुए बेटा! तुम वेदमन्त्र का उद्गीत गाओ और देखो, इस ब्रह्माण्ड का पिण्ड बनता है और यह पिण्डाकार बन करके यह मानव का शरीर हमें प्रायः एक दूसरे में दृष्टिपात हो रहा है और एक दूसरे का सहायक बना हुआ है क्योंकि इसमें सूत्र है और सूत्र में पिरोया हुआ यह जगत है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया।

पृथ्वी की रज भी नही

उस समय ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! हम यह और जानना चाहते हैं कहीं ऐसा हो कि पृथ्वी की रज भी हमें कहीं प्राप्त न हो और देखो, पृथ्वी की रज भी न प्राप्त हो तो हम याग कैसे करें? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी एकान्त स्थली पर विद्यमान हो जाओ। कहीं तुम पर्वतों में चले जाओ और वहाँ पृथ्वी की रज न प्राप्त हो तो एकान्त गुफा में विद्यमान हो करके तुम कहो प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, और उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, कर करके तुम मानो परिणत हो जाओ और उसी के द्वारा तुम याज्ञिक बनो और याग करे हुए मुनिवरों! देखो, एकान्त स्थली में तुम्हारा मन मस्तिष्क मन, कर्म, वचन और मस्तिष्क मानो मन, बुद्धि, चित, अहंकार एक ही सूत्र में अप्रतो में हो करके बेटा! तुम याग प्रारम्भ करोगे तो तुम्हारी आत्मा का उत्थान हो जाएगा। आत्मवत् तुम्हारा पवित्र बनेगा क्योंकि उसको ले करके तुम मानो देखो, चित्त रूपी मण्डल में तुम स्वाहा उच्चारण करो जिसे हृदय कहते हैं और जब हृदय तुम्हारा पवित्र बन जाता है तो बेटा! देखो, मन पवित्र है और मन, मस्तिष्क और बुद्धि पवित्र है तो तुम्हारा सर्वश जगत पवित्र बन गया हैं तो मानो देखो, इस प्रकार तुम अपने में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते हुए प्राण के ऊपर याचना करो प्राणम ब्रह्मा प्राण ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्मे सूर्याम भवो तत्प्रह्वा प्रमाणां व्रही कृतं प्राणा अव्रतम प्राणा दिव्यां प्राण ब्रहे ततत्वम देवो तत्त्वा। ऐसा तुम उद्गीत गा करके मानो देखो, प्राण को अपना सखा बना ले। तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार तुम एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके तुम याज्ञिक बनो और जिस याग से देखो, तुम्हारा कल्याण हो जाए वह वसु कहलाता है। जब तुम मानो संसार में बस जाओगे और तुम मानो प्रभु की महिमा का जान करके तुम मानो देखो, अपनेपन को सूक्ष्म बना करके परमात्मा के हृदय से तुम्हारे हृदय का आलिंगन हो जाए बहुत स्वाभाविक बन जाएगा। तो यह बेटा! आज का हमारा विचार। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब ब्रह्मचारियों को इस प्रकार का उपदेश दिया तो यज्ञदत ब्रह्मचारी और भी नाना ब्रह्मचारी ऋषि के चरणों में ओत-प्रोत हो गएं और चरणों में ओत-प्रोत हो करके उन्होंने कहा प्रभु! आप को धन्य है। आप की नैतिक जो शिक्षाएं हैं वह हमारे लिए बड़ी उपयोगी हैं हमारा जीवन तो इन्हीं से ऊँचा बनेगा प्रभु! हे प्रभु! अमृतम ब्रह्मवर्णस्सुते हम मानो देखो, विषय की चर्चा करे या कुछ भी करें परन्तु जब तक हमरी इन्द्रियां ज्ञान और विज्ञान में सजातीय नही होगी जब तक हमारा जीवन याज्ञिक नही बनेगा। तो यज्ञम ब्रह्मा अव्रतम् यागा अवृती याज्ञिक होना चाहिए ऐसा उद्गीत गा करके मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में मौन हो गया और ब्रह्मचारी भी मौन हो गया कि प्रभु आप को धन्य है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा विचार यह क्या कह रहा है कि हम अपने में याज्ञिक बने और याग को मानो देखो, परमात्मा

से मिलान करे। परमात्मा देखो, यज्ञम् ब्रह्मा यज्ञ का ब्रह्मा है और यह संसार रूपी यज्ञशाला है इस यज्ञशाला में सब विद्यमान हैं। अब मैं विशेष चर्चा न करता हुआ मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवम् भद्रा मनु मनवंजन्म प्ररु वरुणा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे यह भी गागर में सागर को भरण कर रहे थे क्योंकि उनका यागों के ऊपर बड़ा अधिपथ्य रहा है और भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों की प्रायः यह चर्चाएं करते रहते हैं और हमारा अन्तर्हृदय मानो यज्ञ में ऐसे यागों में परिणत हो जाता है जैसे रात्रि प्रकाश में परिवर्तित हो जाती है। तो आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के गागर में सागर की वह अपने में भरण कर रहा था मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इस से पूर्व कागभुषुण्ड जी की चर्चा कर रहे थे, महर्षियों का वाक् प्रगट कर रहे थे परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में न जाता हुआ केवल यह कि जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ और याग सम्पन्न हुआ है। मेरा अन्तरात्मा देखो, यागों को दृष्टिपात करके मैं उनके बड़ा प्रसन्न रहता हूँ। विशेषकर यज्ञमान से हे यज्ञमान! तेरे जीवनका सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि याग का अभिप्रायः यह है कि द्रव्य का सदुपयोग होना। क्योंकि यह जो वर्तमान का काल चल रहा है इसे मैं वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ। जहाँ सुरा और सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपतता में मानव सदैव तत्पर हो रहा है। जहाँ राजा भी वाममार्ग है प्रजा भी वाममार्ग है उल्टे मार्ग पर गमन कर रही है। मैं उसे यह कहता हूँ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहता है।

महर्षि कागभुषुण्ड जी का जीवन

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव इस से पूर्व काल में कागभुषुण्ड जी के अनुष्ठानों की चर्चा करते रहते और देखो, उन्होंने महर्षि लोमश इत्यादियों की चर्चा की। परन्तु आधुनिक जो वर्तमान का काल है मानो देखो, उस काल में कागभुषुण्ड जी को कागा पक्षी की उपधि प्रदान करते हैं। उपाधि ही नही उसको पक्षी के रूप में वर्णन करते हैं परन्तु देखो, वह महर्षि शौनक महर्षि सोमकेतु मुनि महाराज के पुत्र थे। माता का नाम स्नेहवृत्ति था। मानो देखो, वह उनके पुत्र उन्होंने बाल्यकाल में उसको कागा देखो, कागभुषुण्ड जी की उपधि दी। परन्तु उनका नाम सानाव्रेत केतु था। वह सौनव्रेतकेतु देखो, ब्रह्मचारी को बाल्यकाल में देखे वह विद्या में और अनुष्ठानों में प्रवीण होने से उनको देखो, कागभुषुण्ड जी की उपाधि प्रदान की गई। क्योंकि कागाम् भूतम् ब्रह्मे काग अपने में देखो, बड़ा विचित्र होता है और जैसे काग पक्षी विचित्र होता है ऐसे ही विद्या में वह भी इसी प्रकार चंचल और सुसुज्ञिय कहलाते थे। परन्तु देखो, मैं यह वाक् इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ क्या इस संसार में जो अन्धकार है अथवा जो मानव को पृा की उपधि प्रदान की जाती है देखो, प्रियता नही हैं। परन्तु उससे साहित्य, साहित्य का देखो, वह विनाशता को प्राप्त हो जाता है। इसीलिए साहित्य में जहाँ मानव को पक्षी कहा जाता है तो वहाँ साहित्य में अधूरापन आ जाता है इतिहास में देखो, उसकी घटनाएं ऐतिहासिक होने से न वह इतिहास रहता है न अलंकार रहता है तो मैं इसीलिए वाक् उच्चरण कर रहा हूँ। मैं इसमें विशेष नहीं केवल यह कि उन्होंने अपने जीवन में बारह-बारह वर्षों के देखो, उन्होंने अनुष्ठान किए और वह इतने तपस्वी कहलाते थे। उनका मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके परन्तु अपने यानों में विद्यमान हो करके वह लोक-लोकान्तरों में चन्द्रमा में भी वास करते थे और वह बृहस्पति में भी देखो, वास उन्होंने किया। आज मैं उनके जीवन में नही जाना चाहता हूँ। मुझे जब पूज्यपाद गुरुदेव! महर्षि लोमश मुनि के आश्रम में विद्यालय काल में ले जाते थे तो देखो, वहाँ कागभुषुण्ड

जी की उनकी चर्चाएं होती रहती वह अनुपात बनाते रहते। तो वह काल भी मुझे प्रायः स्मरण आता रहता है।

राजा ब्रह्मवेत्ता

आज मैं उस काल में न जाता हुआ केवल यह क्या आज मैं इय उच्चारण करने जा रहा हूँ। क्या देखो, यागम् देखो, आधुनिक समय जो वर्तमान का काल चल रहा है वह वाममार्ग का काल है। परन्तु देखो, यदि राष्ट्र ओर समाज को उन्नत बनाना है तो राजा को पवित्र बनना होगा ओर यदि राजा पवित्र नही बनेगा जैसे गृह को ऊँचा बनना है तो माता-पिता को पवित्र बनना होगा। देखो, उनका बाल्य, बाल्य जो उनका जन समूह है वह पवित्र बन सकती है ओर यदि माता-पिता उनके मार्ग भिन्न-भिन्न होते हैं तो उनके गृह में रहने वाले बाल्य बालिकाओं के जीवन भी भिन्न-भिन्न होते हैं तो उनके गृह में रहने वाले बाल्य बालिकाओं के जीवन भी भिन्न-भिन्न होते हैं इसीलिए देखो, उनका दोनों का एक सूत्र में रहना, राजा और प्रजा का एक सूत्र में रहना। राजा को राजा वही देखो, एक सूत्र में रह सकता है जबकि राजा ब्रह्मवेत्ता होगा और ब्रह्मवेत्ता ही देखो, अपने राष्ट्र को ऊँचा बना सकेगा यदि ब्रह्मवेत्ता नही होगा ओर देखो, ब्रह्म जिज्ञासु उनके आचार्य गुरुजन नही होंगे तो वह दे वह राष्ट्र ऊँचा हो सकता है। वह देखो, वाममार्ग की प्रथा में बना रहेगा। तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये उच्चारण करता रहता हूँ। क्या देखो, यह वाममार्ग पना समाप्त होना चाहिए और यह नाना प्रकार की जो रूढ़ियां बनी हुई हैं राष्ट्रों में यह रूढ़ियां देखो, ईश्वर के नाम पर ये नष्ट होनी चाहिए। जब तक राजा के राष्ट्र में यह नाना प्रकार की रूढ़ियां बनी रहेंगीं ईश्वर के नाम पर ज्ञान ओर विज्ञान में अधूरापन बना रहेगा। उन रूढ़ियां के कारण रूढ़ियों में तो वह रूढ़ि राष्ट्र को पनपने नही देती है। वह एक समय आता है कि रक्त भरी क्रान्ति का संचार उत्पन्न होता रहता है। ओर आधुनिक जो वर्तमान है इसमें जो देखो, रक्तभरी क्रान्ति जो धीमे-धीमे पनप रही है उसके मूल में देखो, रूढ़िवाद है ईश्वर के नाम जो नाना प्रकार की रूढ़ि हुई राष्ट्र को, समाज को विनाश के मार्ग पर ले जा रही है। मैं यह कहता रहता हूँ। हे राजन! तू ब्रह्मवेत्ता बन ओर ब्रह्मवेत्ता बन करके जितने रूढ़ियां के आचार्य हैं उनको एकत्रित करके उनका देखो, परस्पर विचार-विनिमय होगा तो जो देखो, परख सिद्धान्त पर, जो देखो, विज्ञान पर, मानवता पर, चरित्र पर जो स्थिर हो जाए परन्तु देखो, उस धर्म, उस मानवता को अपना लेना, चाहिए। क्योंकि उस धर्म को जो अपनाता है, उस मानवता को जो अपनाता है, क्योंकि मानवता ही नाम राष्ट्र का है और मानवता ही मानो देखो, इन्द्रियों पर जो संयम करने वाला है।

जब तक इन्द्रियों पर समय नही होगा ओर राजा केवल देखो, पृथ्वी के तल पर धर्म को मानो देखो, अमृते वह कहीं मन्दिरों में कहीं रामाम् ब्रह्वे कृतियों में मानो देखो, वह धर्म को दृष्टिपात करता रहेगा इन्द्रियों पर संयम नही होगा तो उस बाह्य धर्म को दृष्टिपात करता रहेगा। ओर इन्द्रियों पर सयंम नही होगा तो उस बाह्य धर्म से कुछ नही बन पाएगा। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उद्गीत गाता रहता हूँ। बारम्बार कि हे प्रभु! राजा ब्रह्मवेत्ता हो ओर ब्रह्म के ऊपर चर्चाएं होनी चाहिए। परन्तु देखो, यह जो नाना प्रकार की रूढ़ि हैं कोई मोहम्मद के मानने वाला है कोई ईसा के मानने वाला है और भी नाना प्रकार के रूढ़ियां हैं जो असंख्य रूढ़ियां कहलाती हैं ओर एक दूसरे के विचार जब परस्पर मानो देखो, सम्बन्धित नही होते उन विचारों में रक्त भरी क्रान्ति आती रहती है। उनके क्रियाकलापों में रक्तभरी क्रान्ति यह राजा की अज्ञानता है। राजा को ज्ञान न होने के कारण मानो इस प्रकार का रक्तमयी जीवन समाज का बन जाता है।

रावण के राज्य में रूढ़ियां

मुझे स्मरण आता रहता है मैंने कई काल में, पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते हैं कि रावण का राष्ट्र कैसे नष्ट

हुआ। रावण के राष्ट्र में भी नान प्रकार की रूढ़ियां बन गई थी। मानो देखो, यह राक्षस जो एक सम्प्रदाय बनी थी देखो, उस काल में जो लंका से प्रारम्भ हुई थी और उसका, सम्प्रदाय का स्वामी देखो, रावण बना था। उससे पूर्व भी यह शाखाएं चली हुई थी और राम सम्प्रदाय को स्वीकार करने वाले विभिषण थे और पुत्र मानो देखो, देवी सम्प्रदाय को मानने वाले थे। उन देवी सम्प्रदायाओं में एक दूसरे में जब विवाद उत्पन्न हुआ नाना प्रकार के संघर्ष हुए तो उस समय देखो, राष्ट्र के ऊपर रक्तभरी क्रान्ति आई और विज्ञान बलवती हुआ परन्तु विज्ञान देखो, विज्ञान होना ही राष्ट्र की देखो, उन्नति नही कहलाती। राष्ट्र ऊँचा बनता है जबमि मानवता होती है, चरित्र होता है और मानव देखो, परस्पर एक दूसरे से स्नेह करता है जब राष्ट्र ऊँचा बनता है और राष्ट्र के हित में अपने जीवन को व्यतीत करने वाला हैं तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं तो आपसे आप तो जानते हैं कि रावण का राष्ट्र देखो, जब नष्ट हुआ तो यह रूढ़ियां नष्ट हो गई और रूढ़ियां नष्ट हो करके मानव का प्रसार हुआ और मानव के ऊपर मानव को अपने जीवन को व्यतीत करन चाहिए क्योंकि मानव ही धर्म है और मानव जो जीवन जो धर्म है वह मानव की पांच इन्द्रियों में समाहित रहता है। बेटा! देखो, नेत्रों से सुदृष्टिपान करना, घ्राण से सुगन्ध लेना, श्रोत्रों से सु शब्दों को ग्रहण करना, त्वाचा से स्नेह और प्रेम करना इसी प्रकार देखो, वाणी से सात्विक देखो, रसों का स्वादन करना। इन इन्द्रियों के ऊपर जो अनुसन्धान करने वाला है, इन इन्द्रियों के ऊपर ज्ञान और विज्ञान को जो मापने वाला है वहीं देखो, राष्ट्र में देखो, राजा और प्रजा दोनों धर्म के मर्म को जान करके संसार सागर से पार होने का प्रयास करते हैं।

तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह और आधुनिक काल जो यह राष्ट्रवाद है यह मानो देखो, प्रजा भी उसी वाममार्ग में सुरा सुन्दरी में और राजा भी उसी में लगा हुआ है परन्तु देखो, वह तो नाव है इस समय देखो, ये समुद्र में देखो, समाप्त हो जाएगी। ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष चर्चा मैं प्रगट नही करने आया हूँ केवल यह कि हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा तेरे साथ रहता है तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे क्योंकि द्रव्य का सदुपयोग बना धर्म दुरूपयोग करने का नाम अज्ञान है। उसी द्रव्य को तुम सारा पान में ले जाओ मानो और भी दूरिता में ले जाओ तो वही द्रव्य तुम्हारा विनाश कर देगा। एक समय आयेगा कि वह द्रव्य तुम्हें त्याग देगा और देखो, जब अमृतम ब्रह्मा इस द्रव्य का सदुपयोग जब हो जाएगा। उस समय मानो देखो, उसे देवता ग्रहण करेंगें और देवता पान करेंगें तो तुम्हारा मन मस्तिष्क ऊँचा रहेगा। और मन मस्तिष्क में जब तुम्हारे में सात्विकता रहेगी तो द्रव्य का सदुपयोग होगा। तो द्रव्य तुम्हारे समीप आता रहेगा द्रव्य मानो देखो, तुम्हें नही त्याग सकता जैसे देखो, याग याग को नही त्याग सकता। इसी प्रकार शुभ कर्म, शुभ कर्म को नही त्याग सकता जैसे अग्नि के सूक्ष्म पदार्थों को जल समाप्त नही कर सकता और जल के पदार्थ को पृथ्वी समाप्त नही करती अग्नि उसको नष्ट नही कर सकती इसी प्रकार उनकी सूक्ष्म मौलिकता बनी रहती है जो उनका वास्तविक स्वरूप है। तो इसी प्रकार तुम अपने में अपनेपन को ध्यानावस्थित होकर के हे यज्ञमान! मेरे जीवन की प्रतिभा महान बनी रहे और तुम्हारे में सात्विकता का प्रसार होता रहे और तुम्हारा द्रव्य का सदुपयोग हो करके तुम अपने कल्याण में तत्पर रहो। तो आज का यह विचार अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विश्राम पाने की आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने भव्य विचार दिए। इनके विचार राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में कितने प्रिय हैं जो मानव के सदुपयोग के लिए हैं प्रत्येक मानव को अपने जीवन

को ऊर्ध्वा में ले जाना चाहिए। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हमारा याग मानव से ले करके मानवीयता को सजातीय बनाता है समाज और प्रजा को सजातीय बनाता है। तो आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। दिनांक-३१-०१-१९९२ माछरा

१२ याग में होता 24 03 1992

जीते रहो! देखो, मुनिवरोंआज हम तुम्हारे समक्ष !, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठनपाठन किया-, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है ,और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। और उसका ज्ञान और विज्ञान सदैव नवीन बना रहता है। उसमें वृद्धपन नही आता। क्योंकि परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है। वह अकाटय है, अपने में सम्पूर्ण है। जिसके ऊपर हमारे यहाँ ऋषि,अन्वेषण करते रहे हैं !मुनि परम्परागतों से बेटा- और अनुसन्धान करते रहे हैं, कि परमात्मा का जो अनन्तमयी ज्ञान और विज्ञान है। उसके ऊपर हम अपने जीवन को निर्धारित करके अपने जीवन को महान बनाए। क्योंकि यह संसार में वही महानता को प्राप्त होता है। जो किसी का आश्रित हो जाता है, जो उस चेतना का आश्रित हो जाए। तो चेतना इस संसार में और नाना प्रकार के लोकलोकान्तरों का जो - नावस्थित करके उसके हम आश्रित हो जाएंचैतन्य देव का ध्याऔर उसके ज्ञान और विज्ञान को निहारने वाला ओर क्रियात्मक में रत्त रहने वाला इस सागर से पार हो जाता है। और परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञान में वह रत्त होने लगता है और जितना भी यह मानो स्वर संगम है। प्रत्येक मानव बेटाने स्वरों में गान गा रहा अप ! हैऔर वह स्वरों का संगम बनाता रहता है। उस परमपिता परमात्मा की जो अनन्त महिमा है। वह अनन्तवान है, तो हम उसकी सदैव उपासना करते रहे और अपने जीवन को महान और पवित्र बनाते रहे।

अपने में अपनेपन का दर्शन

तो आओ बेटा प्रगट नही करूंगाआज मैं तुम्हें विशेष चर्चा !, केवल कुछ परिचय देने के लिए चला आता हूँ। और वह परिचय क्या है? क्या प्रत्येक मानव अपना परिचय चाहता है। जिस अन्तर्हृदय में आत्मा विद्यमान है। किसी किसी काल में मानव यह विचारता रहता है, क्या जहाँ मेरे इस चेतना में इस आत्मा ब्रह्मा, इस शरीर में जहाँ चेतना रहती है, वह चेतना कितनी प्रबल है। कितनी सूक्ष्म है। और कितनी स्थूल है। तो यह प्रत्येक मानव के हृदय में उस चेतना को अपने में चैतन्य बनाते हुए और उस परमपिता परमात्मा को अनन्तवान हैं, उसकी महिमा को हम सदैव विचारते रहे और परमात्मा के जगत को निहारते रहे। तो मुनिवरोंदेखो !, हमारे वाक्यों का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का हम ध्याना सुतम् हम गुणाधानम् बनते रहे और गुणों को अपनाते हुए सागर से पार होने का प्रयास करें।

आओ बेटागा। आज का हमारा कुछ विचार हमें कुछ प्रेरित आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नही करूं ! कर रहा है। वेद का मन्त्र हमें प्रेरणा दे रहा है। क्योंकि संसार में जितनी भी मानवीयता है, उसमें वह प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। एक दूसरे में प्रेरणा प्राप्त करता रहता है, प्रेरित होता रहता है ,और अपने क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव प्रेरणा का स्रोत है। क्या हम एक दूसरे से प्रेरित हो करके अपने जीवन को प्रेरणादायक बना करके और परमात्मा के अनन्तमयी जगत को निहारते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास किया जाए। तो मेरे प्यारे देखो, वेद का मन्त्र यह कहता है, सम्भवं ब्रह्मे सुता वे परमपिता परमात्मा अनन्तवान है ,और वह अनन्तमयी कहलाता है। तो इसीलिए हम परमात्मा के इस अनूठे जगत को अपने में धारयामि बनाते रहे। अपने में अपनेपन का ही दर्शन करना, यही मानव का जीवन श्रेष्ठ है।

संसार के दो विभाग

आओ बेटादेखो !, हमारे ऋषिमुनियों ने इस संसार को दो विभागों में विभक्त किया इस संसार के - ऊपर जब विचारने लगे कि उन्हें दो प्रकार की भावना प्राप्त हुई, और एक भावना वह जो आध्यात्मिकवाद कहलाता है। दूसरा जो चलन है, वह भौतिक विज्ञान है। तो प्रत्येक मानव के हृदय में यह आकांक्षा बनी रहती है। क्या मैं भौतिक विज्ञानवेत्ता बनूं और द्वितीय यह इच्छा बनी रहती है कि मैं आत्म के लोक में भी प्रवेश हो जाऊं। तो बेटायह दो प्रकार की धाराएं परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्कों में रही हैं और मानवीय मस्तिष्क में ! मानो यह वाक् आते रहे हैं, क्योंकि परमपिता परमात्मा आध्यात्मिक है, वह स्वतः उसमें रत्त होने से आध्यात्मिक है और अमृतम ब्रह्मा वे परमपिता परमात्मा एक तो अमृत को देने वाला है। तो हम मानो देखो, उस परमात्मा के उस अनूठे जगत को विचारने लगे। मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा था, क्या देखो, यहाँ वरुण की चर्चाएं आती रही हैं। मैंने यह वाक् तुम्हें पुरातन कालों में भी वर्णन कराए हैं कि मानव का वरुण विभाग क्या हैवरुणां ब्रह्माः देखो ?, जो वरा जाता है, जो मानव जिसको वर लेता है। उसके लिए वरुण है। परमात्मा को परमात्मा में विचरण करने वाला मानो परमात्मा वरणीय बनाता है, और यह कहता है कि प्रभु आप तो वरणीय है, आप अधिपति है। तो मानो देखो, उस परमात्मा को अपना वरण अथवा अपना वरणीय स्वीकार करें। जैसे माता का पुत्र, माता को अपना वरणीय बना लेता है, अथवा उसे वर लेता है। वर लेने से वह माता कहलाती है, मानो देखो, बाल्य जब अपने में धारयामि बनता रहता है, तो उसको मानो अपना वरुण स्वीकार करता है।

आध्यात्मिकवाद

तो आओ मेरे प्यारे मैं इस !सम्बन्ध में विशेष चर्चा नहीं आज मैं तुम्हें आध्यात्मिकवाद में ले जाने के लिए आया हूँ। क्योंकि प्रत्येक मानव आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना चाहता है। मैंने तुम्हें कई कालों में कहा है कि मानव अपने में देखो, आध्यात्मिकवादी है, आत्मा को जानना चाहता है। जो अन्तर्हृदय में विद्यमान है। उस आत्मा के लिए वह संघर्ष करता रहता है, तो विचारता रहता है कि मैं आत्मवेत्ता बनूं और आत्मा के पंच महाभौतिक लोक को जानने का प्रयास करे। तो बेटादेखो !, अमृतम ब्रह्मा आत्माम् वह जो आत्मा है, इस शरीर में विद्यमान रहता है। जो उसके हृदय में नाना प्रकार की आकांक्षाएं उत्पन्न होती हैं, नाना प्रकार की धाराओं का जन्म होता है। जिन धाराओं के प्रति देखो, हमारा जीवन एक पवित्रता को प्राप्त होता है। तो आओ मेरे प्यारेमैं इस सन्दर्भ में तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ। !

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का विद्यालय

आओ आज मैं तुम्हें याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ। मैंने इन वाक्यों की विचारधाराएं तुम्हें कई कालों में प्रगट की आज भी मुझे स्मरण आ रहा है। मैं उन वाक्यों की पुनरूक्तियां करता रहता हूँ जिन वाक्यों में बेटादेखो !, ऋषिमुनिय-ों की एक पवित्रतम महानता कहलाती है। तो आओ बेटा ! देखो, आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने में प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों के लिए अपना प्रायः उद्गीत गाते रहे हैं और वह उद्गीत गाकर बेटा! ब्रह्मचारियों के संग में विद्यमान हो गए ओर विद्यमान हो करके प्रातःकालीन समय था जब नैतिकता का समय आता है तो बेटाना उन्होंने प्रारम्भ कियावह नैतिक शिक्षा दे !। हे ब्रह्मचारियोंतुम्हारा याग हो गया है। अब तुम ! अपने में न्यौदा में वेदमन्त्रों का उद्गीत गाओऔर वेदमन्त्रों का उद्गीत गा करके यह प्रार्थना करो। क्या हे प्रभु ! हमारे जो गृहपथ्य नाम की अग्नि है। इसे हम अपने में चयन करते रहें ओर इसको जानते रहे। इस संसार को

जानना भी बहुत अनिवार्य है। तो बेटादेखो !, अमृतम ब्रह्मा वर्णासुतम् ब्रह्मे। इस प्रकार देखो, आचार्य जब ब्रह्मचारियों को यह शिक्षा दे रहे थे कि हे ब्रह्मचारियों,तुम्हें मृत्यु से पार होना है ! और मृत्यु से पार वह प्राणी होता है। जो प्रत्येक इन्द्रियां को मृत्यु से पार करा देता है, और स्वतः भी जब पंच लोक पवित्र और देखो, एक ऊर्ध्वा में धारणा को प्राप्त हो गया है। तो उसके अंग संग रहने वाले मानो देखो, अपने में धारयामि बने तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ब्रह्मचारियों तुम, प्रातःकालीन मानो याग में परिणत हो जाओ और याग में मानो देखो, यागाम् भूतम् यात्रा के ऊपर अनुसन्धान करो।

तो मेरे प्यारेजब वह यह विचार दे र !हे थे तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के आश्रम में बेटायज्ञदत नाम ! के ब्रह्मचारी एकत्रित हुए। उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारियोंतुम्हारी इच्छा हो तो मैं आचार्य से कुछ प्रश्न कर यदि ! सकता हूँ। ब्रह्मचारियों ने कहा बहुत प्रिय यहाँ तो विद्यमान इसीलिए हैं कि सबका मानो एक समूह बन करके विचार बने और वह अपने विचारों से मानो देखो, मृत्यु को विजय करने वाले हो।

तो मेरे पुत्रों,आ रहा है मुझे स्मरण कुछ ऐसा ! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज उनके प्रश्नों का उत्तर देना नही उनका विचारदेखो !विनिमय करना है। तो मेरे प्यारे-, अमृतम ब्रह्मा। उन्होंने कहा प्रभु !यज्ञमानम् ब्रह्मा वर्णनम् ! देखो !मेरे पुत्रों, ब्रह्मचारी ने कहा, यज्ञदत ने हे प्रभु,आपको प्रतीत है ! हम तुम्हारे आश्रम में क्यों आए हैं? याज्ञवल्क्य मुनि बोले क्या तुम अपना विद्या अध्ययन करने के लिए और गृहपथ्य नाम की अग्नि की ओर वाचस नाम की अग्नि का तुम चयन करने के लिए तुम आए हो। वह चयन हमारा शनैशनै होता जा रहा है-। जब बेटा ! देखो !में मौन हो गएं और ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु यह वाक् उन्होंने श्रवण किया तो अपने, हम याग करना चाहते हैं।

याग में होता

एक ब्रह्मचारी सोमकेतु विद्यमान है ,और वो यह कहता है कि मैं याग तो करना चाहता हूँ। परन्तु मैं याग कैसे करूं? याग के ऊपर नाना प्रकार के विचारकहा विनिमय होते रहे हैं। उन्होंने-, बहुत प्रियम् ब्रह्मा। उन्होंने कहा, तुम याग करना चाहते हो तो तुम्हारे होताम् भूतम् ब्रह्मे होताजन हो। उन्होंने कहा, प्रभुय !ही तो प्रश्न आता है, बारम्बार कि कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा यदि तुम्हें होताओं की आवश्यकता है, तो होता चौबीस होते हैं। चौबीस होताओं के द्वारा यज्ञमान को याग करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, उसको अधिकार है। मेरे प्यारेदेखो !, चौबीस होता अपने में पवित्रता को धारणा करते हैं। पुनः प्रश्न किया कि महाराज ! ,यज्ञमान याग करने जा रहा है तो कितने होता हो? तो उन्होंने सत्रह की गणना की और जब पुनः प्रश्न किया गया तो यज्ञमान याग करना चाहता है। तो उन्होंने ग्यारह की अवहेलना और ग्यारह को अपनी क्रियाओं में लाने का उन्होंने चयन कराया तो मेरे प्यारेब्रह्मचारी यज्ञदत बोले कि प्रभु प्रथम जो आपने उद्गीत गाया है। प्रथम जो ! को व्यक्त किया है आपने अपने विचारों। परन्तु यह प्रश्न ज्यों का त्यों बन रहे।

उन्होंने कहा, महाराजउद्गीत गाईए। उन्होंने कहा !, यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होताओं का प्रसंग आता है? तो उन्होंने कहा चौबीस का वर्णन किया। तुम चौबीस में बेटादेखो !, आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों को ऋषि,मुनियों ने कटिबद्ध किया। उन्होंने कहा यज्ञमान याग करना चाहता है- तो वह अपने में हूत बना करके याग करे और कितने होताओं के द्वारा परन्तु देखो, चौबीस होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है। दस प्राण, दस इन्द्रियां मन, बुद्धि चित्त और अहंकार यह सप्त होता होते हैं। और जब यह सप्त होता याग करते है। तो वायुमण्डल दूषित नही रहता, पवित्र हो जाता है। और जितना भी मानो देखो, दूषम् ब्रह्मे

दूषम बन रहा है, बलवती हो रहा है। यह दूषन प्रणाली ही समाप्त हो जाएगी। तो मेरे प्यारेदेखो !, इस प्रकार जब राजा ने अपना उद्गीत गाया। राजा ने कहा, सम्भवम् ब्रह्मणा वर्णानं, ब्रह्मे ऋषि कहता है। अमृतम ब्रह्मा लोकाम् क्या हे ब्रह्मचारीतुम्हें यह ज्ञान हो गया होगा कि राजा महाराजा सब यहाँ देखो !, याज्ञिक रहे हैं और अपने में यागों का व्यवधान करते रहे हैं।

सत्रह होता

तो उन्होंने कहा, तुम अमृतम् यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होताओं के द्वारा। उन्होंने चौबीस का वर्णन किया तो उन्होंने पुनः सत्रह का वर्णन कर दिया और यह कहा कि सत्रह होताओं के द्वारा याग करे। तो सत्रह होताओं में बेटादस प्राण !, मन बुद्धि पंच तन्मात्राएं प्रकृति की यह मानम् ब्रह्मा, यह देखो, हमारे यहाँ यह सत्रह होताओं का वर्णन आया। जब इस शरीर को त्याग दिया जाता है, आत्मा चला जाता है, तो आत्मा के साथ में एक सूक्ष्म शरीर जाता है। और वह सत्रह मानो देखो, सत्रह तत्त्वों का होता है। वह सत्रह से कटिबद्ध होता है। उनमें दस प्राण हैं। मानो देखो, यह सत्रह होताओं के द्वारा याग हुआ। अरे, कैसा प्रिय याग हो रहा है। क्या मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है। तो मेरे प्यारेदेखो !, हृदय में उदगम् ब्रह्मे कृतम् देवा वह यज्ञमान याग करने वाला बने। जिसके द्वारा उसका वायुमण्डल पवित्र बन जाए। और उसके अंग संग रहने वाला जो जगत है। वह परमाणुओं से ओत प्रोत हो जाए। तो मेरे-पुत्रोंदेखो !, इस प्रकार जब उन्होंने अपना उद्गीत गाया। क्या सत्रह होताओं के द्वारा याग हो तो बेटादेखो !, उसमें दस प्राण हैं, पांच प्राण, पांच उप प्राण, मन और बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियों का अपना मानो अस्तित्व सूक्ष्म धाराओं में परिवर्तित होता रहा है। तो मेरे प्यारेदेखो !, इस प्रकार जब राजा अमृतम जब ऋषि ने अपना वर्णन किया तो वह ऋषि बड़े प्रसन्न हुए उन्होंने कहा धन्य है।

ग्यारह होता

तो पुनः प्रश्न किया क्या महाराज यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हो? उन्होंने कहा ग्यारह होताओं के द्वारा याग होता है। बेटादे !खो, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां और इनसे कटिबद्ध रहने वाला जो मन है, मानो यह ग्यारह होता कहलाते हैं। मेरे प्यारेदेखो !, जब हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करता है। मानव तो नेत्रों से तो रूप लेता है। श्रोत्रों से शब्द लेता है और घ्राण से मन्द सुगन्ध लेता है। तो मेरे प्यारेये देखो !, पंच महाभूतों का एक लोक कहा जाता है। इस लोक में रहने वाला प्राणी अपने में लोकेश्वर स्वीकार करता है। तो मेरे प्यारेदेखो !, यह ग्यारह होताओं में ब्रह्मा आत्मा रथी है, आत्मा विद्यमान है और मुनिवरोंदेखो !, पांच ज्ञानेन्द्रियां ओर कर्मेन्द्रियां मन, बुद्धि अमृतम देखो, सत्रह में परिणत है, परन्तु ग्यारह में केवल मन रह जाता है और मन का जो क्षेत्र है, वह एक दूसरे में कटिबद्ध रह करके ग्यारह होताओं के द्वारा यज्ञमान याग करता है। तो जब यज्ञमान ग्यारह होताओं के द्वारा याग करता है। तो ग्याहरम् ब्रह्मा ग्यारह श्रोणी देह असुतम देवा तो मुनिवरोंदेखो !, वह ग्यारह होताओं के द्वारा यज्ञमान को अपना याग करना चाहिए। दस इन्द्रियां, ग्यारह मन मानो एक दूसरे में कटिबद्ध रहना चाहिए और वह अहिंसक रहना चाहिए। तो मेरे प्यारेदेखो !, वह भव्य याग हो रहा है। जो इस प्रकार के याग की विवेचनाएं आती है। इस प्रकार यागों का चयन आता है, तो हृदय में एक उल्लास आ जाता है। पवित्रता की ये धारायें पवित्र, नतृवे अपने में रत्त होने लगती हैं।

नौ होता

तो मेरे प्यारेदेखो !, जब ये इस प्रकार वर्णन आया तो उन्होंने पुनः यह प्रश्न किया यज्ञदत ने प्रभु ! यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता होने हो? उन्होने कहा क्या नौ होताओं के द्वारा याग होना चाहिए।

मेरे प्यारेदेखो !, शरीर रूपी यज्ञशाला में नौ द्वार हैं ,और नौ द्वारों पर एक ना एक देवता विद्यमान रहता है। तो बेटादेखो !, वह नौ ब्राह्मण व्रतम् देवस्सुतम अप्याम् लोकाम् वाचस्सुतम् ब्रह्मा लोकाः जब इस प्रकार का वह उद्गीत गाता है। तो बेटावह नौ द्वार है !, देखो, दो श्रोत्रों के छिद्र हैं, दो नासिका के छिद्र हैं। दो नेत्रों के द्वार हैं ,और देखो, एक मुखाम ब्रहे रसना मुनिवरोंदेखो !, एक अमृतम बृही वर्णस्सुतम् और एक ग्रीवा और एक उपस्थ यह नौ द्वार कहलाए गएं हैं। मानो देखो, एक देवता पर तो पृथ्वी विद्यमान है, और दूसरे पर मुनिवरों ! देखो, वरणाम् ब्रह्मा कृतम् दूसरे द्वार पर मुनिवरोंदेखो !, वह चन्द्रमा विद्यमान है। इसी प्रकार बेटासब पर ! कोई न कोई देवता, ऋषि विद्यमान है, किसी पर वशिष्ठ है, तो किसी पर कश्यप है ,और गान गाने वाला गान गा रहा है। और गान गाता हुआ अपने में देखो, सुरों में स्वर संगम कर रहा है। तो विचार आता है, बेटा ! देखो, नौ द्वारों को हमें ऊँचा बनाना है। नौ द्वारों का साकल्य बनाना है। जब बेटायोगेश्वर अपने में ! ,ध्यानावस्थित होता है तो वह उनका साकल्य बनाता है। बेटा चन्द्रमा से रस लेता है !और मुनिवरोंदेखो !, वाणी से रस लेता है और वाणी से रस ले करके अमृताम् भूतम् ब्रह्मा मेरे प्यारेदेखो !, वह अग्नि लेता है। अग्नि के भी दो प्रकार के भेदन हैंएक गार्हपथ्य है और एक मानो गृहपथ्य-, दोनों प्रकार की अग्नि की धारा लेता है। इसी प्रकार श्रोत्रों से बेटा दिशाएं लेता है। !और इनका सबका साकल्य बना करके मुनिवरोंदेखो !, हृदय रूपी यज्ञशाला में याग करता है। हृदय रूपी यज्ञशाला को ऊँचा बनाता है, पवित्र बनाता है, उदगार बनाता है और अपने में विवेकी बन करके बेटा !ज्ञानता को प्राप्त होता है। अज्ञान को समाप्त कर देता है। तो आओ मेरे प्यारे ! देखो, अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् वेद का आचार्य अपना याग करता है नौ होता होने चाहिए मेरे प्यारेउन होत !ाओं के द्वारा अपने को ऊँचा बनाना है।

सप्त होता

वेद का ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो पुनः मुनिवरोंदेखो !, वह पुनः प्रश्न करते हैं कि यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हो? तो उन्होंने कहा कि प्रभु मैं सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। सप्त होता बेटादेखो !, सात ऋषि विद्यमान हैं, कही मानो देखो, नेत्रों में, कही विश्वामित्र है तो कही जमदग्नि है और कहीं मानो देखो, कश्यप है। तो कहीं मुनिवरोंदेखो !, अत्रि वाणी को देखो, अत्रि कहा जाता है। जो अति आहार करती है। उसका नाम अत्रि है। तो यह सप्त होताओं के द्वारा बेटा यज्ञमान याग करता है !और कहता है प्राणाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा कह करके हूत कर रहा है। तो मेरे प्यारेपरम्परागतों से अन्वेषण करता यह कैसा भव्य याग हो रहा है। जिसके ऊपर मानव ! रहा है। तो आओ बेट ादेखो !, वेद का ऋषि जब इस प्रकार उद्गीत गाने लगा क्या यह सप्त होताओं के द्वारा याग बेटादेखो !याग होना चाहिए। हमारे यहाँ अन्तरिक्ष में बाह्य जगत में सप्तर्षि बेटा !, लोकों को भी माना गया है। इसी प्रकार सप्तम देखो, सप्तों में यह शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष दोनों विद्यमान हैं। रात्रि आती है। तो वह शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष दोनों विद्यमान हैं। रात्रि आती है, तो वह शुक्ल है, दिवस आता है, वह शुक्ल मानो देखो, वह भी कहीं,वर्तित हो जाती हैरात्रि कृष्ण पक्ष में परि !कहीं शुक्लता में ओर मुनिवरों- और कहींकहीं मानो शुक्ल पक्ष - में परिवर्तित हो जाता है। तो बेटामैं बड़ी विचित्र वार्त्ता तुम्हें प्रगट कर रहा हूँ !। इसीलिए दोनों पक्षों से घिरा हुआ यह सर्वत्र जगत् मानो का आयु भी विद्यमान रहता है। उसी में तो मेरे प्यारेदेखो !, यज्ञम् ब्रह्मा वरण सुतम् तो हम मंगलेः अपने में याग करे तो सप्त होताओं के द्वारा अत्रि अत्रम् ब्रह्मे अत्रि इसीलिए कहते हैं। वाणी को यह अति आहार करती है। यह अमृतम् ब्रह्मा वर्णसुते।

पंच होता

तो मेरे प्यारेदेखो !, जब यह विवेचना कुछ सूक्ष्म सी ग्रहण की नतमस्तिष्क हो करके यज्ञदत ने कहा प्रभु,मैं यज्ञमान से प्रार्थना कर रहा हूँ। यज्ञमान कहता है ! मैं यज्ञमानम् ब्रह्मे यज्ञ करना चाहता हूँ। यज्ञमान कहता है मैं यज्ञमानम् ब्रह्मे यज्ञ करना चाहता हूँ। कितने होता हो? उन्होंने कहा होताम् ब्रह्मा वर्णनं ब्रह्मे पंचमम ब्रणहे पंच होताओं के द्वारा याग करे बेटापंच होता कौन से होते हैं !? पंच होताओं का वर्णन मैंनें तुम्हें कई कालों में किया है। पंच होताओं में सबसे प्रथम मानो पृथ्वी है, जिसका समन्वय मेरे प्यारेदेखो !, आवृत्तियों से होता है और सप्तम् भूतम् ब्रह्मा वर्णसुते मेरे प्यारेदेखो !, पंच महाभूत कलाएं जाते हैं, पृथ्वी देखो, सबसे प्रथम पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु और अन्तरिक्ष यह पंच महाभूत अपने में मानो देखो, आवृत्तियों से होता है, और सप्तम् भूतम् ब्रह्मा वर्णास्सुते मेरे प्यारेदेखो !, पंच महा अपने में मानो देखो, वृत्तियों को प्राप्त होते हैं। मेरे प्यारे ! देखो, जब विज्ञान के क्षेत्र में जाते हैं। तो तीन प्रकार के परमाणुओं का व्यवधान होता रहा है, सबसे प्रथम गुरूतव, तरलत्व, तेजोमयी यह तीन प्रकार के परमाणु हैं। इन परमाणुओं को गति देने वाला वायु है। और जहाँ यह गति करता है। उसका नाम अन्तरिक्ष है। तो बेटादे !खो, ऋषिमुनि परम्परागतों से इन यागों के सम्बन्ध में - ,क्या अपने विचार के माध्यम में विज्ञान के तीन प्रकार के परमाणु विज्ञान में सिद्ध किए हैं और तीनों प्रकार के परमाणुओं को गति देने वाला वायुतव है। और यह अपने में गतिवान हो रहे हैं। तो इसीलिए जब हम याग करे तो पंच महाभूतों के द्वारा पंच, पांच यज्ञशाला में हुति, हूत करने वाले हो जिससे पवित्रता को प्राप्त हो जाए। और इसी से यह सर्वज्ञ जगत मानो कटिबद्ध हो रहा है। मेरे प्यारेतीन प्रकार के परमाणु से मानव का जीवन ! व्रतम् देखो गुंथा हुआ है। उसमें मानो वर्णाया, गति देने वाला वायु और जहाँ गति हो रही है, वह अन्तरिक्ष कहलाता है। इसी को ले करके वैज्ञानिकों ने नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया। लोकलोकान्तरों की यात्रा - में वह सफलता को प्राप्त होते है, तो बेटादेखो !, यज्ञमानम् ब्रह्मा यज्ञमान याग करना चाहता है। तो पंच हूत होने चाहिए, पंचम में रत्त होना चाहिए।

तीन होता

तो मेरे प्यारेदेखो !, जब यह प्रसंग आया तो उन्होंने पुनः प्रश्न किया क्या महाराज यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हो? तो वह तीन का वर्णन करते हैं, और तीन क्या है, बेटारजोगुण !, तमोगुण, सतोगुण यह तीन होता कहलाते हैं। जो यह संसार का हूत हो रहा है। मानो देखो, उसी में सतोगुण, उसी में तमोगुण, रजोगुण है। हे मेरे प्यारे,जब मैं माता के द्वार पर जाता हूँ ! और माता के जीवन को दृष्टिपात करता हूँ। तो तीनों गुण विद्यमान होते हैं। वही माता पालन कर रही हैं। सतोगुण में, वही माता अनुशासन कर रही है। रजोगुण में और वह उत्पति के मूल में विद्यमान है, वह तमोगुण कहलाता है। मेरे प्यारे,यदि उत्पति नही होगी ! तो रजोगुण भी नही होगा। और रजोगुण नही होगा तो शासन नही होगा तो सतोगुण भी नही होगा। एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं, तीन मनके हैं। और एक ही धागे में पिरोने से बेटायह माला के सदृश्य हैं !। तो विचार आता रहता है, अमृतम ब्रह्मा लोकाम् वाचसुतम् ब्रह्मे। मेरे प्यारेदेखो !, यज्ञमान अपने तीन होताओं के द्वारा माता पालन कर रही है, लोरियों का पान करा रही है, और वह अपने में अमृतमयी विद्या का अध्ययन करती है। तो बालक को अपने में मानो परिणत करके अमृतमयी बना रही है। मेरे प्यारेवही माता जब अनुशासन में ! परिणत कर रही है, अनुशासन हे बालकतुम मानो देखो !तुम अनुशासन में रहो। हे बाल्य !, अपना सुपरिचय दो, माता का नामोकरण ऊर्ध्वा में जब ही होगा जब तुम्हारे जीवन में तुम्हारी प्रवृत्तियों में सबमें अनुशासन की

प्रवृत्ति होगी वह रजोगुण कहलाता है। तो मेरे प्यारेदेखो !, तमोगुण में जब देखो, जब मातृ शक्ति अपने में गर्भाम् भूतम् ब्रह्मे अपने शिशु को अपने गर्भ में धारण करती है, तो मानो उसको प्राण के द्वारा अपने में अध्ययन करती है और उसको शिक्षा गर्भस्थल में देती है। तो वह मानो स्थापना का नाम तमोगुण है और उसी में फिर पालना का प्रसंग आ करके सतोगुण में परिणत हो जाती है। तो मेरे प्यारेदेखो !, वही रजोगुण है, वही सतोगुण और वही तमोगुण माना गया है। एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। रजोगुण में परिणत हो जाता है।

तो मेरे प्यारेदेखो !, मुझे बहुतसा काल स्मरण आता रहता है। उस काल में तुम्हें ले जाना नही चाहता - देखो !हूँ। बेटा, माताओं के जीवन में प्रायः प्राण के माध्यम से नाना प्रकार की शिक्षा को अध्ययन करती रही है। महर्षि दुर्वासा का जीवन मुझे स्मरण है। दुर्वासा मुनि इस अध्ययन का, वेदों का अध्ययन करने के नाते बेटाअमृतम् ब्रह्मे माताओं को देखो !, मन्त्र देते। जिस देवता मानो माता की इच्छा है जिस देवता को परक बनाना है, उसी देवता के मन्त्र का अध्ययन कराना है। उसके ऊपर माता आचरण करती है। तो बालक उसी प्रकार की प्रवृत्ति वाला उसके गर्भ से निर्माणित होता है। मानो वह देवता वरुण बनाना चाहती है। तो वरुण होगा। इन्द्र की प्रवृत्ति वाला इन्द्रो समुनन ब्रह्मा वरणो जब इन्द्र अध्ययन होगा। तो उसी प्रकार का बाल्य का जन्म होगा। तो हे मातातू मानो देखो !, एक दूसरे में पूरक है, रजोगुण, तमोगुण, मानव में भी विद्यमान है, परन्तु तेरा जो मानो देखो, अवृतम्, तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण है वह एक महत्वदायक है। मानो देखो, राजा अनुशासन करता है। रजोगुण में पालना करता है। सतोगुण में ओर देखो, वही तमोगुण में प्राण नाना प्रकार से दण्डित करता रहता है। वृत्तियों में रत्त करा देता है। तो विचार आता रहता है यहाँ वेद का ऋषि कहता है हे ब्रह्मचारीतुम मानो देखो !, रजोगुण, सतोगुण, रजोगुण को मानने का यह प्रयास करो।

दो होता

मेरे प्यारेदेखो !, यज्ञदत बोले कि प्रभु यह भी हमने जान लिया। परन्तु देखो, हम यह जानना चाहते हैं, भगवन्यज्ञमान याग में कितने होता हो !अमृताम भूतम ब्रह्मे प्रभु !? देखो, आत्माम् भूतम् ब्रह्मे वह दो होता मुनिवरोंदेखो !, प्रकृति तत्त्व और ब्रह्म तत्त्व दोनों एक दूसरे में मानो रत्त होते हुए और इस संसार का मानो निर्माण करते हैं, इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है।

एक होता

मेरे प्यारेदेखो !, पुनः जब प्रसंग आता हे कि एक होता हो एक ही ब्रह्म है, वह चेतना है। जड़ को चेतन में परिणत करता हुआ बेटालोकान्तरों वाला भव्य जगत का निर्माण होता है-यह लोक !। तो मेरे प्यारेदेखो !, आगे अमृतम् ब्रह्मा। वह प्रसंग समाप्त हो गया और उसने कहा, यज्ञदत, यदि तुम याग करना चाहते हो तो एक ब्रह्म को स्वीकार करके ओर संसार रूपी जगत् का साकल्य बना करके हूत कर जाओ, अपने को समर्पित कर दो जिससे तुम्हारा आध्यात्मिकवाद महानता को प्राप्त होता रहे, आध्यात्मिकवाद में तुम्हारी महानता बनी रहे। तो मेरे प्यारेदेखो !, ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया और ऋषि ने कहा, तुम एक ही ब्रह्म को द्वितीय प्रकृति को स्वीकार करो और इनके मध्य में तुम स्वतः आत्म में विद्यमान हो करके तुम इनका उपभोग करते रहो। और यहीं तुम्हारा देखो, याग है। इस याग को ऊँचा बनाओ। यह आध्यात्मिक याग है, परन्तु भौतिक याग यह जगत है। आध्यात्मिकवाद तुम्हारा आन्तरिक जगत है। हम हृदय के आँगन में प्रवेश करके तुम हूत करने के लिए तत्पर हो जाओ। तो मेरे प्यारेदेखो !, यज्ञदत ने इस प्रकार आचार्य से जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से जब इस प्रकार उद्गीत श्रवण किया तो वह नतमस्तिष्क हो गये। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु!

तो मेरे प्यारेदेखो !, यह जो संसार है, यह आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों से बंधा हुआ है। एक दूसरे में रत्त हो रहा है मानव का जीवन भी मानो एक प्रकाश की आभा में परिणत हो रहा है। तो विचार-देखो !विनिमय क्या आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नही करने आया हूँ। केवल यह क्या बेटा, यह जो संसार रूपी यज्ञशाला है इसमें हम सब विद्यमान है। तीन कारणों से यज्ञशाला बनी है बेटादेखो !, उसको भोग करने वाला, निर्माण करने वाला, जिस वस्तु से निर्माण किया जाता है। तो यह साम सिद्धान्त की वार्त्ता मेरे विचार में आती रहती है। क्या निर्माण करने वाला प्रभु हैं, निर्माण स्वतः ही प्रकृति का होता है। और उसको मानो उपभोग में लाने वाला जीवात्मा है। इसीलिए वह उसको यज्ञमान की संज्ञा देता है। तो बेटादेखो !, वेद इसीलिए उसको उपभोक्ता की संज्ञा प्रदान करता रहता है। तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा के इस संसार रूपी यज्ञशाला को विचारने वाले बने और अपने में आत्मिक जीवन को ऊँचा बना करके आत्माम् भूतम् देखो, आत्मा चेतना है ,और चेतना के ऊपर हमारा चैतन्य स्वरूप अपने में रमण करता रहे। तो बेटादेखो !, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने में मौन हो गये।

तो बेटायह क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते आज का हमारा यह विचार ! आज का वाक् अब !हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह है बेटा मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठनपाठन -२४-कहोगा। दिनां-०३-१९९९२ स्थान एआर एन्कलेव दिल्ली.सी.जी.